बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

हिन्दी (100 अंक) **Hindi (100 Marks)**

Set-1

सेट-1

हिन्दी -XII

समय- 3 घंटे 15 मिनट पूर्णांक-100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

१. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

२. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

३. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

1. संक्षिप्त पत्र लिखे । 6

अपने छोटे भाई को उसके जन्मदिन के उपलक्ष्य में बधाई पत्र लिखिए।

अथवा

मासिक शुल्क माफ करने के लिए प्रधानाध्यापक के पास आवेदन पत्र लिखिए ।

2. संक्षेपण करें : 4

चरित्र निर्माण जीवन की सफलता की कुंजी है। जो मनुष्य अपने चरित्र की ओर ध्यान देता है वही जीवन क्षेत्र में विजयी होता है। चरित्र-निर्माण से मनुष्य के भीतर ऐसी शक्ति का विकास होता है, जो उसे जीवन संघर्ष में विजय बनाती है। ऐसी शक्ति से वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। वह जहाँ कहीं भी जाता है, अपने चरित्र की शक्ति से अपना प्रभाव स्थापित कर लेता है। उसे देखते ही लोग उसके व्यक्तित्व के सम्मुख नतमस्तक हो जाते है। उसके व्यक्तित्व में सूर्य का तेज, आँधी की गति और गंगा के प्रवाह की अबाधता होती है।

3. I) सही जोड़ें का मिलान कीजिए- 5x1=5

(क) गाइ-डि मोपासाँ	(प) उसने कहा था
(ख) पृथ्वी	(पप) जयशंकर प्रसाद
(ग) बोधा सिंह	(पपप) तुलसीदास
(घ) कवितावली	(पअ) रस्सी का टुकड़ा
(घ) कामायनी	(अ) नरेश सक्सेना

II) निम्नलिखित प्रश्नों के बहुवैकल्पिक उत्तरो में से सही उत्तर चुनिए- 5x1=5

(i) 'तिरिछ' कहानी के कहानीकार है ।

(क) उदय प्रकाश (ख) तुलसीदास

(ग) रामानंद (घ) बालकृष्ण भट्ट

(ii) 'भक्तमाल' किसकी रचना है ?

(क) नाभादास (ख) तुलसीदास

(ग) कबीरदास (घ) सूरदास

(iii) मालती पात्र है-

(क) 'जूठन' का (ख) रोज का

(ग) सिपाही की माँ का (घ) तिरिछ का

(iv) गालिब

(क) भूषण (ख) त्रिलोचन

(ग) नागार्जुन (घ) अरूण कमल

(v) गाँव का घर

(क) मलयज (ख) नरेश सक्सेना

(ग) त्रिलोचन (घ) ज्ञानेन्द्रपति

III) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए: 5x1=5

(क) सत्य का साकार रूप तो ..... ही होता है। (राजा/प्रजा)

(ख) पक्षपात नहीं ..... सबहिं के हित की भाषी । (वचन / शब्द)

(ग) ..... कवि यह जोरि सुनावा । सना सो पीर प्रेम कर पावा । (मुहमद/तुलसी)

(घ) मैं दलविहीन ..... की स्थापना करना चाहता हूँ। (लोकतंत्र/ राजतंत्र)

(घ) बाज की दाढ़ में .....का खून लग चुका है । (आदमी/कबूतर)

4. किसी एक विषय पर निबंध लिखे । 1X10=10

(क) आपका प्रिय त्योहार ।

(ख) आपके प्रिय कवि ।

(ग) इंटरनेट से लाभ एवं हानि ।

(घ) खेलकूद और छात्र-जीवन ।

5. सप्रसंग व्याख्या करें : 2X4=8

(क) ''आशामयी लाल-लाल किरणों से अंधकार,
चीरता-सा मित्र का स्वर्ग एक,
जन-जन का मित्र एक ।''

अथवा

''जिन पर है वे सेना के साथ ही जीतकर लौट रहे हैं ।''

(ख) जिस पुरुष में नारीत्व नहीं, अपूर्ण है।

अथवा

''निमोनिया से मरनेवाले को मुरब्बे नहीं मिला करते ।''

6. (क) किन्हीं पाँच शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए : 5x1=5

नीरव, सतीश, विद्यालय, पवित्र, आशीर्वाद, तपोवन

(ख) किन्हीं पाँच का विशेषण बनाइए । 5x1=5

पुरुष, क्षेत्र, हिंसा, ईश्वर, स्वाद, समाज

(ग) किन्हीं पाँच शब्दों के विपरीतार्थक शब्द बनाइए । 5x1=5

सुखद, प्रातः, अंतरंग, संयोग, विधवा, कीर्ति

(घ) किन्हीं पाँच मुहावरे का अर्थ स्पष्ट कीजिए । 5x1=5

पट्टी पढ़ाना, खाक छानना, अगर-मगर करना, पेट में चूहे कूदना,
मुट्ठी गरम करना, नाक कटना ।

(घ) उपसर्ग और प्रत्यय का भेद स्पष्ट कीजिए । 5x1=5

7. निम्नलिखित लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दे : 6X2=12

(क) जमादार लहना सिंह ने 'जर्मन लपटन' को क्या करते हुए देखा ?

(ख) संपूर्ण क्रांति का लक्ष्य क्या है ?

(ग) 'कड़बक' के कवि की सोच क्या है ?

(घ) नारी की पराधीनता कब से आरम्भ हुई ?

(घ) 'ओ सदानीरा' किस नदी के लिए कहा गया है ?

(च) शिवाजी की तुलना भूषण ने किन-किन से की है?

8. दो दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर दीजिए - 2x5=10

(क) मालती के घर का वातावरण आपको कैसा लगा ? अपने शब्दों में लिखिये ।

अथवा

'संपूर्ण क्रांति' शीर्षक पाठ में वर्णित विचारों को स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'प्यारे नन्हें बेटे को' कविता का सारांश लिखिए ।

अथवा

'जन-जन का चेहरा' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखिए ।

9. भक्तिकाल की सामान्य प्रवृतियों पर प्रकाश डालिए । 10

अथवा

आधुनिककाल की साहित्यिक प्रवृतियों के बारे में बताइए ।

उत्तर-खण्ड

1. प्रिय भाई रौशन,

शुभाशीर्वाद ।

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने लिखा कि 15 नवम्बर को मैं राजगीर आऊँ। मुझे याद है कि 15 नवम्बर को तुम्हारा जन्मदिन है और इसीलिए तुमने मुझे घर आने के लिए लिखा है। मैं तुम्हारे जन्मदिन पर तुम्हें हार्दिक बधाई देता हूँ। मैं परमेश्वर से यही कामना करता हूँ कि तुम्हारा भावी जीवन मंगलमय एवं सुखद हो। तुम्हारी जीवन-वाटिका में सदैव सुगंधित और मनोहर फूल खिलते रहें। ईश्वर तुम्हारी सारी इच्छाएँ पूरी करें। इस अवसर के उपलक्ष्य में मैं तुम्हारे लिए हिंदी की महत्वपूर्ण काव्य-पुस्तकें उपहारस्वरूप रजिस्टर्ड डाक से भेज रहा हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम इन पुस्तकों में निहित ज्ञान-राशि को जीवन में व्यावहारिक रूप में उतारकर अपने जीवन की आदर्श दिशा निर्धारित कर सकोगे। तुम मेरे द्वारा भेजी गई इन पुस्तकों को मेरे आशीर्वाद के रूप में ग्रहण करोगे।

तुम्हारा अग्रज,

चंदन कुमार

अथवा, का उत्तर

सेवा में

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय

पी.सी.पी. इंटर कॉलेज, सोहसराय, नालंदा

द्वारा, वर्ग शिक्षक,

महाशय,

श्रीमान् से निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय का निर्धन छात्र हूँ। मैं इंटर में पढ़ता हूँ। मेरे पिताजी मजदूरो करते है। अल्प मजदूरी भत्ता मिलने के कारण उन्हें परिवार चलाने में बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। हम तीन भाई-बहन हैं। तीनों विभिन्न विद्यालयों में पढ़त हैं। हम तीनों को पढ़ाने में पिताजी को बड़ी कठिनाई हो रही है। मैं पढ़-लिखकर देश का सुयोग्य नागरिक बनना चाहता हूँ। आपकी कृपा के बिना ऐसा संभव होता नहीं दीखता ।

अतः श्रीमान् से करबद्ध प्रार्थना है कि मेरा मासिक शुल्क माफ कर मुझे शिक्षित होने का सअवसर प्रदान करें। इसके लिए मैं आपका सर्वदा आभारी रहूँगा ।

आपका आज्ञाकारी छात्र,

नीतीश कुमार

दिनांक 15 दिसम्बर 2016

वर्ग- XII

क्रमांक-40

2. शीर्षक- चरित्र का महत्व

चरित्र निर्माण से मनुष्य में संघर्ष-शक्ति आती है। चरित्र के माध्यम से ही व्यक्ति जीवन में सफल और विजयी होता है। चरित्रवान अपनी अबाध प्रगति से सबको प्रभावित करता है। तथा सभी नतमस्तक होते हैं।

(कुल शब्द संख्या-101, संक्षेपण की शब्द संख्या 34)

3. I)

(क)	गाइ-डि मोपासाँ	-	रस्सी का टुकड़ा
(ख)	पृथ्वी	-	नरेश सक्सेना
(ग)	बोधासिंह	-	उसने कहा था
(घ)	कवितावाली	-	तुलसीदास
(घ)	कामायनी	-	जयशंकर प्रसाद

II)

(i) (क) उदय प्रकाश

(ii) (क) नाभादास

(iii) (ख) रोज

(iv) (ग) त्रिलोचन

(v) (घ) ज्ञानेन्द्रपति

III)

(क) राजा

(ख) वचन

(ग) मुहमद

(घ) लोकतंत्र

(घ) आदमी

4. (घ) खेलकूद और छात्र जीवन-

(i) भूमिका (ii) खेल का महत्व (iii) लाभ (iv) उपसंहार

(i) मानव जीवन में खेल-कूद का महत्व है। भूतकाल में हमारे देश में खेल-कूद को महत्व नहीं दिया जाता था। लेकिन, अब हम महसूस करने लगे है कि खेल-कूद बहुत उपयोगी है। इसलिए हमारे देश की प्रत्येक शैक्षणिक संस्था खेल-कूद की व्यवस्था करती है। वस्तुतः खेल-कूद शिक्षा का एक आवश्यक अंग है।

(ii) खेल-कूद का बहुत महत्व है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए हमें खेल-कूद में भाग लेना चाहिए। हमारे जीवन में स्वास्थ्य सबसे महत्वपूर्ण चीज है। शरीर और मस्तिष्क के विकास के लिए खेल-कूद आवश्यक है। यदि हमारा स्वास्थ्य खराब है तो हम कोई काम नहीं कर सकते। स्वास्थ्य और शारीरिक बल के विकास के लिए खेल-क्द् आवश्यक है।

(iii) खेल-कूद से बहुत लाभ है। वे स्वास्थ्य और शारीरिक बल का विकास करते है। शरीर और मस्तिष्क के विकास के लिए वे आवश्यक है। जब हम खेल-कूद में भाग लेते है तब हमारे शरीर का अच्छा व्यायाम होता है। खेल-कूद खुली हवा में होता है। जब हम खेल-कूद में भाग लेते है तब हम स्वच्छ हवा साँस लेते है। इसलिए खेल-कूद हमारे स्वास्थ्य और शारीरिक बल का विकास करते है।

खेल-कूद से हम अनेक गुणों को सीखते है। जब हम खेल-कूद में भाग लेते हैं तो हमें कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है। इसलिए खेल-कूद से हम अनुशासन भी सीखते है जो व्यावहारिक जीवन में बहुत उपयोगी है।

खेल-कूद से हम आत्म-नियंत्रण करना सीखते हैं। अच्छा खिलाड़ी विजय होने पर अत्यधिक आनंद नहीं मनाता । जब वह पराजित हो जाता है तब वह निराश नहीं होता। जब वह खेल-कूद में भाग लेता है तब वह परिणाम की चिंता नहीं करता।

खेल-कूद मनुष्य को व्यावहारिक जीवन के लिए प्रशिक्षित करता है। खेल के मैदान में जिन गुणों का विकास होता है । वे बाद में जीवन में बहुत उपयोगी होते है। हमारा जीवन एक मनोरंजक खेल है। खेल-कूद में कुछ ऐसे गुणों का विकास होता है जो व्यावहारिक जीवन में उपयोगी सिद्ध होते हैं।

(iv) यद्यपि खेल-कूद बहुत उपयोगी है फिर भी उनमें कुछ बुराइयाँ भी हैं। यदि हम उनमें बहुत भाग लेते हैं तो हमारा स्वास्थ्य खराब हो जाता है। खेल-कूद में विद्यार्थियों का बहुत सारा समय चला जाता है। खिलाड़ी प्राय: अपने अध्ययन की उपेक्षा करता है। कभी-कभी खेल-कूद को लोग जीवन का मुख्य काम बना लेते हैं। जब विद्यार्थी खेल-कूद को अपने जीवन का मुख्य उद्दश्य बना लेते है तब वे अपने जीवन को बर्बाद कर लेते है। उनको खेल-कूद और अध्ययन में संतुलन बनाए रखना चाहिए ।

5. (क) प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध मार्क्सवादी कवि गजानन माधव मुक्तिबोध है। कवि ने लाल-लाल किरणों का प्रयोग समाजवाद के अर्थ में किया है। आज की दुनिया में आर्थिक विषमता और शोषण का अंधकार छाया हुआ है। कवि आशान्वित है कि समाजवाद के प्रसार से ही वह अंधकार दूर कर सकेगा। समाजवाद रूपी तीव्र अलोक ही विश्व में फैले आर्थिक वैषम्य और शोषण तथा अन्याय के अंधकार को काटने में समर्थ है। कवि आशा करता है कि इस अंधकार के समाप्त होते ही सर्वत्र स्वर्गिक शांति विराजमान हो जाएगी। वर्ग-संघर्ष समाप्त हो जाएगा और सर्वहारा वर्ग का राज्य स्थापित हो जाएगा। कवि कहता है कि मार्क्सवाद ही शोषितों का मित्र है। समाजवाद ही विश्वव्यापी अन्याय और शोषण के अंधकार को मिटाकर नये समाज

की रचना कर सकता है जिसमें सब समान होंगे, सबको समान अधिकार होंगे और सब सुखमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अथवा

प्रस्तुत सारगर्भित वाक्य हमारी पाठ्यपुस्तक में संगृहीत 'हार-जीत' शीर्षक गद्य कविता से लिया गया है। इसके रचनाकार हिंदी के प्रसिद्ध गद्यकार एवं कवि अशोक वाजपेयी है।

प्रस्तुत वाक्य में कवि ने राजनीतिक झूठ को अनावृत किया है। शासक एवं सत्ताधारी वर्ग अपनी हार की घोषणा नहीं करता। यह अपनी हार को भी विजय के रूप में प्रस्तुत करता है और अपनी प्रजा को भ्रम में रखता है। प्रजा तो समझती है कि शासक की जीत हुई है। पर वास्तविकता दूसरी होती है। शासक अपनी हार को जश्न के माध्यम से प्रजा तक जीत के रूप में प्रस्तुत करता है और उसे यह स्वीकार करने पर मजबूर करता है कि वह बलवान तथा समर्थ है। उसकी कभी पराजय नहीं हो सकती ।

प्रस्तुत वाक्य काव्यात्मक व्यंग्य का उत्कृष्ट निदर्शन है।

5. (ख)

प्रस्तुत वाक्य राष्ट्रकवि दिनकर रचित 'अर्द्धनारीश्वर' शीर्षक निबंध से उद्धत है। इस पंक्ति में लेखक ने नारीत्व के महत्व पर प्रकाश डाला है।

दिनकर जी का कहना है कि जिस पुरुष में नारीत्व नहीं, वह अपूर्ण है। अत: प्रत्येक नर को एक हद तक नारी बनना आवश्यक है। गाँधीजी ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में नारीत्व की भी साधना की थी। उनकी पोती ने उनपर जो पुस्तक लिखी है, उसका नाम ही 'बापू, मेरी मां ' है। दया, माया, सहिष्णुता और भीरूता ये स्त्रियोचित गुण कहे जाते हैं।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक दिगंत भाग-2 के 'उसने कहा था' पाठ से ली गयी है।

उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से वजीरा सिंह के इस कथन से लहना सिंह के त्याग, प्रेमपूर्ण समर्पण का परिचय मिलता है। खुद लहना सिंह, बोधा सिंह के पहरों की जगकर रात भर पहरा करता है, वह खुद सूखी लकड़ी पर सो जाता है। इसके त्याग को देखकर लहना सिंह को वजीरा सिंह सलाह देता है कि कहीं तुम्हारी भी तबियत खराब न हो जाए। जाड़ा क्या अर्थात् कहने का आशय यह है कि तबियत खराब हो जाएगी तो तुम क्या उसकी रक्षा कर पाओगे। तुम्हें मरने के लिए अपनी जमीन भी नसीब नहीं होगी। यहाँ 'मुरब्बा' अरबी शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है- ''वर्गाकार चौकोर जमीन। यहाँ दूसरा अर्थ यह है कि जिस व्यक्ति को निमोनिया हो जाता है उसे कड़वी औषधि दी जाती है, मुरब्बे नहीं ।''

6 (क) किन्हीं पाँच शब्दों का संधि-विच्छेद करे ।

नीरव- नि: + रव

पवित्र- पो + इत्र

सतीश- सती + ईश

आशीर्वाद - आशी: + वाद

विद्यालय- विद्या+आलय

तपोवन - तप: + वन

(ख) पुरुष - पौरुषेय

ईश्वर - ईश्वरीय

क्षेत्र - क्षेत्रीय

स्वाद - स्वादिष्ट

हिंसा - हिंसक

समाज - सामाजिक

(ग) सुखद - दु:खद

संयोग - वियोग

प्रात: - सायं

विधवा - सधवा

अंतरंग - बहिरंग

कीर्ति - अपकीर्ति

(घ) पट्टी पढ़ाना - बुरी राय देना

खाक छानना - इधर-उधर भटकना

अगर-मगर करना - तरह-तरह के बहाने करना

पेट में चूहे कूदना - बहुत जोर से भूख लगना

मुट्ठी गरम करना - घूस देना

नाक कटना - इज्जत जाना

(ड़) उस शब्दांश या अव्यय को उपसर्ग कहते हैं जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करते हैं। जैसे- आ, उप ।

आ+गमन = आगमन, उप+कार = उपकार ।

प्रत्यय वह शब्दांश है जो किसी तद्भित या कृत् शब्द के अंत में जुड़कर नवीन संज्ञा या विशेषण का निर्माण करते हैं। जैसे- समझ + औता = समझौता।

मूर्ख + ता = मूर्खता ।

7. (क) जमादार लहना सिंह दीवार से चिपककर नकली लपटन साहब की करतूत देखने लगा। लपटन साहब ने जेब से बेल के बराबर तीन गोले निकाले । तीनों को खंदक की दीवारों में जगह-जगह घुसेड़ दिया और तीनों में एक तार-सा बाँध दिया। तार के आगे सूत की एक गुत्थी थी। उसको उसने सिगड़ी के पास रख दिया। सलाई जलाकर वह गुत्थी पर रखने ही वाला था कि लहना सिंह ने बिजली की तरह दोनों हाथों से उलटी बंदूक को उठाकर उसकी कुहनी पर तानकर दे मारा ।

(ख) 'सम्पूर्ण क्रांति' एक बृहत और व्यापक आन्दोलन है। यह वर्त्तमान की सामाजिक और राजनीतिक जड़ता को तोड़ने की क्रांति है। इस क्रांति का लक्ष्य है- दलविहीन वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना, आर्थिक समानता और जीवन के क्षेत्र में नैतिकता के प्रति आग्रह का

विकास । यह भारत की जनता की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं नैतिक आकांक्षाओं की पूर्ति की क्रांति है।

(ग) 'कंड़बक' के कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं। कवि के अनुसार कविता कवि के व्यक्तित्व के अनुरूप ही होता है। जायसी के अनुसार कविता को उन्होंने रक्त की लेई लगाकर जोड़ा है। इसमें गाढ़ी प्रीति का नयनजल है। फूल झड़कर नष्ट हो जाता है पर उसकी खुशबू रह जाती है। कवि एक दिन मर जाएगा लेकिन उनकी लिखी कविता अमर रहेगी। यहि कवि जायसी की सोच है।

(घ) जब मानव जाति ने कृषि का आविष्कार किया तो नारी घर में और पुरुष बाहर रहने लगा। यहाँ से जिन्दगी दो टुकड़ों में बँट गयी। घर का जीवन सीमित और बाहर का जीवन निस्सीम होता गया एवं छोटी जिन्दगी बड़ी जिन्दगी के अधिकाधिक अधीन होती चली गई। कृषि के विकास के साथ ही नारी की पराधीनता भी आरम्भ हो गयी।

(घ) 'ओ सदानीरा' गंडक नदी के लिए कहा गया है।

(च) शिवाजी की तुलना भूषण ने इन्द्र, राम, परशुराम, चीता, मृगराज, कृष्ण आदि से की है।

8. (क) कहानी के प्रथम भाग में ही मालती के यन्त्रवत् जीवन की झलक तब मिल जाती है, जब वह अतिथि का स्वागत केवल औपचारिक ढंग से करती है। अतिथि उसके रिश्ते का भाई है जिसके साथ वह बचपन में खूब खेलती थी, पर वर्षो बाद आए भाई का स्वागत उत्साहपूर्वक नहीं करती, बल्कि जीवन की अन्य औपचारिकताओं की तरह एक और औपचारिकता निभा देती है। हम देखते हैं कि मालती अतिथि से कुछ नहीं पूछती बल्कि उसके प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर ही देती है। उसमें अतिथि की कुशलता या उसके वहाँ आने के उद्दश्य या अन्य समाचारों के बारे में जानने की कोई उत्सुकता नहीं दिखती है। यदि पहले कोई उत्सुकता, उत्साह जिज्ञासा या किसी बात के लिए उत्कंठा भी थी तो वह दो वर्षो के वैवाहिक जोवन के बाद नहीं रही। विगत दो वर्षो में उसका व्यक्तित्व बुझ सा गया है, जिसे उसका रिश्ते का भाई भाँप लेता ह। अतः मालती का मौन उसके दम्भ या अवहेलना का सूचक नहीं, बल्कि उसके वैवाहिक जीवन की उत्साहहीनता, नीरसता और यांत्रिकता की ही सूचक है। यह एक विवाहित नारी के अभावों में घुटते हुए पंगु बने

व्यक्तित्व की त्रासदी का चित्रण है। यह एक नारी की सीमित घरेल् परिवेश के बीतते उबाऊ जीवन का चित्रण है।

अथवा

'सम्पूर्ण क्रांति' पाठ में 5 जून 1974 को पटना के गाँधी मैदान में दिये गये जयप्रकाश नारायण के 'सम्पूर्ण क्रांति' वाले ऐतिहासिक भाषण का एक अंश संकलित है। संपूण भाषण स्वतंत्र पुस्तिका के रूप में 'जनमुक्ति' पटना से प्रकाशित है। इस संकलित अंश से उसकी एक छोटी-सी झलक भर मिलती है, किन्तु लाखों की संख्या में सम्पूर्ण प्रदेश और देश के विविध क्षेत्रों से आये लोगों, विशेषकर युवा वर्ग के उस ऐतिहासिक जन समूह के बीच लोकनायक ने अस्वस्थ दशा मं भी शांतिपूर्वक बातें कहीं और सम्पूर्ण जनता मंत्रमुग्ध होकर सुनती रही। उनकी बातें सुनकर भाषण के बाद लोगों के ह्रदय में क्रान्तिकारी विचार धधक उठे और आन्दोलन ने विराट् रूप धारण कर लिया। पटना के गाँधी मैदान में फिर न वैसी भीड़ इकट्ठी हुई और न वैसा कोई प्रेरक भाषण और न जन संवाद कायम हो सका। वास्तव में जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति का लक्ष्य देश में अराजकता और भ्रष्टाचार के विरूद्ध एक शंखनाद माना जाता है।

8.(ख) विनोद कुमार शुक्ल समकालीन कवि है। उनकी कविताएँ अनुभव की सच्चाई व्यक्त करती है। विनोद कुमार शुक्ल की कविता 'प्यारे नन्हें बेटे को' वार्तालाप शैली में लिखी गयी है। इस कविता में कवि कहते है कि लोहा कर्म का प्रतीक है। इसे हर वस्तु में तलाशना होगा। वह प्यारी बिटिया से पूछता है कि बताओ आस-पास कहाँ-कहाँ लोहा है चिमटा, सिगड़ी, समसी, दरवाजे की साँकल, कब्जे में, बिटिया बताती है। रूक-रूक कर फिर याद कर बताती है, लकड़ी, दो खंभों पर वह एक सैफ्रटी पिन, पूरी साइकिल में लोहा। कवि को लोहा के प्रति इतना आग्रह क्यों है? कवि बताता है कि लोहा कर्म का प्रतीक है। वह जहाँ भी रहता है अपनी मजबूती के साथ रहता है। उसका शोषण कोई नहीं कर सकता। कवि पुत्री को याद दिलाता है कि फावड़ा, कुदाली, खुरपी सभी में लोहा है। कवि को पुत्री भी याद दिलाती है कि बाल्टी, छत्त की डंडी आदि में भी लोहा है। वह समाज के निम्न वर्ग के मजदूर को समाज का लोहा मानता है जिसके बल पर समाज मजबूती से खड़ा है परन्तु

वह मजदूर शोषित है। लोहा कदम-कदम पर और एक गृहस्थी में सर्वव्यापक है। यह लोहा दुर्भेध प्रतीकार्थ देता है। वह ठोस होकर भी जिंदगी में घुला मिला हुआ और प्रवाहित है।

अथवा,

''जन-जन का चेहरा एक'' अपने में एक विशिष्ट एवं व्यापक अर्थ समेटे हुए है। कवि पीड़ित संघर्षशील जनता की एकरूपता तथा समान चिन्तनशीलता का वर्णन कर रहा है। कवि की संवेदना विश्व के तमाम देशों में संघर्षरत जनता के प्रति मुखरित हो गई, जो अपने मानवोचित अधिकारों के लिए कार्यरत है। एशिया, यूरोप, अमेरिका अथवा कोई भी अन्य महादेश या प्रदेश में निवास करने वाला समस्त प्राणियों का शोषण तथा उत्पीड़न के प्रतिकार का स्वरूप एक ऐसा है। उनमें एक अदृश्य एवं अप्रत्यक्ष एकता है।

उनकी भाषा, संस्कृति एवं जीवन-शैली भिन्न हो सकती है, किन्तु सभो के चेहरों में कोई अंतर नहीं दिखता, अर्थात् उनके चेहरे पर हर्ष एवं विषाद, आशा तथा निराशा की प्रतिक्रिया एक जैसा होता है।

कहने का तात्पर्य है कि यह जनता दुनिया के समस्त देशों में संघर्ष कर रही है अथवा इस प्रकार कहा जाए कि विश्व के समस्त देश, प्रान्त तथा नगर सभी स्थान के 'जन-जन' के चेहरे एक समान है। उनकी मुखाकृति में किसी प्रकार की भिन्नता नहीं है। आशय स्पष्ट है, विश्वबंधुत्व एवं उत्पीड़ित जनता जो सतत संघर्षरत है, उसी की पीड़ा का वर्णन कवि कर रहा है।

9. भक्तिकाल की सामान्य प्रवृतियाँ निम्नलिखित है-

(i) राज्याश्रय का त्याग

(ii) नाम की महत्ता

(iii) गुरु की महत्ता

(iv) आध्यात्मिक एवं दार्शनिक

(v) अहंकार का त्याग

अथवा

आधुनिक काल के साहित्य की प्रमुख प्रवृतियाँ निम्नलिखित है-

(i) पद्य एवं गद्य का विकास

(ii) राष्ट्रोय भावना का उत्थान

(iii) भाषा का परिवर्त्तन

(iv) शैली परिवर्त्तन

(v) नवयुग की चेतना का विस्तृत विवेचन।

*****

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

हिन्दी (100 अंक) Hindi (100 Marks)

Set - 2

सेट-2

हिन्दी -XII

समय- 3 घंटे 15 मिनट पूर्णांक-100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

१. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

२. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

३. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

1. संक्षिप्त पत्र लिखे । 6

अपने प्रधानाचार्य के पास एक आवेदन पत्र लिखें जिसमें जिम सामग्री उपलब्ध कराने की प्रार्थना की गयी हो।

अथवा

बाढ़ की समस्या से निजात के लिए मुख्यमंत्री के नाम एक पत्र लिखें ।

2. संक्षेपण करें : 4

राष्ट्रभाषा एक चीज है और राजभाषा दूसरी चीज। यह आवश्यक नहीं कि राजभाषा ही राष्ट्रभाषा हो सकती है, पर सदा ऐसा होता नहीं। कभी-कभी राजभाषा राष्ट्रभाषा नहीं बन पाती है। कभी अंग्रेजी हमारी राजभाषा थी। आज भी पूर्ण रूप से उसका बहिष्कार नहीं हो पाया है, पर यह हमें सीखनी पड़ती थी। आवश्यकतावश हम अंग्रेजी सीखते तो जरूर थे । पर वह हमारे जीवन की भाषा न बन सकी। हमारे मस्तिष्क और हमारे हृदय में न उतर सकी। राष्ट्रभाषा सिर्फ कचहरी और स्कूलों की भाषा ही नहों, यह खेत और खलिहान की भी भाषा है।

3. I) सही जोड़े का मिलान कीजिए:- 5x1=5

(क) कवित्त	(i) अज्ञेय
(ख) सिपाही की माँ	(ii) भूषण
(ग) गाँव का घर	(iii) शमशेर बहादुर सिंह
(घ) उषा	(iv) ज्ञानेन्द्र पति
(ड़) रोज	(v) मोहन राकेश

II) निम्नलिखित बहुवैकल्पिक उत्तरो में से सही उत्तर चुने- 5x1=5

1. 'छप्पय' किसको रचना है:-

(क) भूषण (ख) सूरदास

(ग) नाभादास (घ) रघुवीर सहाय

2. 'क्लर्क की मौत' के लेखक का नाम बताइये:-

(क) अंतोन चेखव (ख) हेनरी लोपेज

(ग) तोलस्तोय (घ) गाई द मोपासां

3. 'प्रगीत और समाज' के रचनाकार कौन हैं:-

(क) नामवर सिंह (ख) मलयज

(ग) ओम प्रकाश वाल्मीकि (घ) शमशेर बहादुर सिंह

4. 'प्यारे नन्हे बेटे को' कविता के कवि का नाम बताइऐ:-

(क) ज्ञानेन्द्रपति (ख) मोहन राकेश

(ग) विनोद कुमार शुक्ल (घ) सुभद्रा कुमार चौहान

5. 'एक लेख और एक पत्र' पाठ क लेखक कौन हैं:-

(क) मोहन राकेश (ख) ज्ञानेन्द्रपति

(ग) भगत सिंह (घ) नामवर सिंह

III) रिक्त स्थानों की पूर्ति करे : 5x1=5

(क) पूर्णिमा थी आकाश ..... था । (नभ्र/अनभ्र)

(ख) थे तो आप होगे..... मील पैदल चलकर आए है (अठारह/सोलह)

(ग) किंतु कवि की कल्पना ..... है। (झूठी/सच्ची)

(घ) कुछ ऐसे मित्र है जिनके भाव ..... है। (अच्छे / बुरे)

(ड़) वजीरा सिंह पलटन का ..... था। विदूषक/नायक)

4. किसी एक विषय पर निबंध लिखं :- 1X10=10

(क) मेरी माँ ।

(ख) स्वास्थ्य ही धन है।

(ग) चुनाव और आज की राजनीति ।

(घ) अनुशासन का महत्त्व ।

(ड़) भारतीय किसान ।

5. सप्रसंग व्याख्या करें : 2X4=8

(क) मैंने देखा, पवन में चीड़ के वृक्ष ..... गर्मी से सूखकर मटमैले हुए चीड़ के वृक्ष धीरे-धीरे गा रहे हैं, कोई राग जो कोमल है, किन्तु करूण नहीं। अशांतिमय है, किन्तु उद्वेगमय नहीं .....

अथवा

आदमी यथार्थ को जीता ही नहीं,
यथार्थ को रचता भी है ।

(ख) जादू टूटता है इस उषा का अब,
सूर्योदय हो रहा है।

अथवा

''धनि सो पुरुष जस कीरति जासू । फूल मरै पै मरै न बासू''

6. 'नाभादास' या 'सूरदास' का काव्यात्मक परिचय दीजिए।

अथवा

आदिकाल की पाँच विशेषताओं का उल्लेख करें ।

7. निम्नलिखित लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 6x2=12

(क) गैंग्रीन क्या है ?

(ख) भ्रष्टाचार की जड़ क्या है ?

(ग) कबीर ने भक्ति को कितना महत्व दिया?

(घ) तुलसीदास को किस वस्तु की भूख है ?

(ड़) विशनी मानक को लड़ाई में क्यों भेजती है ?

(च) वजीरा सिंह कौन है?

8. निम्नलिखित दो दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर दे - 2x10=20

(क) 'अधिनायक' कविता का सारांश लिखे

(ख) बातचीत के संबंध में वन जॉनसन और एडीसन के विचारों को व्यक्त करें ।

9. (क) काल किसे कहते है ? इसके भेदों को उदाहरण सहित लिखे । 1x5=5

(ख) किन्हीं पाँच का संधि-विच्छेद करे । 1x5=5

सर्वोदय, नरेश, सज्जन, विद्यालय, यशोदा, नमस्ते

(ग) किन्हीं पाँच का लिंग निर्णय करते हुए वाक्य प्रयोग करें । 1 x5=5

दिशा, यज्ञ, पीतल, पेड़, जेब, मूँछ

(घ) किन्हीं पाँच का विलोम शब्द लिखं । 1 x5=5

दीर्घायु, गुप्त, घातक, गुण, क्रोध, महँगा ।

उत्तर

1. सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय

म०रा०ना०पु०उच्च विद्यालनय

सकसोहरा, पटना

विषय : खेल सामग्री उपलब्ध कराने के संबंध में ।

महाशय,

निवेदनपूर्वक कहना यह है कि इस विद्यालय में करीब एक हजार विद्यार्थी है। इस विद्यालय में एक बड़ा खेल का मैदान भी है। लेकिन खेल-उपकरण एवं खेल-सामग्री उपलब्ध नहीं है।

अत: श्रीमान् से निवेदन है कि क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल, लूडो आदि आम खेलकूद के सामान शीघ्र उपलब्ध करा दिए जाएँ। उत्तम स्वास्थ्य के लिए खेल अनिवार्य है। उत्तम पढ़ाई के लिए भी खेल अनिवार्य है। राष्ट्र के लिए तेजस्वी खिलाड़ी पैदा हो, इसलिए हम सब के लिए पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद करना भी अनिवार्य है। आशा करता हूँ कि हम छात्रों के निवेदन को मानने की कृपा करेंगे।

19.12.2016

भवदीय

छात्र एवं छात्रागण

अथवा

माननीय मुख्यमंत्री

बिहार सरकार

आपसे नम्र निवेदन है कि पटना जिले में मुहाने नदी के किनारे कड़रा गाँव में मेरा घर है। यह गाँव नदी के किनारे है। आशंका है कि यह गाँव संभावित बाढ़ में जलमग्न हो सकता है। आपसे अनुरोध है कि इस स्थान पर 3 किलोमीटर क्षेत्र में एक बाँध बनाने का आदेश प्रदान करें ताकि आसपास के गाँव भी बाढ़ से सुरक्षित हो जाएँगे ।

अत: आपसे सादर निवेदन है कि बाँध बनवाने की संस्तुति प्रदान कर हम क्षेत्रवासियों को बाढ़ की समस्या से निजात दिलाएँ।

भवदीय

कड़रा निवासी, पटना

2. शीर्षक- राष्ट्रभाषा बनाम राजभाषा

राष्ट्रभाषा और राजभाषा में बड़ा अन्तर है। एक का संबंध जन-चेतना से जुड़ा है और दूसरे का कार्यालयों के कामकाज से । इसीलिए अंग्रेजी हमारी राष्ट्रभाषा बनने में पूर्णतः असमर्थ रह गयी ।

3. I)

(क) कवित्त - (ii) भूषण

(ख) सिपाही की माँ - (v) मोहन राकेश

(ग) गाँव का घर- (iv) ज्ञानेन्द्र पति

(घ) उषा - (iii) शमशेर बहादुर सिंह

(घ) रोज - (i) अज्ञेय

II)

1. छप्पय - (ग) नाभादास
2. क्लर्क की मौत - (क) अंतोन चेखव
3. प्रगीत और समाज - (क) नामवर सिंह
4. प्यारे नन्हें बेटे को - (ग) विनोद कुमार शुक्ल
5. एक लेख और एक पत्र- (ग) भगत सिंह

III) (क) अनभ्र

(ख) अठारह

(ग) झूठी

(घ) अच्छे

(ड़) विदूषक

4. निबंध- **स्वास्थ्य ही धन है**

(i) अर्थ (ii) स्वास्थ्य ही धन है (iii) स्वास्थ्य की रक्षा

(i) मनुष्य स्वस्थ तब कहलाता है जब उसे कोई शारीरिक दुःख या रोग नहीं रहता। जब मनुष्य की वृद्धि ठीक रहती है और उसे काफी बल एवं साहस रहता है तब वह स्वस्थ कहलाता है।

(ii)स्वास्थ्य जीवन की सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है। यह सबसे बहुमूल्य खजाने से भी अधिक कीमती है। यह ऐसा इसलिए है क्योंकि स्वास्थ्य के बिना जीवन बोझ हो जाता है। किसी व्यक्ति को काफी धन, रहने के लिए महल के समान घर, सेवा करने के लिए नौकर-चाकर एवं सुंदर-सा भोजन और विलासतापूर्ण जिन्दगी हो सकते है। परन्तु अगर उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं हा तो इन चीजों से उसे शायद ही आनंद मिलेगा। अस्वस्थ व्यक्ति के लिए जीवन में कोई आनंद नहीं है। वह बराबर उदास रहता है। प्रकृति की किसी भी वस्तु में उसके लिए कोई आनंद नहीं रहता। इसलिए यह ठीक ही कहा गया है कि 'स्वास्थ्य ही धन है।'

(iii) स्वास्थ्य जैसे मूल्यवान वस्तु की रक्षा करना मनुष्य का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है।

स्वस्थ रहने के लिए लोगों को स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना चाहिए। उन्हें प्रात:काल उठना चाहिए। उन्हें अपने दाँतों को नित्य साफ करना चाहिए और यथासंभव शुद्ध जल में स्नान करना चाहिए। प्रात:काल का टहलना भी बड़ा स्वास्थ्यवद्धक है। अत: नियमित रूप से टहलना चाहिए और अपने वस्त्र, बिछावन आदि को साफ-सुथरा रखना चाहिए। उन्हें अपने घरों को साफ-सुथरा रखना चाहिए। घर को पूर्ण रूप से हवादार होना चाहिए। भोजन के संबंध में अधिक-से-अधिक सावधानी आवश्यक है। लोगों को शुद्ध और साधारण भोजन करना चाहिए । उन्हें ताजा फल और सब्जी अधिक एवं मसाला कम खाना चाहिए। शुद्ध दूध अधिक स्वास्थ्यवद्धक भोजन है और इसका सदा व्यवहार करना चाहिए। प्रतिदिन कुछ शारीरिक व्यायाम भी करना आवश्यक है। दिन-भर के कठिन परिश्रम के बाद लोगों को काफी आराम करना चाहिए। ये ही कुछ नियम है, जो स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने में सहायता प्रदान करते हैं और इनका पालन सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

--

मेरी माँ

(i) भूमिका (ii) वर्णन (iii) उसका दैनिक जीवन (iv) उपसंहार

(i) माता प्रेम, दया और बलिदान का प्रतीक होती है। वह बराबर अपने बच्चों से बहुत प्रेम करती है। वह बच्चों के लिए भी त्याग कर सकती है। जब मैं अपनी माँ के बारे में सोचता हूँ तो मैं महसूस करता हूँ कि मुझे एक आदर्श माँ है।

(ii) मेरी माँ एक धार्मिक महिला है। उसे बहुत शिक्षा नहीं मिली है। लेकिन, उसे सांसारिक बातों का बहुत बड़ा अनुभव है। वह घर के कामों में बहुत रूचि लेती है। वह हमलोगों से बहुत प्रेम करती है। मुझे एक भाई और एक बहन है। वह हम सबों को एक तरह से प्यार करती है। वह बराबर हमारे आराम का ख्याल करती है। वह अपने आराम की परवाह नहीं करती। यदि घर में कोई व्यक्ति बीमार पड़ जाता है तो वह उसकी दिन-रात सेवा करती है। वह भोजन करना भी भूल जाती है और रात भर जगी रहती है।

मेरी माँ एक दयालु और उदार महिला है। वह बराबर गरीब लोगों की सहायता करती है। उसे भिखारियों को भीख देने में आनंद आता है। वह धार्मिक महिला है। वह प्रतिदिन मंदिर जाती है। वह पर्व के दिनों को उपवास करती है।

वह हमारे चरित्र-निर्माण पर बहुत ध्यान देती है। वह चाहती है कि हम भविष्य में आदर्श नागरिक बनें। शाम में वह हमलोगों को शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाती हैं और बताती हैं कि हम अपना भविष्य उज्जवल कैसे बना सकते हैं।

(iii) मेरी माँ को सुबह से रात तक कठिन परिश्रम करना पड़ता है। वह 5 बजे सुबह उठ जाती है। हमलोगों के उठने के पहिले ही वह हमारे लिए नाश्ता और चाय तैयार कर लेती है। तब वह खाना बनाती है। जब वह मंदिर से लौटकर आती है तो दोपहर का भोजन करती है। भोजन करने के बाद वह घर के काम करती है। शाम में वह फिर रसोई-घर में जाती है। हमलोगों को खिलाने के बाद वह मनोरंजक कहानियाँ सुनाती हैं।

(iv) मुझे अपनी माँ पर गर्व है। उसे मुझसे बहुत उम्मीद है। मेरी इच्छा है कि मैं उसका मधुर सपना पूरा कर दूँ ।

5. (क) प्रस्तुत पंक्तियाँ 'रोज' शीर्षक कहानी से ली गई है। इसके कहानीकार अज्ञेय है। इन पंक्तियों में प्राकृतिक सौन्दर्य का बड़ा ही मनोवैज्ञानिक वर्णन हुआ है। कहानीकार ने प्रतीक के आधार पर मालती के भाई की मन:स्थिति की सुन्दर अभिव्यक्ति की है। पूर्णिमा की स्निग्ध शीतल चाँदनी के स्पर्श से मालती की उपस्थिति में अतिथि के भीतर निरुद्विग्न कोमल रागिनी फूट पड़ती है। उसके भीतर रसमय हलचल हिलोरे लेने लगती है। वह शुब्ध नहीं पर शांत अवश्य है।

अथवा

आदमी यथार्थ को जीता रहता है। अनक घटनाएँ उसके सामने से गुजरती रहती है। नहीं चाहने पर भी जीना ही पड़ता है। 'दुनिया में अगर आए हैं तो जीना ही पड़ेगा। जीवन है अगर जहर तो पीना ही पड़ेगा।' जितने भी रचनाकार हैं वे यथार्थ को रचते भी रहते है। यहाँ यथार्थ जीवन के सत्य को दिखलाया गया ह।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि शमशेर बहादुर सिंह रचित कविता उषा से अवतरित है। प्रस्तुत कविता उषा में सूर्योदय के ठीक पहले की पल-पल परिवर्तित होती प्रकृति का शब्द चित्र प्रस्तुत किया गया है। उषा का जादू टूटने से कवि का तात्पर्य उषाकालीन रंगों के प्राकृतिक सौन्दर्य का समाप्त होना है। सूर्योदय होते ही उषा का जादू टूट जाता है।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियाँ जायसी रचित 'कड़बक' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इन पंक्तियों में कवि ने यह बताने का प्रयास किया है कि इस पृथ्वी पर वही पुरुष धन्य है, जिसकी कीर्त्ति उसके नहीं रहने पर भी सर्वत्र गूंजती रहती है। ऐसा व्यक्ति मर कर भी नहीं मरता। वह लोगों की स्मृति में सदा जीवित रहता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार फूल का अंत हो जाता है किन्तु उसकी सुगंध नहीं मरती।

कवि के कहने का मूल अभिप्राय यह है कि पप्रावत के चित्रित पात्र अब जीवित नहीं, पर लोग आज भी याद करते हैं। कवि को यह पूर्ण विश्वास है कि पात्रों की भाँति लोग मेरे मरने के बाद इसी रचना के माध्यम से मुझे सर्वत्र जीवित रखेगे।

6. **सूरदास-**

सूरदास मध्यकालीन सगुण भक्ति धारा की कृष्णभक्ति शाखा के श्रेष्ठ कवि हैं। इन्होंने अपनी कविताओं में कष्ण और राधा का सांगोपांग वर्णन किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं कि ''वात्सल्य और श्रृंगार के क्षेत्रों का जितना अधिक उद्घाटन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया है, उतना किसी अन्य कवि ने नहीं की। इन क्षेत्रों का कोना-कोना में झाँक आए।

सूर का संयोग एवं वियोग वर्णन, अद्भूत है। इनके भ्रमरगीत में प्रेम की अनन्यता, प्रगाढ़ता और आत्मसमर्पण की जो आकुलता दिखाई पड़ती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

अथवा

आदिकाल की पाँच विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(i) वीररस की प्रधानता

(ii) आश्रयदाता राजाओं एवं सामंतां की प्रशंसा

(iii) युद्धों का यथार्थ वर्णन

(iv) ऐतिहासिकता का अभाव

(v) जनजीवन से संपर्क का अभाव

7. (क) गैंग्रीन एक प्रकार का रोग है। जिसमें पैर में गहरा घाव हो जाता है तथा वह तेजी से फैलता है।

(ख) भ्रष्टाचार की जड़ रिश्वत, लोभ-लालच है।

(ग) कबोर धर्म के लिए भक्ति को अनिवार्य समझते है।

(घ) तुलसीदास राम की भक्ति के भूखे हैं। तुलसीदास राम के समक्ष समर्पण करने वाले कवि हैं। वे भक्ति की भीख माँगते हैं।

(ड़) माँ बिशनी अपने बेटे को लड़ाई में कुछ पैसे कमाने हेतु भेजती है। ताकि मुन्नी की शादी के लिए कपड़े खरीदे जा सके । लेकिन 'सपने किसी के होत न पूरे, रोज बनाए फिर भी अधूरे।'

(च) वजीरा सिंह पलटन का विदूषक है।

8. (क)

'अधिनायक' शीर्षक कविता के रचयिता रघुवीर सहाय है। वे हिंदी के प्रसिद्ध कवि एवं पत्रकार है। अधिनायक कविता एक व्यंग्य कविता है। इस कविता में आजादी के बाद सत्ताधारी वर्ग के प्रति रोषपूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त की गई। इसमें सत्ताधारी वर्ग के प्रति तिक्त कटाक्ष है। आजादी के बीस वर्ष बीत जाने के बाद भी आम आदमी के जीवन में कोई बदलाब नहीं आया है। वह आम आदमी का प्रतिनिधि है जो राष्ट्रोय त्योहार के दिन अपने विद्यालय में झंडा फहराए जाने के जलसे में फटा सुथन्ना पहने राष्ट्रगान दुहराता है। जिसमें इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी न जाने किस

'अधिनायक' का गुणगान किया गया है। कवि का संयत व्यंग्य इस अधिनायक शब्द पर है- जन-गण-मन अधिनायक जय हो, भारत भाग्य विधाता ।

(ख) बातचीत के संबंध में बेन जॉनसन का मत है कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है। यह बहुत ही उचित जान पड़तजा है। एडीसन का मत है कि असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है जिसका तात्पर्य यह है कि जब दो आदमी होते है तभो अपना दिल एक दूसरे के सामने खोलते है। जब तीन हुए तब दो बात कोसो दूर गयी। जैसे गरम दूध और ठण्डे पानी के दो बर्त्तन पास-पास सटाकर रखने पर एक असर दूसरे में पहुँच जाता है अर्थात् दूध ठंडा हो जाता है और पानी गरम। वैसे ही दो आदमी आपस में बैठे हो ता एक का गुप्त असर दूसरे पर पहुँच जाता है। चाहे एक दूसरे को देखं भी नहीं तब भी बोलने की कौन कहे एक के शरीर की विद्युत तरगें दूसरे में प्रवेश करने लगती है। जब पास बैठने का इतना असर होता है तब बातचीत में कितना असर होगा। इसे कौन नहीं स्वीकारेगा।

9. (क) **<u>काल</u>**

परिभाषा - क्रिया के जिस रूप से उनके हाने या करने में जो समय लगता है, उसे 'काल' कहते है ।

काल के भेद- इसके तीन भेद है-

(i) वर्त्तमान काल (ii) भूतकाल (iii) भविष्यकाल

(i) वर्त्तमान काल - जिस काल में क्रिया के व्यापार की निरंतरता का पता चले उसे 'वर्त्तमानकाल' कहते है। जैसे- मैं लिखता हूँ।

(ii) भूतकाल - क्रिया का वह रूप जिसमें कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे भूतकाल कहते है। जैसे- वह गया। वह पढ़ चुका था।

(iii) भविष्यकाल- भविष्य में होनेवाले काम को भविष्यकाल की क्रिया कहते है। जैसे-राम कल पटना जाएगा।

ख)

सर्वोदय	–	सर्व + उदय	विद्यालय	–	विद्या + आलय
नरेश	–	नर + ईश	यशोदा	–	यश:+दा
सज्जन	–	सत् + जन	नमस्ते	–	नम: + स्ते

(ग)

यज्ञ (पु0) – श्याम ने अपने नये घर में यज्ञ किया।

दिशा (स्त्री0) – अचानक उत्तर दिशा से रान की आवाज आयी।

पीतल (स्त्री0) – पीतल की बाल्टी कहाँ रखी है ।

पेड़ (पु0) – यह अमरूद का पेड़ है।

जेब (स्त्री0) – उसकी जेब फट गई।

मूँछ (स्त्री0) – श्याम की मूँछ कट गई।

(घ)

दीर्घायु	–	अल्पायु
गुप्त	–	प्रकट
घातक	–	रक्षक
गुण	–	अवगुण
क्रोध	–	अक्रोध
महँगा	–	सस्ता

*****

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

हिन्दी (100 अंक) Hindi (100 Marks)

Set - 3

हिन्दी (सेट-3)

समय- 3 घंटे 15 मिनट पूर्णांक-100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

१. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

२. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

३. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

1. संक्षिप्त पत्र लिखे । 6

पटना नगर निगम को अपने मुहल्ले की सफाई के लिए शिकायती पत्र लिखिए।

अथवा

विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र हेतु प्रधानाचार्य के पास आवेदन पत्र लिखें ।

2. संक्षेपण करें : 4

जीवन का वास्तविक आनन्द मनुष्य को अपने श्रम से प्राप्त होता है। जो सुबह से शाम तक अपना खून-पसीना एक करते हुए कर्म के क्षेत्र में डटा रहता है, चिन्ताएँ उससे दूर भागती हैं। ऐसे व्यक्ति को व्यर्थ की बातें सोचने का अवसर ही नहीं मिलता। परिश्रमी व्यक्ति को किसी बात की कमी नहीं। उसे अपनी आशाओं पर विश्वास होता है। फिर वह किसी के सामने हाथ फैलाकर गिड़गिड़ाये क्यों ? वह जानता है कि उसके पास दो हाथ है जिनसे अपने भाग्य का निर्माण किया जा सकता है।

3. क) सही जोड़े का मिलान करे:- 1x5=5

(i) रोज	(क) जे. कृष्णमूर्ति
(ii) हरचरना	(ख) जयशंकर प्रसाद
(iii) कामायनी	(ग) एक कहानी है
(iv) भगत सिंह	(घ) एक लेख एवं पत्र
(v) शिक्षा	(ड़) अधिनायक

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के बहुवैकल्पिक उत्तरों में से सही उत्तर चुनें- 1x5=5

(i) हिन्दी साहित्य का 'सूर्य' किसे कहा जाता है ?

(क) सूरदास (ख) विद्यापति

(ग) तुलसीदास (घ) कबीरदास

(ii) भूषण किस रस के कवि है ?

(क) वीर रस (ख) शांत रस

(ग) करूण रस (घ) शृंगार रस

(iii) जयशंकर प्रसाद कैस कवि है ?

(क) छायावादी (ख) रहस्यवादी

(ग) पृथक्तावादी (घ) समन्वयवादी

(iv) सिपाही की माँ कैसी स्त्री है ?

(क) दुष्ट (ख) भोली-भाली

(ग) कर्कशा (घ) करूणामयी

(v) रघुवीर सहाय किस काल के कवि है ?

(क) रीतिकाल (ख) आधुनिक काल

(ग) भक्तिकाल (घ) आदिकाल

ग) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें : 1x5=5

(i) सत्य का साकार रूप तो ..... ही होता है। (प्रजा / राजा)

(ii) 'उसने कहा था' एक.....है । (कहानी / व्यथा)

(iii) वे ..... मना रहे थे। (उत्सव / पर्व)

(iv) राष्ट्रगीत में भला कौन वह भारत ..... विधाता है। (अभाग्य / भाग्य)

(v) छप्पय एक छंद है जो ..... पंक्तियों का गेय पद होता है। (छः / चार)

4. किसी एक विषय पर निबंध लिखें । 1X10=10

(क) स्त्री-शिक्षा

(ख) खेलकूद

(ग) पुस्तकालय

(घ) मनोरंजन के साधन

(ड़) पर्यटन का महत्त्व

5. सप्रसंग व्याख्या करें : 2X4=8

(क) ''हमारे व्यवहार में सदा सख्य की स्वेच्छा और स्वच्छंदता रही है, वह कभी भ्रातृत्व के, या बड़े छोटेपन के बंधनों में नहीं घिरा.....।''

अथवा

''स्वातंत्र्य युद्ध के महानायक के उस नांदीपाठ में मानो सूत्र रूप में संघर्ष और विजय की सारी गाथा ही समा गई ।''

(ख) जहाँ मरू ज्वाला धधकती,
चातकी कन को तरसती,
उन्हीं जीवत घाटियों की,
मैं सरस बरसात रे मन !

अथवा

तमचुर खग-रोर सुनहु, बोलत बनराई ।
राँभति गो खरिकन में, बछरा हित धाई ।।

6. निम्नलिखित लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दें- 6X2=12

(क) भगत सिंह की विद्यार्थियों से क्या अपेक्षाएँ हैं ?

(ख) नदियों की वेदना का कारण क्या है?

(ग) कवयित्री का खिलौना क्या है ?

(घ) कृष्ण खाते समय क्या-क्या करते हैं ?

(ड़) बूढ़ा मशकवाला क्या कहता है, और क्यों कहता है ?

(च) 'दानव दुरात्मा' से क्या तात्पर्य है ?

7. 'हार-जीत' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखें । 1X10=10

अथवा

सूर के पदों का हिन्दी में अर्थ लिखिये ।

8. निम्नलिखित दो दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर दें - 2X5=10

(क) 'जन-जन का चेहरा एक' का सारांश लिखें ।

अथवा

'अधिनायक' का सारांश लिखें ।

(ख) 'शिक्षा' निबंध का सारांश लिखें ।

अथवा

'जूठन' कहानी का सारांश लिखें ।

9. (क) किन्हीं पाँच शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें । 1X5=5

आकाश, अपेक्षा, आस्था, दयालु, सम्पन्न, निरर्थक, सुबह, धर्म

(ख) किन्हीं पाँच के संधि-विच्छेद करे:- 1X5=5

सरोज, हिमालय, पवन, परीक्षा, नीरस, पुस्तकालय

(ग) किन्हीं पाँच का पर्यायवाची शब्द लिखें । 1X5=5

गंगा, कमल, कपि, आम, प्रेम, मानव

(घ) संधि और समास में अन्तर स्पष्ट करें । सोदाहरण उत्तर दें । 1X5=5

(ड़) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें । 1X5=5

(i) जो कम बोलने वाला हो ।

(ii) जो पीने योग्य हो।

(iii) जिसकी ग्रीवा सुन्दर हो ।

(iv) जिसके शिखर पर चन्द्र हो ।

(v) जो मन को हर ले ।

उत्तर

1. सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,

नगर निगम,

पटना, बिहार ।

विषय : मुहल्ले में गंदगी की समस्या ।

श्रीमान् जी,

हम कदमकुआँ के सभी निवासी अपने मुहल्ले में फैली गंदगी से बेहतर त्रस्त हैं। हमारे मुहल्ले में हर कोने पर कचड़े का अंबार लगा हुआ है, जिससे काफी कीड़े और मच्छर हमारे घरों में आने लगे है। इन कचडों से बदबू भी काफी आती है। इसलिए हम चाहते हैं कि आप अपना ध्यान हमारे मुहल्ले की ओर आकृष्ट करे और इस समस्या का समाधान जल्द निकालें वरन् न जाने कितनी ही जाने चली जाएँगी ।

आपसे अनुरोध है कि शीघ्र ही हमारे मुहल्ले की सफाई करवा दें ।

धन्यवाद ! प्रार्थी,

दिनांक 10.12.2016 कदमकुआँ के सभी निवासी

पटना

अथवा

सेवा में,

प्राचार्य महोदय,

सर जी०डी० पाटलीपुत्रा विद्यालय

कदमकुआँ, पटना (बिहार)

विषय : महाविद्यालय परित्याग प्रमाण पत्र हेतु ।

महाशय,

सविनय निवेदनपूर्वक कहना है कि मैं इंटर कक्षा में उत्तीर्ण हो गया हूँ। आगे बी.ए. की पढ़ाई हेतु मैं पटना विश्वविद्यालय, पटना में नामांकन कराना चाहता हूँ।

अतः आपसे अनुरोध है कि मुझे महाविद्यालय परित्याग प्रमाण पत्र प्रदान कर परम यश के भागी बनें ।

आपका आज्ञाकारी छात्रा

शैली

2. शीर्षक- श्रम का महत्व

श्रम ही जीवन का वास्तविक आनन्द है। कर्मण्य व्यक्ति को चिंता नहीं, आत्मविश्वास रहता है। वह अपना भाग्य दूसरों की दया से नहीं, अपने श्रम से बनाता है।

3. (क)(i) रोज - (ग) एक कहानी है

(ii) हरचरना - (घ) अधिनायक

(iii) कामायनी - (ख) जयशंकर प्रसाद

(iv) भगत सिंह - (घ) एक लेख एवं पत्र

(v) शिक्षा - (क) जे. कृष्णमूर्त्ति

(ख)(i) - क

(ii) - क

(iii) - क

(iv) - ख

(v) - ख

(ग)(i) राजा

(ii) कहानी

(iii) उत्सव

(iv) भाग्य

(v) छः

4. **स्त्री-शिक्षा**

(i) भूमिका (ii) लाभ (iii) आम राय (iv) उपसंहार

(i) एक समय ऐसा था जब लोग सोचते थे कि स्त्रियों को शिक्षा देना आवश्यक नहीं है। अब हम महसूस करने लगे है कि स्त्री-शिक्षा आवश्यक है। आधुनिक युग नारियों की जागृति का युग है। वे जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों से प्रतिद्वंद्विता करने का प्रयत्न कर रही है। बहुत से लोग

स्त्री-शिक्षा का विरोध करते हैं। वे कहते हैं कि औरतों का उचित क्षेत्र घर है। इसलिए वे तर्क देते है कि स्त्री शिक्षा पर रुपए व्यय करना धन की बर्बादी है। यह विचार गलत है, क्योंकि स्त्री शिक्षा समाज में शांतिपूर्ण क्रांति ला सकती है।

(ii) स्त्री-शिक्षा से कई लाभ हैं। शिक्षित स्त्रियाँ अपने देश के विकास में महत्वपूर्ण सहयोग दे सकती है। वे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों से कंधा से कंधा मिलाकर चल सकती है। वे शिक्षिका, वकील, डॉक्टर, वैज्ञानिक तथा प्रशासक आदि के रूप में समाज की सेवा कर सकती है। वे युद्ध के समय महत्वपूर्ण काम कर सकती हैं।

आर्थिक कठिनाई के इस युग में स्त्रियों के लिए शिक्षा एक वरदान है। आजकल मध्यवर्ग के लोगों के लिए आदमी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त पैसे कमाना कठिन है। शिक्षित महिलाएँ अपने पतियों की आमदनी को स्वयं अर्जन करके बढ़ा सकती है। यदि कोई स्त्री शिक्षित है तो वह अपने पति की मृत्यु के बाद अपने भरण-पोषण के लिए पैसे कमा सकती है।

हमारे घरों को हर्षपूर्ण स्थान बनाने के लिए स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता है। यदि हमारी पत्नियाँ और माताएँ अपने बच्चों का अच्छी तरह पालन-पोषण करके अपने देश का भविष्य उज्जवल कर सकती है। शिक्षा महिला को विचार की स्वतंत्रता देती है। यह उसका दृष्टिकोण उदार बनाती है और उसके कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का ज्ञान देती है।

(iii) बहुत से लोगों का कहना है कि स्त्रियों को डिग्रियाँ प्राप्त करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। वे आगे पढ़कर या नौकरी में हिस्सा लेकर गलती करते हैं, क्योंकि उन्होंने जीवन के सभी क्षेत्रों में अपना महत्व प्रदर्शित कर दिया हैं। अत: महिलाएँ वैसी शिक्षा नहीं प्राप्त करें, जैसी पुरुषों को प्राप्त होती है। लेकिन, उन्हें अपने घर के कर्त्तव्यों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसलिए महिलाओं को गृह-विज्ञान और बाल-मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक होना चाहिए ।

(iv) किसी देश की प्रगति स्त्री-शिक्षा पर निर्भर करती है। इसलिए स्त्री-शिक्षा को प्रोत्साहित करना चाहिए ।

--

खेल-कूद का महत्व

(i) भूमिका (ii) खेल का महत्व (iii) लाभ (iv) उपसंहार

(i) मानव जीवन में खेल-कूद का महत्व है। भूतकाल में हमारे दश में खेल-कूद को महत्व नहीं दिया जाता था। लेकिन, अब हम महसूस करने लगे है कि खेल-कूद बहुत उपयोगी है। इसलिए हमारे देश की प्रत्येक शैक्षणिक संस्था खेल-कूद की व्यवस्था करती है। वस्तुतः खेल-कूद शिक्षा का एक आवश्यक अंग है।

(ii) खेल-कूद का बहुत महत्व है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए हमें खेल-कूद में भाग लेना चाहिए। हमारे जीवन में स्वास्थ्य सबसे महत्वपूर्ण चीज है। शरीर और मस्तिष्क के विकास के लिए खेल-कूद आवश्यक है। यदि हमारा स्वास्थ्य खराब है तो हम कोई काम नहीं कर सकते। स्वास्थ्य और शारीरिक बल के विकास के लिए खेल-कूद आवश्यक है।

(iii) खेल-कूद से बहुत लाभ है। वे स्वास्थ्य और शारीरिक बल का विकास करते है। शरीर और मस्तिष्क के विकास के लिए वे आवश्यक है। जब हम खेल-कूद में भाग लेते है तब हमारे शरीर का अच्छा व्यायाम होता है। खेल-कूद खुली हवा में होता है। जब हम खल-कूद में भाग लेते है तब हम स्वच्छ हवा में साँस लेते है। इसलिए खेल-कूद हमारे स्वास्थ्य और शारीरिक बल का विकास करते है।

खेल-कूद से हम अनेक गुणों को सीखते है। जब हम खेल-कूद में भाग लेते हैं तो हमें कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है। इसलिए खेल-कूद से हम अनुशासन भी सीखते है जो व्यावहारिक जीवन में बहुत उपयोगी है।

खेल-कूद से हम आत्म-नियंत्रण करना सीखते हैं। अच्छा खिलाड़ी विजय होने पर अत्यधिक आनंद नहीं मनाता । जब वह पराजित हो जाता है तब वह निराश नहीं होता। जब वह खेल-कूद में भाग लेता है तब वह परिणाम की चिंता नहीं करता।

खेल-कूद मनुष्य को व्यावहारिक जीवन के लिए प्रशिक्षित करता है। खेल के मैदान में जिन गुणों का विकास होता है । वे बाद में जीवन में बहुत उपयोगी होते है। हमारा जीवन एक

मनोरंजक खेल है। खेल-कूद में कुछ ऐसे गुणों का विकास होता है जो व्यावहारिक जीवन में उपयोगी सिद्ध होते हैं।

(iv) यद्यपि खेल-कूद बहुत उपयोगी है फिर भी उनमें कुछ बुराइयाँ भी हैं। यदि हम उनमें बहुत भाग लेते हैं तो हमारा स्वास्थ्य खराब हो जाता है। खेल-कूद में विद्यार्थियों का बहुत सारा समय चला जाता है। खिलाड़ी प्रायः अपने अध्ययन की उपेक्षा करता है। कभी-कभी खेल-कूद को लोग जीवन का मुख्य काम बना लेते हैं। जब विद्यार्थी खेल-कूद को अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य बना लेते है तब वे अपने जीवन को बर्बाद कर लेते है। उनको खेल-कूद और अध्ययन में संतुलन बनाए रखना चाहिए ।

5.(क) प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक की 'रोज' शीर्षक कहानी से लिया गया है। इस कहानी के कहानीकार हैं हिन्दी साहित्य के लब्धप्रतिष्ठ कहानीकार सच्चिानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' ।

प्रस्तुत कथन कहानी (रोज) की नायिका मालती के दूर के रिश्ते में भाई का है। मालती और उसका मित्र भाई; दोनों बचपन में एक साथ पढ़ते और खेलते थे। दोनों दूर के रिश्ते में भाई-बहन थे। पर उनमें भाई-बहन से ज्यादा मित्रभाव का संबंध था। उनके व्यवहार में हमेशा मित्रता की स्वेच्छा और स्वच्छंदता की मौजूदगी रहती थी। मित्र-मित्र के बोच जो खुलापन स्पष्टता, वर्जनाओं से मुक्त उल्लास आदि का आधिक्य होता है, वह सारा कुछ उनके व्यवहार में मौजूद था। वे अपनी इच्छाओं के स्वामी थे। व्यवहार में सामाजिक मर्यादाओं से अलग अपने मित्र संबंध की मर्यादाओं के अनुपालनकर्त्ता थे। उसमें कोई बड़ा या छोटा नहीं था। दोनों समान थे। हँसी, मजाक, ठिठोली, व्यंग्य, अकथ्य आकर्षण, मौज, मस्ती आदि उनके सहज व्यवहार के अंग थे। उनके पारस्परिक व्यवहार में 'रिश्ते का कोई बंधन न था। समाज उन्हें भाई-बहन समझता था, पर मित्रभाव से जुड़े हुए थे। दोनों में एक-दूसरे के पति भाव का सहज आकर्षण था।

अथवा

प्रस्तुत सारगर्भित गद्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक के यात्रा-वृत्तांत 'ओ सदानीरा' से उद्धृत है। इसके रचयिता जगदीश चंद्र माथुर है।

चंपारण के किसान राजकुमार शुक्ल के आग्रह पर महात्मा गाँधी 1917 के अप्रैल महीने में चंपारण में किसानों की दयनीय दशा देखने आए। चंपारण में उनका आना क्या था मानो घोर

अँधकार में एक बिजली-सी कौंधी हो। चंपारण में गाँधी का आगमन जैसे स्वतंत्रता यद्ध के महानाटक का 'नांदीपाठ' हो। 'नांदीपाठ' में सूत्रधार नाटक के प्रारंभ में एक मंगलात्मक श्लोक का पाठ करता है जिसमें नाटक के सार और उद्देश्य का कथन होता है। महात्मा गाँधी का चंपारण में सत्याग्रह आन्दोलन का प्रारंभ करना स्वातंत्र्य यद्ध के तमाम संघर्षों और परिणाम रूप में प्राप्त विजय का सूचक था। जैसे सूत्र रूप में 'नांदीपाठ' में नाटक का कथ्य और उद्देश्य व्यक्त किया जाता है। उसी तरह गाँधीजी के द्वारा प्रारंभ किया गया चंपारण का स्वातंत्र्य आन्दोलन बाद में छिड़नेवाले विराट स्वातंत्र्य युद्ध का सूचक था।

5. (ख) प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'दिगन्त' में 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक से संकलित छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'कामायनी' महाकाव्य से उद्धृत है। इन पंक्तियों में श्रद्धा पुरुष के जीवन में नारी के महत्व को रेखांकित करती हुई कहती है-

हे मन! मैं जीवनरूपी घाटियों की जलयुक्त वह बरसात हूँ जिसकी एक बूँद के लिए रेगिस्तान की धधकती मरुभूमि और चातकी तरसते रहते है। तात्पर्य यह है कि जिस मन में मरुभूमि की-सी वेदना जलती रहती है और मन प्रिय के वियोग में चातक की तरह विषादयुक्त रहता है, मैं उस विरहाकुल मन में शीतलता उत्पन्न करती हूँ।

अथवा,

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी महाकवि सूरदास द्वारा रचित हैं। इन पंक्तियों में कवि सूरदास ने राजकुँवर कृष्ण को प्रात:काल नींद से जगाने के लिए प्रात:कालीन प्रकृति का मनोरम वर्णन किया है।

कवि सूरदास जी कहते हैं कि ब्रज के राजकँवर श्रीकृष्ण को प्रात:कालीन नींद से जगाने के लिए बन्दीजन मंगलगीत गाते हुए कहते है कि हे ब्रजराज कुँवर अब जाग जाइये, क्योंकि प्रात:काल हो गया है। देखो, मुर्गी बोलकर प्रात:काल होने की सूचना दे रहा है और पेड़-पौधों पर जो पक्षियों का समूह मधुर कोलाहल करने लगा है, उसको सुनकर आनन्द का अनुभव कीजिए। इसी के साथ अपने बाड़े में बँधी गाय अपने बछड़े के पास जाने के लिए रँभाने भी लगी है।

6. (क) भगत सिंह कहते है कि हिन्दुस्तान को ऐसे देशसेवकों की जरूरत है जो तन-मन-धन अपने देश पर अर्पित कर दें और पागलों की तरह सारी उम्र देश की आजादी के लिए या देश के विकास पर न्यौछावर कर दें। यह कार्य सिर्फ विद्यार्थी ही कर सकते है। सभी देशों को आजाद करने वाले वहाँ के विद्यार्थी और नौजवान ही हुआ करते है। वे ही क्रांति कर सकते है। अत: विद्यार्थी पढ़े, जरूर पढ़े। साथ ही पॉलिटिक्स का भो ज्ञान हासिल करें और जब जरूरत हो तो मैदान में कूद पड़े और अपना जीवन इसी काम में लगा दे। अपने प्राणों को इसी में उत्सर्ग कर दे। यही अपेक्षाएँ है विद्यार्थियों से भगत सिंह की।

(ख) 'नदियों की वेदना' जिन्दगी की धारा के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुआ है। नदी की धारा स्वच्छ, निर्मल, कलरव करती हुई प्रावाहित होती है, वह अपने साथ नये जीवन का संचार करती चलती है। लेकिन जन-शोषक अर्थात् पूँजीवादी व्यवस्था के कारण सामान्य जनता में स्वच्छ, निर्मल, कोमल जीवन का संचार नहीं हो पा रहा है। जनता इस व्यवस्था से आक्रान्त है, त्रस्त है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि नदियों की वेदना का कारण सामान्य जनता का दु:ख, दर्द एवं सन्ताप है।

(ग) कवयित्री का खिलौना उसका बेटा है। बच्चों को खिलौना प्रिय होता है; वह उनकी सर्वोत्तम प्रिय वस्तु होती है। उसी प्रकार कवयित्री के लिए उसका बेटा उसके जीवन का सवोत्तम उपहार है। इसलिए वह कवयित्री का खिलौना है।

(घ) कृष्ण खाते समय कुछ खाते हैं, कुछ फेंक देते है। कृष्ण अपने बाल सुलभ खिलवाड़ से सबका मन मोह लेते है। वे थोड़ा खाते है थोड़ा उछालते है, कुछ धरती पर गिराते है। फिर उन्हें निवेदन कर खिलाया जाता ह । यशोदा मैया प्रफुल्ल होती है। विविध व्यंजन है-बड़ी, बेसन का बड़ा इत्यादि। बालक कृष्ण भोजन अपने हाथों में लेकर उछालते है, फेंकते है। यह दृश्य शोभा देता है। बाल कृष्ण की लीला देखते ही बनती है, सुनते ही बनती है।

(ड़) बूढ़ा मशकवाला यद्ध का सत्य जानता ह। वह कह रहा है कि हम एक बार फिर हार गए हैं। गाजे-बाजे के साथ जीत नहीं हार लौट रही है।

मशकवाला सत्यद्रष्टा है। उसने अपनी आँखों से लड़ाई का अंजाम देखा है। वह सत्य है और अपने हृदय की बात कहता है।

(च) दानव-दुरात्मा का शाब्दिक अर्थ है- जो अमानवीय एवं बुरे कृत्यों में संलग्न रहते हैं। जिनका आचरण पशु-जैसा होता है तथा जिनमें पशुता-भाव भरा होता है। उन्हें 'दानव' कहा गया है। इसी तरह जिनमें दुष्टता का भाव भरा होता है तथा जो दुराचारी प्रवृत्ति के होते हैं उन्हें 'दुरात्मा' कहा गया है। सच तो यह है कि दोनों में कोई भेद नहीं है, दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं।

7. अशोक वाजपेयी रचित 'हार-जीत' एक गद्य कविता है। यह कविता लिखने की एक आधुनिक विधा है। समसामयिकता इसकी विशेषता है। अशोक वाजपेयी हिंदी के एक प्रमुख कवि आलोचक विचारक एवं कला मर्मज्ञ है। वे संपादक एवं संस्कृतिकर्मी भी हैं। जीत की विडम्बना को 'हार-जीत' गद्य कविता प्रकाश में लाती है।

जनता उत्सव उत्सव मना रही है। सारे शहर में रोशनी की व्यवस्था की जा रही है। जनमत को पता है कि उसकी सेना और रथ विजय प्राप्त करके लौट रहे हैं। नागरिकों में से ज्यादातर को पता नहीं है कि किस यद्ध में उनकी सेना और शासक गए थे? यद्ध किस बात पर हुआ था- यह भी पता नहीं है। देश का दुश्मन कौन है- यह भी पता नहीं है। लेकिन सभी नागरिक विजय पर्व मनाने की तैयारी में व्यस्त है। नागरिकों को सिर्फ इतना ही पता है कि उनके देश की विजय हुई है। उनका आशय क्या है? यह भी पता नहीं हैं। सेना की विजय हुई या शासक की या नागरिकों की यह भी पता नहीं है।

किसी के पास पूछने का अवकाश नहीं है। नागरिकों को यह पता नहीं है कि कितने सैनिक गए थे? कितने विजयी वापस आ गए रहे है? यद्ध में मरने वाले सैनिकों की सूची अप्रकशित है।

सिर्फ एक मशक रखने वाला जानता है। वह कह रहा है कि एक बार फिर हम हार गए हैं। गाजे-बाजे के साथ जीत नहीं, हार लौट रही है। उस मशकवाले की घोषणा पर कोई ध्यान नहीं देता है कि इस बार जीत नहीं, हार लौट रही है। उस मशकवाले पर केवल सड़के सींचने की जिम्मेवारी है। इसे सच को दर्ज करने या बोलने की जिम्मेवारी नहीं दी गयी है।

जिन लोगों पर विजय-पराजय की घोषणा करने की जिम्मेवारी है, वे सेना के साथ ही जीतकर लौट रहे हैं। सच यह है कि देश की जनता यद्ध में अंधकार में रहती है। देश में यद्ध विषयक सूचना सही-सही प्रसारित-प्रचारित नहीं की जाती है।

8. (क) ''जन-जन का चेहरा एक'' अपने में एक विशिष्ट एवं व्यापक अर्थ समेटे हुए है। कवि पीड़ित संघर्षशील जनता की एकरूपता तथा समान चिन्तनशीलता का वर्णन कर रहा है। कवि की संवेदना विश्व के तमाम देशों में संघर्षरत जनता के प्रति मुखरित हो गई, जो अपने मानवोचित अधिकारों के लिए कार्यरत है। एशिया, यूरोप, अमेरिका अथवा कोई भी अन्य महादेश या प्रदेश में निवास करने वाला समस्त प्राणियों का शोषण तथा उत्पीड़न के प्रतिकार का स्वरूप एक ऐसा है। उनमें एक अदृश्य एवं अप्रत्यक्ष एकता है।

उनकी भाषा, संस्कृति एवं जीवन-शैली भिन्न हो सकती है, किन्तु सभी के चेहरों में कोई अंतर नहीं दिखता, अर्थात् उनके चेहरे पर हर्ष एवं विषाद, आशा तथा निराशा की प्रतिक्रिया एक जैसा होता है।

कहने का तात्पर्य है कि यह जनता दुनिया के समस्त देशों में संघर्ष कर रही है अथवा इस प्रकार कहा जाए कि विश्व के समस्त देश, प्रान्त तथा नगर सभी स्थान के 'जन-जन' के चेहरे एक समान है। उनकी मुखाकृति में किसी प्रकार की भिन्नता नहीं है। आशय स्पष्ट है, विश्वबंधुत्व एवं उत्पीड़ित जनता जो सतत् संघर्षरत है, उसी की पीड़ा का वर्णन कवि कर रहा है।

अथवा,

प्रस्तुत कविता रघुवीर सहाय के काव्य संग्रह 'आत्महत्या के विरूद्ध' से ली गयी है। यह एक व्यंग्य कविता है। ऐसी व्यंग्य कविता जिसमें हास्य नहीं, आजादी के बाद के सत्ताधारी वर्ग के प्रति रोषपूर्ण तिक्त कटाक्ष है। राष्ट्रोय गान में निहित 'अधिनायक' शब्द को लेकर यह व्यंग्यात्मक कटाक्ष है। स्वाधीनता प्राप्त होने के इतने वर्षों के बाद भी आम आदमी की हालत में कोई बदलाव नहीं आया। कविता में 'हरचरना' इसी आम आदमी का प्रतिनिधि है। वह एक स्कूल जानेवाला बदहाल गरीब लड़का है जो अपनी आर्थिक, सामाजिक हालत के विपरीत औपचारिकतावश सरकारी स्कूल में पढ़ता है। राष्ट्रोय त्योहर के दिन झंडा फहराए जाने के जलसे में वह 'फटा सुथन्ना' पहन वही राष्ट्रगान दुहराता है। जिसमें इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी न जाने किस 'अधिनायक' का गुणगान किया गया है। सत्ताधारी वर्ग बदले हुए जनतांत्रिक संविधान से चलती इस व्यवस्था में भी राजसी ठाठ-बाट वाले भड़कीले

रोब-दाब के साथ इस जलसे में शिरकत कर अपना गुणगान अधिनायक के रूप में करवाए जा रहा है। कविता में निहितार्थ ध्वनि यह है कि मानो इस सत्ताधारी वर्ग की प्रच्छन्न लालसा हो सचमुच अधिनायक अर्थात् तानाशाह बनने की। अतः यही इस कविता की विशेषता है।

(ख)

'शिक्षा' लेख में जे. कृष्णमूर्ति मानते हैं कि शिक्षा मनुष्य का उन्नयन करती है। वह जीवन के सत्य, जीवन जीने के तरीके में मदद करती है। इस संदर्भ को देते हुए वे बताते हैं कि शिक्षक हो या विद्यार्थी उन्हें यह पूछना आवश्यक है नहीं कि वे क्यों शिक्षित हो रहे है, क्योंकि जीवन विलक्षण है। ये पक्षी, ये फूल, ये वैभवशाली वृक्ष, यह आसमान, ये सितारे, ये सरिताएँ ये मत्स्य, इन सबसे हमारा जीवन है। जीवन समुदायों, जातियों आर देशों का पारस्परिक सतत संघर्ष है, जीवन ध्यान है, जीवन धर्म है। जीवन गूढ़ है, जीवन मन की प्रच्छन्न वस्तुएँ हैं- ईर्ष्याएँ, महत्वाकांक्षाएँ, वासनाएँ, भय, सफलताएँ, चिंताएँ आदि। शिक्षा इन सबका अनावरण करती है। शिक्षा का कार्य है कि वह सम्पूर्ण जीवन प्रक्रिया को समझने में हमारी सहायता करे, न कि हमें केवल कुछ व्यवसाय या ऊँची नौकरी के योग्य बनाये। कृष्णमूर्ति कहते हैं कि हमें बचपन से ही ऐसे वातावरण में रहना चाहिए, जहाँ भय का वास न हो, नहीं तो व्यक्ति जीवन भर कुंठित ही रहता है। उसकी महत्त्वाकांक्षाएँ दबकर रह जाती हैं। मधाशक्ति दब जाती हैं। मेधाशक्ति वह होती है जिससे आप भय और सिद्धांतों की अनुपस्थिति में स्वतंत्रता सत्य की, वास्तविकता की खोज कर सकें। पूरा विश्व इस भय से सहमा हुआ है। चूँकि यह दुनिया वकीलों, सिपाहियों और सैनिकों की दुनिया है। यहाँ मनुष्य

किसी-न-किसी के विरोध में खड़ा है। वह किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचने के लिए प्रतिष्ठा, सम्मान, शक्ति व आराम के लिए संघर्ष कर रहा है, अतः निर्विवाद रूप से शिक्षा का कार्य यह है कि वह इस आन्तरिक और बाह्य भय का उच्छेदन करे।

(ख) **अथवा, का उत्तरः-**

ओमप्रकाश वाल्मीकि की उत्कृष्ट रचना 'जूठन' है । इस आत्मकथा ने पाठकों का ध्यान व्यापक रूप से आकृष्ट किया है। प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक में आत्मकथा का एक अंश 'जूठन' शीर्षक से प्रस्तुत है।

प्रस्तुत आत्मकथा के अंश की शुरूआत कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने प्रारंभिक विद्यालय काल से की है। उनके स्कूल में प्रधानाध्यापक कलीराम उनसे पढ़ने के

बदले झाड़ू दिलवाते थे। प्रधानाध्यापक इस तरह से उसका नाम पूछता है जैसे कोई बाघ गरज रहा है। वह सारा दिन उनसे झाड़ू दिलवाता है। दो दिन तक झाड़ू दिलवाने के बाद तीसरे दिन उसके पिता देख लते हैं। लड़का फफक-फफक कर रोने लगता है। लेखक के पिता शिक्षक पर क्रोधित होते हैं।

लेखक के बचपन में उनके परिवार की आर्थिक स्थिति भी बहुत खराब रहती है। उनकी माँ, बहनें, भाई एवं भाभी लगभग दस आदमियों के घर में तथा मवेशियों वाले घर से उस 25 सेर अनाज साल में एक बार मिलता है। इसके अतिरिक्त दोपहर के भोजन में उन्हें जूठन दी जाती है।

समाज की वर्ण व्यवस्था एवं मनुष्य के द्वारा मनुष्य पर किये शोषण का ही परिणाम है कि एक ओर व्यक्ति के पास धन की कोई कमी नहीं, तो दूसरे तरफ हजारों-हजार लोगों को दो जून की रोटी नहीं मिलती है। भोजन की कमी और भूख की ज्वाला को शांत करने के लिए जूठन भी चाटनी पड़ती है। लेखक पर इस बात का बहुत गहरा असर होता है । उसकी भाभी द्वारा कहा गया कथन कि ''इनसे ये न कराओ- भूखे रह लेंगे, इन्हें इस गंदगी में नहों घसीटो।'' ये शब्द लेखक को उस गंदगी से बाहर निकाल लाते है।

---

9. (क)

आकाश	-	पाताल	सम्पन्न	-	विपन्न
अपेक्षा	-	उपेक्षा	निरर्थक	-	सार्थक
आस्था	-	अनास्था	सुबह	-	शाम
दयालु	-	निर्दयी	धर्म	-	अधर्म

(ख) सरोज - सरः + ज

हिमालय - हिम + आलय

पवन - पो + अन

परीक्षा - परि + ईक्षा

नीरस - निः + रस

पुस्तकालय - पुस्तक + आलय

(ग) गंगा – देवनदी, सुरसरि,

कमल – पंकज, जलज,

कपि – बंदर, मर्कट

आम – आम्र, रसाल

प्रेम – अनुराग, प्यार

मानव – मनुष्य, मनुज

(घ) संधि – दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को संधि कहते है।

जैसे– सु + अल्प = स्वल्प

समास – दो या दो से अधिक पद जब अपने बीच के विभक्ति-चिन्हों को छोड़कर एक पद हो जाते हैं तब समास होता है।

जैसे– राजपुरुष (राजा का पुत्र)

मर्यादापुरुषोत्तम (मर्यादा से युक्त पुरुषों में उत्तम)

(ड़) (i) मितभाषी

(ii) पेय

(iii) सुग्रीव

(iv) चन्द्रशेखर

(v) मनोहर

******

हिन्दी (सेट-4)

समय- 3 घंटे 15 मिनट पूर्णांक-100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।
3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

1. संक्षिप्त पत्र लिखें । 6

अपने मित्र को एक पत्र लिखिए जिसमें वर्तमान बिहार के विकास की दशा और दिशा का वर्णन कीजिए ।

अथवा

शिक्षण शुल्क माफ करने के लिए प्रधानाचार्य को एक आवेदन पत्र लिखिए ।

2. संक्षेपण करें : 4

राष्ट्रभाषा एक चीज है और राजभाषा दूसरी चीज। यह आवश्यक नहीं कि राजभाषा ही राष्ट्रभाषा हो सकती है, पर सदा ऐसा होता नहीं। कभी-कभी राजभाषा राष्ट्रभाषा नहीं बन पाती है। कभी अंग्रेजी हमारी राजभाषा थी। आज भी पूर्ण रूप से उसका बहिष्कार नहीं हो पाया है, पर यह हमें सीखनी पड़ती थी। आवश्यकतावश हम अंग्रेजी सीखते तो जरूर थे । पर वह हमारे जीवन की भाषा न बन सकी। हमारे मस्तिष्क और हमारे हृदय में न उतर सकी। राष्ट्रभाषा सिर्फ कचहरी और स्कूलों की भाषा ही नहीं, यह खेत आर खलिहान की भी भाषा है।

3. I) सही जोड़े का मिलान करे 1x5=5

(क) जगदीशचन्द्र माथुर	(i) जूठन
(ख) प्रगीत और समाज	(ii) नामवर सिंह
(ग) हेडमास्टर कलीराम	(iii) ओ सदानीरा
(घ) चिर विषाद विलीन मन की	(iv) तुलसीदास
(ड़) कवितावली	(v) जयशंकर प्रसाद

II) निम्नलिखित प्रश्नों के बहुवैकल्पिक उत्तरों में से सही उत्तर चुने- 1x5=5

(i) संपूर्ण क्रांति का आह्वान किसने किया था ?

(क) बालगंगाधर तिलक (ख) सुभाषचंद्र बोस

(ग) जयप्रकाश नारायण (घ) महात्मा गाँधी

(ii) 'गाँव का घर' शीर्षक कविता के रचयिता कौन हैं?

(क) ज्ञानेन्द्रपति (ख) मुक्तिबोध

(ग) रघुवीर सहाय (घ) अशोक वाजपेयी

(iii) 'प्यारे नन्हे बेटे को' शीर्षक कविता के कवि बताइए।

(क) हेनरी लोपेज (ख) अंतोन चेखव

(ग) सआदत मंटो (घ) विनोद कुमार शुल्क

(iv) 'छप्पय' शीर्षक पाठ के रचयिता हैं।

(क) सूरदास (ख) तुलसी

(ग) भूषण (घ) नाभादास

(v) जयशंकर प्रसाद किस वाद के कवि थे :-

(क) छायावाद (ख) पृथक्तावाद

(ग) रहस्यवाद (घ) हालावाद

III) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें : 1x5=5

(क) जिस पुरुष में नारीत्व नहीं ..... है। (अपूर्ण/पूर्ण)

(ख) स्लेट पर या लाल खड़िया ..... मल दी हो किसी ने । (चाक/अबीर)

(ग) आज दिशाएँ भी हँसती हैं, है उल्लास ..... पर छाया । (विश्व/अविश्व)

(घ) जयशंकर प्रसाद का जन्म..... में हुआ था। (काशी/ वाराणसी)

(ड़) बाढ़ आती थी पर इतनी ..... नहीं । (प्रचंड/प्रखंड)

4. किसी एक विषय पर निबंध लिखे । 1X10=10

(क) स्वास्थ्य ही धन है।

(ख) मेरी माँ ।

(ग) अनुशासन का महत्त्व ।

(घ) चुनाव और आज की राजनीति ।

(ड़) भारतीय किसान ।

5. सप्रसंग व्याख्या करें : 2X4=8

(क) बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही ।

अथवा

''वैसे, धीरे-धीरे मैंने अनुभवों से यह जान लिया था कि आवाज ही ऐसे मौके पर मेरा सबसे बड़ा अस्त्र है, जिससे मै तिरिछ से बच सकता था।''

अथवा

''लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली,
कहाँ लौं बखान करौं तेरी करवाल को।''

''आशामयी लाल-लाल किरणों से अंधकार,
चीरता-सा मित्र का स्वर्ग एक,
जन-जन का मित्र एक ।''

6. (क) किन्हीं पाँच के संधि-विच्छेद करें : 1X5=5

संसार, निरर्थक, तपोवन, संतोष, शंकर, सावधान, निराकार, सम्मान

(ख) किन्हीं पाँच के विशेषण बनायें । 1X5=5

वन, गर्व, धूम, आदि, ग्राम, घर, पड़ोस, नगर ।

(ग) किन्हीं पाँच शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखे : 1X5=5

आशा, संन्यासी, राग, सभ्य, युद्ध, सम्पन्न, न्यून

(घ) सर्वनाम के भेदों का संक्षिप्त परिचय दें । 1X5=5

(ड़) लिंग-निर्णय करते हुए किंन्ही पाँच शब्दों के वाक्य बनाइए- 1X5=5

सर्दी, लू, आँख, आँसू, भोर, सड़क, हवा, वृक्ष

7. निम्नलिखित लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दे : 6X2=12

(क) सूरदास की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालें ।

(ख) हरचरना कौन है ? उसकी क्या पहचान है ?

(ग) चंपारण की भूमि ने किसको-किसको आश्रय दिया ?

(घ) 'पहले तो रात-रात भर नींद नहीं आती थी।' मालती का यह कथन किस प्रसंग में है ?

(ड़) सूबेदार हजारा सिंह को जर्मन लपटन को देखकर क्यों शंका नहीं हुई ?

(च) वृक्षों के संबंध में माथुरजी की क्या धारणा है ?

8. निम्नलिखित दो दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर दें - 2X5=10

(क) 'धरती का क्षण' से क्या आशय है ?

अथवा

'बातचीत' पाठ का सारांश लिखे ।

(ख) ''उषा'' का सारांश लिखे ।

अथवा

पाठ्यपुस्तक में वर्णित दूसरे पद में तुलसी ने अपना परिचय किस तरह दिया है ?

9. भक्तिकालीन साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियों का संक्षिप्त वर्णन करें । $1X_{10}=10$

अथवा

हिंदी 'शब्दचित्र' या 'रेखाचित्र' के विकास का संक्षिप्त परिचय दें ।

—

उत्तर

1. प्रिय मित्र अविराज, पटना

नमस्ते, 15.12.2016

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा करता हूँ, तुम भी सकुशल होगे। तुमने अपने पत्र में वर्त्तमान बिहार की प्रगति एवं किसान की अद्यतन स्थिति जानने की उत्सुकता प्रकट की है। वर्त्तमान समय में बिहार का तीव्रतर विकास हो रहा है। कृषि उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, विद्युत उत्पादन, नए कल कारखानों की स्थापना इत्यादि सभी क्षेत्रों में अप्रत्याशित उन्नति एवं विस्तार हुआ है। यहाँ भय का माहौल खत्म हो गया है। बिजली 24 घंटे मिल रही है। हमें लगता है कि अब हमारा बिहार उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। तुम भी अपने उत्तराखंड की दशा और दिशा के बारे में बतलाना। बाकी सब ठीक है।

तुम्हारा मित्र

सुशील

अथवा

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय

रा०कृ० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

मसौढ़ी, पालीगंज, पटना (बिहार)

विषय : शिक्षण शुल्क माफ करने हेतु ।

महाशय,

सविनय निवेदनपूर्वक कहना है कि मैं बारहवीं कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मैं एक निर्धन परिवार से संबंध रखता हूँ। मेरे पिताजी इतना कम पैसा कमाते हैं कि किसी तरह हमारे घर का खर्चा चल पाता है। वे हमारी पढ़ाई-लिखाई का बोझ नहीं उठा सकते ।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरा शिक्षण शुल्क माफ करने की कृपा करें, जिसके लिए मैं आपका जीवन भर आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

धन्यवाद सन्नी कुमार

दिनांक 20.12.2016 मसौढ़ी, पालीगंज

2. शीर्षक - राष्ट्रभाषा बनाम राजभाषा

राष्ट्रभाषा और राजभाषा में बड़ा अन्तर है। एक का संबंध जन-चेतना से जुड़ा है और दूसरे का कार्यालयों के कामकाज से । इसीलिए अंग्रेजी हमारी राष्ट्रभाषा बनने में पूर्णतः असमर्थ रह गयी ।

3. I)

(क) - (iii)

(ख) - (ii)

(ग) - (i)

(घ) - (v)

(ड़) - (iv)

II) (i) - (ग)

(ii) - (क)

(iii) - (घ)

(iv) - (घ)

(v) - (क)

III) (क) - अपूर्ण

(ख) - चाक

(ग) - विश्व

(घ) - वाराणसी

(ड़) - प्रचंड

4. **स्वास्थ्य ही धन है**

(i) अर्थ (ii) स्वास्थ्य ही धन है (iii) स्वास्थ्य की रक्षा

(i) मनुष्य स्वस्थ तब कहलाता है जब उसे कोई शारीरिक दुःख या रोग नहीं रहता। जब मनुष्य की वृद्धि ठीक रहती है और उसे काफी बल एवं साहस रहता है तब वह स्वस्थ कहलाता है।

(ii)स्वास्थ्य जीवन की सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है। यह सबसे बहुमूल्य खजाने से भी अधिक कीमतो है। यह ऐसा इसलिए है क्योंकि स्वास्थ्य के बिना जीवन बोझ हो जाता है। किसी व्यक्ति

को काफी धन, रहने के लिए महल के समान घर, सेवा करने के लिए नौकर-चाकर एवं सुंदर-सा भोजन और विलासतापूर्ण जिन्दगी हो सकते है। परन्तु अगर उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं हो तो इन चीजों से उसे शायद ही आनंद मिलेगा। अस्वस्थ व्यक्ति के लिए जीवन में कोई आनंद नहीं है। वह बराबर उदास रहता है। प्रकृति की किसी भी वस्तु में उसके लिए कोई आनंद नहीं रहता। इसलिए यह ठीक ही कहा गया है कि 'स्वास्थ्य ही धन है।'

(iii) स्वास्थ्य जैसे मूल्यवान वस्तु की रक्षा करना मनुष्य का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है।

स्वस्थ रहने के लिए लोगों को स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना चाहिए। उन्हें प्रात:काल उठना चाहिए। उन्हें अपने दाँतों को नित्य साफ करना चाहिए और यथासंभव शुद्ध जल में स्नान करना चाहिए। प्रात:काल का टहलना भी बड़ा स्वास्थ्यवद्धक है। अत: नियमित रूप से टहलना चाहिए और अपने वस्त्र, बिछावन आदि को साफ-सुथरा रखना चाहिए। उन्हें अपने घरों को साफ-सुथरा रखना चाहिए। घर को पूर्ण रूप से हवादार होना चाहिए। भोजन के संबंध में अधिक-से-अधिक सावधानी आवश्यक है। लोगों को शुद्ध और साधारण भोजन करना चाहिए । उन्हें ताजा फल और सब्जी अधिक एवं मसाला कम खाना चाहिए। शुद्ध दूध अधिक स्वास्थ्यवद्धक भोजन है और इसका सदा व्यवहार करना चाहिए। प्रतिदिन कुछ शारीरिक व्यायाम भी करना आवश्यक है। दिन-भर के कठिन परिश्रम के बाद लोगों को काफी आराम करना चाहिए। ये ही कुछ नियम है, जो स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने में सहायता प्रदान करते हैं और इनका पालन सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

--

मेरी माँ

(i) भूमिका (ii) वर्णन (iii) उसका दैनिक जीवन (iv) उपसंहार

(i) माता प्रेम, दया और बलिदान का प्रतीक होती है। वह बराबर अपने बच्चों से बहुत प्रेम करती है। वह बच्चों के लिए भी त्याग कर सकती है। जब मैं अपनी माँ के बारे में सोचता हूँ तो मैं महसूस करता हूँ कि मुझे एक आदर्श माँ है।

(ii) मेरी माँ एक धार्मिक महिला है। उसे बहुत शिक्षा नहीं मिली है। लेकिन, उसे सांसारिक बातों का बहुत बड़ा अनुभव है। वह घर के कामों में बहुत रूचि लेती है। वह हमलोगों से बहुत

प्रेम करती है। मुझे एक भाई और एक बहन है। वह हम सबों को एक तरह से प्यार करती है। वह बराबर हमारे आराम का ख्याल करती है। वह अपने आराम की परवाह नहीं करती। यदि घर में कोई व्यक्ति बीमार पड़ जाता है तो वह उसकी दिन-रात सेवा करती है। वह भोजन करना भी भूल जाती है और रात भर जगी रहती है।

मेरी माँ एक दयालु और उदार महिला है। वह बराबर गरीब लोगों की सहायता करती है। उसे भिखारियों को भीख देने में आनंद आता ह। वह धार्मिक महिला है। वह प्रतिदिन मंदिर जाती है। वह पर्व के दिनों को उपवास करती है।

वह हमारे चरित्र-निर्माण पर बहुत ध्यान देती है। वह चाहती है कि हम भविष्य में आदर्श नागरिक बनें। शाम में वह हमलोगों को शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाती हैं और बताती हैं कि हम अपना भविष्य उज्जवल कैसे बना सकते हैं।

(iii) मेरी माँ को सुबह से रात तक कठिन परिश्रम करना पड़ता है। वह 5 बजे सुबह उठ जाती है। हमलोगों के उठने के पहिले ही वह हमारे लिए नाश्ता और चाय तैयार कर लेती है। तब वह खाना बनाती है। जब वह मंदिर से लौटकर आती ह तो दोपहर का भोजन करती है। भोजन करने के बाद वह घर के काम करती है। शाम में वह फिर रसोई-घर में जाती है। हमलोगों को खिलाने के बाद वह मनोरंजक कहानियाँ सुनाती हैं।

(iv) मुझे अपनी माँ पर गर्व है। उसे मुझसे बहुत उम्मीद है। मेरी इच्छा है कि मैं उसका मधुर सपना पूरा कर दूँ ।

5.क) प्रस्तुत पंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक 'दिगन्त' में संकलित प्रसिद्ध कहानीकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा रचित कहानी 'उसने कहा था' से उद्धत है। इसमें लेखक घोड़े के उदाहरण के माध्यम से सैनिक के जीवन में युद्ध की महत्ता को समझा रहा है।

घोड़े को यदि बहुत दिनों तक दौड़ने अथवा बोझा आदि उठाने के काम में नहीं लगाया जाता तो वह फिर उन कामों को बड़ी कठिनाई से करता है। वह अपनी हठधर्मिता दिखाने लगता है। घोड़ा अपने कार्यो को भलीभाँति करता रहे और उनमें अपनी हठधर्मिता न दिखाये, इसके लिए यह आवश्यक है कि उसे निरन्तर फेरा जाऐ अर्थात् उसके कार्यो का अभ्यास उसे निरन्तर कराया जाये। अन्यथा वह बिगड़ जाता है अर्थात् वह हठधर्मी अथवा निकम्मा हो जाता है। ठीक उसी प्रकार

सैनिक को यदि युद्ध का अभ्यास न कराया जाये तो वह घोड की भाँति अपने कार्य अर्थात युद्ध से विमुख हो जाता है और यद्ध से विमुख हुआ सैनिक आवश्यकता पड़ने पर युद्ध में पीठ दिखाकर भाग खड़ा होता है। अथवा, युद्ध में जाने से बचने के लिए अनेक बहाने ढूँढता है। यदि विवशतावश वह युद्ध में चला भी जाये तो उसमें युद्ध क प्रति कोई उत्साह अथवा जोश नहीं होता और उसे युद्ध में पराजय ही हाथ मिलती है। इसलिए ठीक ही कहा गया है कि 'बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही ।'

अथवा

प्रस्तुत व्यायेय वाक्य हमारी पाठ्यपुस्तक में संगृहीत 'तिरिछ' शीर्षक कहानी से लिया गया ह। इसके कहानीकार है उदय प्रकाश ।

कहानीकार के दु:स्वप्न का भयानक और खतरनाक पात्र होता था तिरिछ । तिरिछ प्राय: कहानीकार को सपने में आता था जिससे कहानीकार बुरी तरह त्रस्त हो जाया करता था। वह जहाँ भी जाता है, तिरिछ वही मौजूद हो जाता है और उसके शरीर में अपना जहर डालकर उसे मार डालने की कोशिश करता है। कहानीकार इस डर से बेतहाशा भागता जाता और तिरिछ खदेड़ता जाता है। कहानीकार सपने में अच्छी तरह जानता था कि वह सपना है, फिर भी वह तिरिछ से बच-भागकर किसी सुरक्षित स्थान पर जाने का प्रयास करता था । पर, वह अपने प्रयास में सफल नहीं होता था। डर के मारे जब वह दु:स्वप्न से छुटकारा पा लेता था। ऐसा दु:स्वप्न वह बराबर देखता था। उसने अपने अनुभवों से जान लिया था कि चिल्लाने या आवाज लगाने के अस्त्र से ही वैसे दु:स्वप्न से छुटकारा पाया जा सकता है। कहानीकार भय या आतंक की चरम अवस्था में इस अस्त्र का उपयोग करता था और हर बार उसे मृत्यु के मुँह में जाने से छुटकारा मिल जाता था।

ख) प्रस्तुत व्याख्यामूलक पद्य-पंक्तियाँ कविवर भूषण द्वारा रचित 'कवित्त' शीर्षक पाठ से अवतरित है। इन पंक्तियों में छत्रसाल की वीरता, धीरता तथा पौरुष का वर्णन किया गया है।

इन पंक्तियों में कविवर भूषण ने छत्रसाल के सर्वगुण सम्पन्न विशाल व्यक्तित्व की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। भूषण कहते हैं कि हे बलिष्ठ और विशाल भुजावाले महाराज छत्रसाल! मैं आपकी तलवार का गुणगान कहाँ तक करूँ? आपकी तेज-धारदार तलवार युद्ध में योद्धाओं के कटक-जाल को काट-काटकर रणचंडी की भाँति किलक-किलक कर काल को भी अपना ग्रास बना लेती है।

अथवा

प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध मार्क्सवादी कवि गजानन माधव मुक्तिबोध है।

कवि ने 'लाल लाल किरणों' का प्रयोग समाजवाद के अर्थ में किया है। आज की दुनिया में आर्थिक विषमता और शोषण का अंधकार छाया हुआ है। कवि आशान्वित है कि समाजवाद के प्रसार से ही वह अंधकार दूर कर सकेगा। समाजवाद रूपी तीव्र आलोक ही विश्व में फले आर्थिक वैषम्य और शोषण तथा अन्याय के अंधकार को काटने में समर्थ है। कवि आशा करता है कि इस अंधकार के समाप्त होते ही सर्वत्र स्वर्गिक शांति विराजमान हो जाएगी। वर्ग-संघर्ष समाप्त हो जाएगा और सर्वहारा वर्ग का राज्य विश्वव्यापी अन्याय और शोषण के अंधकार को मिटाकर नये समाज की रचना कर सकता है। जिसमें सब समान होगें; सबको समान अधिकार होंगे और सब सुखमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे ।

6. (क) किन्हीं पाँच के संधि-विच्छेद करे :

संसार	- सम् + सार	शंकर	- शम् + कर
निरर्थक-	नि: + अर्थक	सावधान	- स + अवधान
तपोवन-	तप: + वन	निराकार	- नि: + आकार
संतोष	- सम् + तोष	सम्मान	- सम् + मान

(ख)
वन - वन्य
गर्व - गर्वीला
पड़ोस - पड़ोस
धूम - धूमिल
आदि - आदिम
नगर - नागरिक
ग्राम - ग्रामीण
घर - घरेलू

ग) आशा- निराशा

संन्यासी - गृहस्थ

राग - विराग

सभ्य - असभ्य

युद्ध - शांति

सम्पन्न- विपन्न

न्यून -अधिक

(घ) सर्वनाम के निम्नलिखित प्रमुख भेद होते है :-

1. पुरुषवाचक सर्वनाम -

वक्ता, श्रोता, तथा अन्य व्यक्ति के लिए जो शब्द प्रयुक्त होते है। उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम-

जिन सर्वनाम शब्दों में किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु का ज्ञान होता है; उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहा जाता है।

जैसे- यह, वह, यही, वही, आदि ।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम-

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी वस्तु अथवा व्यक्ति आदि का कोई निश्चय न होता हो, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- कोई, कुछ, किसी आदि ।

4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम -

जो सर्वनाम शब्द किसी वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों का संबंध उसी के उपवाक्य से जोड़ते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहा जाता है।

जैसे- जो-सो, जैसा-वैसा आदि ।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम-

जो सर्वनाम शब्द प्रश्न का बोध कराते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहा जाता है।

जैसे- कब, कहाँ, किसने आदि ।

6. निजवाचक सर्वनाम-

जो सर्वनाम शब्द निजत्व का ज्ञान कराते हैं, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहा जाता है।

जैसे- अपना, अपने आदि ।

(ड़)

(1) सर्दी- (स्त्री.) - सर्दी आ गई ।

(2) लू- (स्त्री.) लू चल रही है।

(3) आँख- (स्त्री.) उनकी आँखें गीली हो गईं।

(4) आँसू- (पु.) आँसू निकल पड़े ।

(5) भार - (पु.) भोर हो गया।

(6) सड़क (स्त्री.)- सड़क चौड़ी है।

(7) हवा- (स्त्री.)- हवा चल रही है।

(8) वृक्ष - (पु.) - वृक्ष हरे-भरे हैं।

7. (क) ब्रजभाषा अपनी कोमलता, लालित्य और माणुर्य के कारण अत्यधिक लोकप्रिय होकर अनेक सदियों तक हिन्दी क्षेत्र की प्रमुख काव्य भाषा बनी रही। कृष्ण और उनकी लीलाओं की जातीय स्मृति सँजोये ब्रजभाषा ब्रज की गो चारण की प्रधान संस्कृति का संबल पाकर फैल चली। उसने अपनी गीत संगीतमय प्रकृति और अभिरूचियों द्वारा ब्रज क्षेत्र से बाहर तक व्यापकता अर्जित की। सूरदास जी इसी ब्रज भाषा के महान कवि है।

(ख) 'हरचरना' आम आदमी का प्रतिनिधि है। आम आदमी अभावों में जीता है और महाबली नेताओं का गुणगान किया करता है। 'हरचरना' जो कभी 'हरिचरण' था, ढीला-ढाला पाजामा पहने राष्ट्रोय त्योहार के दिन झंडा फहराए जाने के जलसे में सम्मिलित होता है और इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी 'अधिनायक का गुणगान करता है- जन-गण-मन अधिनायक जय

हे, भारत भाग्य-विधाता ।' 'फटे सुथन्ने' में अपनी स्थिति से बेखबर 'अधिनायक' का गुण गाता हुआ हरचरना आसानी से पहचाना जा सकता है।

(ग) चंपारण की भूमि पर आनेवालों का ताँता बँधा ही रहा । यहाँ बारहवीं सदी में सुदूर दक्षिण से कर्णाटवंशी आए, मुसलमान आक्रमणकारी आए, आजीविका की खोज में आदिवासी और हरिजन मजदूर आए यहाँ की उर्वर भूमि से धन प्राप्त करने के अभिलाषी पछाँही जमींदार और गोरे साहब आए। यहाँ की भूमि यानि चंपारण की धरती ने इन सबको आश्रय दिया। पूर्वी बंगाल से आए शरणार्थियों को भी यहाँ की भूमि ने शरण दी।

(घ) इस पहाड़ी क्षेत्र में मालती को पति की नौकरी पर आए हुए महज पन्द्रह दिन हुए हैं। इतने ही दिनों में उसने गैंग्रीन से मरनेवाले अनेक रोगियों को देखा। पहले जब उसे किसी के मरने की खबर मिलती थी तब वह विचलित हो जाती थी, उसे रात-रात भर नींद नहीं आती थी, पर आज वह इतनी अभ्यस्त हो गई है कि किसी के मरने की खबर से उस पर कोई प्रतिक्रिया ही नहीं होती ।

(घ) सूबेदार हजारा सिंह को खंदक के सामने जर्मन लपटन को देखकर कोई शंका नहीं हुइ। उसने हिंदुस्तानी रेजिमेंट के लपटन की वर्दी पहन रखी थी, अत: सूबेदार हजारा सिंह उसे पहचान नहीं सका। अंधेरा होने से वह जर्मन लपटन को ठीक से देख नहीं सका। जर्मन लपटन सीखी हुर्द उर्दू बोल रहा था, अत: भाषा के आधार पर भी सूबेदार को कोई शंका नहीं हुइ। हिन्दुस्तानी लपटन भी उर्दू बोलते थे।

(च) माथुर जी वृक्षों के संबंध में अत्यंत उदार तथा पवित्र धारणा रखते हैं। उनके अनुसार वृक्ष प्रकृति देवी और वनश्री की प्रतिमाएँ हैं। इन्हें काटना या नष्ट करना उनके प्रति अपनी अश्रद्धा प्रकट करना ही होगा। अत: वे उनकी रक्षा करन पर बल देते हैं।

8. (क) मलयज द्वारा रचित डायरी-'हँसते हुए मेरा अकेलापन' डायरी के अंश हैं। डायरी में शब्द और अर्थ की दूरी को किसी माप के आधार पर निर्धारित करना अत्यंत दुष्कर कार्य है। इस स्थिति में शब्द अर्थ में और अर्थ शब्द में ढलते चले जाते हैं। वाक् आर अर्थ में एक प्रकार का द्वंद्व होता है। शब्द अर्थ को अपने में समेटना चाहते हैं और अर्थ बार-बार शब्दों की अभिव्यंजना क्षमता के घेरे को तोड़कर छिटक जाने का प्रयास करते है। कभी ये एक-दूसरे

से संपृक्त हो जाते हैं और कभी मुक्त हो जाते हैं। जिस समय शब्द और अर्थ पारस्परिक जुड़ाव का त्याग करते है उस समय एक मुक्त आकाश का निर्माण होता है जिसमें रचना बिजली के फूल की तरह खिल उठती हैं। अर्थात् वहाँ कल्पनाओं का मुक्त सौंदर्य पैदा होता है। पर जब शब्द और अर्थ एक-दूसरे के साथ चलते हैं तब वहाँ धरती का क्षण निर्मित होता है। इस स्थिति में जीवन का यथार्थ व्यक्त होता है। यही यथार्थ अभिव्यक्ति किसी भी रचना की मौलिकता होती है। यथार्थ को अभिव्यक्त करनेवाली रचना धरती की रचना होती है। रचना में धरती का होना रचना को पूर्णरूप से विकसित होने का अवसर देता है। धरती ही, यथार्थ और वास्तविकता ही, किसी भी रचना के प्रस्फुटन के आदि स्रोत हैं। केवल कल्पनाओं पर आधारित रचना कालजयी नहीं होती। कालजयी रचना धरती से जुड़ी होती है।

अथवा

बातचीत

बालकृष्ण भट्ट 'बातचीत' निबंध के माध्यम से मनुष्य से ईश्वर द्वारा दी गयी अनमोल वस्तु वाक्शक्ति का सही प्रयोग करने की प्रेरणा देते हैं। वे बताते हैं कि यदि वाक्शक्ति मनुष्य में न होती तो हम नहीं जानते कि इस गूंगी सृष्टि का क्या हाल होता? सबलोग लुंज-मुंज से एक कोने में बैठा दिये गये होते । वे बातचीत के विभिन्न तरीके भी बताते हैं, यथा घरेलू बातचीत मन रमाने के ढंग हैं। वे बातचीत का महत्व बताते हैं कि जैसे आदमी की अपनी जिन्दगी मजेदार बनाने के लिए खाने, पीने, चलने-फिरने आदि की जरूरत होती है, उसी तरह बातचीत की भी अत्यंत आवश्यकता होती है। जो कुछ मवाद या धुआँ हृदय में जमा रहता है, वह बातचीत के माध्यम से भाप बनकर निकल पड़ता है। इससे मन परम आनन्द में मग्न हो जाता है। बातचीत का भी एक खास तरह का मजा होता है। यही नहीं, वे बतलाते हैं कि मनुष्य जब तक बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता है। बेन जानसन का कहना है कि बोलन से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार हो जाता है। यूरोप के लोगों में बातचीत का हुनर है, जिसे 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' कहते हैं। इस प्रसंग में ऐसे चतुराई से प्रसंग छोड़े जाते हैं कि उन्हें सुनकर अत्यंत सुख मिलता है। हिन्दी में इसका नाम 'सुहृद गोष्ठी' है। बालकृष्ण भट्ट 'बातचीत' का उत्तम तरीका यही मानते हैं

कि हम वह शक्ति पैदा करें कि अपने आप बात कर लिया करें। बातचीत में भाव अर्थपूर्ण एवं स्पष्ट होना चाहिए ।

ख) **<u>उषा</u>**

''उषा'' कविता सूर्योदय के ठीक पहले की पल-पल परिवर्तित प्रकृति का शब्द-चित्र है। शमशेर बहादुर सिंह ने बिंबो के द्वारा उषा का चित्रण प्रस्तुत किया है। कवि ने एक प्रभाववादी चित्रकार की तरह उषाकालीन सौंदर्य का चित्रण किया है। कवि ने 'उषा' के सौंदर्य का वर्णन किया है उसमें 'प्रात और भोर' के सौंदर्य का समन्वय है। कवि के अनुसार सूर्योदय होने के पूर्व उजास के फैलने के अनेक स्तर होते है जो परिवर्तित रंगों के वैविध्य में गतिशील होते हैं।

कवि शमशेर बहादुर सिंह भोर के आसमान का मूक द्रष्टा नहीं है। वह भोर की आसमानी गति को धरती की जीवन भरी हलचल से जोड़ने वाला स्रष्टा भी हैं। इसलिए वह सूर्योदय के साथ एक जीवंत परिवेश की कल्पना करते हैं, जो गाँव की सुबह से जुड़ता- वहाँ सिल है, राख से लीपा हुआ चौका है और है स्लेट की कालिमा पर चॉक से रंग मलते अदृश्य बच्चों के नन्हे हाथ । यह ये ऐसे दिन की शुरूआत है, जहाँ रंग है, गति है, भविष्य की उजास है और है कालिमा को चीरकर आने का एहसास कराती उषा अपनी सुंदरता के साथ ।

अथवा

तुलसी ने इस पद में अपना परिचय एक भिखारी के रूप में दिया है जो उनके दरवाजे पर सबेरे से ही रट लगाये हुए है। वह भिखारी कहता है कि मुझे कुछ नहीं चाहिए एक कौर टुकड़े से मेरा काम चल जायेगा। अर्थात् हे प्रभु! मुझ पर जरा-सी कृपा दृष्टि कीजिये। उसी दृष्टि से मैं पूर्णकाम हो जाऊँगा। यदि आप कहें कि कोई उद्यम क्यों नहीं करता तो इसका कारण है कि इस भयंकर कलियुग में उत्तम उद्यम का दारूण दुर्भिक्ष पड़ गया है, जितने उद्यम और उपाय हैं सभी बुरे हैं। कोई भी निर्विघ्न पूरा नहीं होता । अतः आपसे माँगना ही मैंने उचित समझा है। तुलसी अपनी उद्यमहीनता के लिए अपने आपको दोषी नहीं मानते बल्कि कलिकाल को ही दोषी ठहराते हैं। उसके लिए वे तर्क देते हैं कि मैंने कृपालु संत समाज से पूछा कि कहिए मुझ उद्यमहीन को कोई भी शरण में लेगा परन्तु संतों की ओर से एक ही उत्तर आया कि एक कौसलपति महाराज श्रीरामचन्द्रजी ही शरण में रख सकते है। मैं

जन्म का भूखा गरीब भिखमंगा हूँ। बस अब इस तुलसी को भक्ति रूपी अमृत के समान सुन्दर भोजन ही पेट भर खिला दीजिए।

9. भक्तिकाल का साहित्य किसी क्षणिक भावावेग अथवा इन्द्रियजन्य भावोन्माद की अभिव्यक्ति मात्र नहीं है अपितु यह ठोस तथा उर्वर धरातल की उपज है। इस काल में सगुण और निर्गुण काव्य की धारा प्रवाहित हुई। इस काल में निम्नलिखित सामान्य प्रवृतियां उभरीं :

(i) नाम की महत्ता- निर्गुण तथा सगुण, दोनों प्रकार के भक्त कवियों के नाम की महत्ता स्वीकार की है। ये कीर्तन, भजन आदि सभी में समान रूप से दृष्टिगोचर होते है।

(ii) गुरु महिमा- सगुण और निर्गुण, दोनों प्रकार के भक्त कवियों ने एक स्वर से गुरु की महत्ता प्रतिपादित की है।

(iii) भक्तिभावना की प्रधानता- भक्तिकाल की चारों धाराओं के भक्त कवियों में भक्तिभावना की प्रधानता मिलती है। सबने भक्ति को सर्वोपरि माना है। भक्ति इष्ट में तन्मय होने की सात्विक मनोदशा है। यह मनोदशा सारे भक्त कवियों की रचनाओं में अभिव्यक्त हुई है।

(iv) अहंकार का त्याग- अहं भक्ति मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है। अहं के परित्याग के बिना भक्ति हो ही नहीं सकती। इस सत्य को सारे भक्त कवियों ने स्वीकार किया है।

(v) समन्वय की भावना- भक्तिकाल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता समन्वय की भावना है। यह समन्वय जीवन के प्राय: सभी क्षेत्रों में मिलता है। भक्तिकाल में जो सामाजिक अव्यवस्था फैली हुई थी, उसके विभिन्न सूत्रों का समन्वय करना भक्तिकाल की सामाजिक समन्वय का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

अथवा

इस क्षेत्र में बनारसीदास चतुर्वेदी का स्थान सर्वोपरि है। 'हमारे आराध्य', संस्मरण, रेखाचित्र तथा 'सेतुबंध' उनकी महत्वपूर्ण कृतियाँ है। श्री राम शर्मा ने 'जंगल के जीव' तथा 'प्राणों का सौदा' लिखकर हिंदी रेखाचित्र को संपन्न बनाया। रामवृक्ष बेनीपुरी हिंदी के प्रसिद्ध शब्द चित्रकार माने जाते हैं। इनकी कृतियाँ- 'लालतारा', 'माटी की मूरतें', 'गेहूँ और गुलाब' तथा 'मील के पत्थर' हैं। महादेवी वर्मा ने रेखांचित्र की अभिवृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है। इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं- 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', तथा 'पथ के साथी'। इस क्षेत्र में प्रकाशचंद्र गुप्त (पुरानी स्मृतियाँ), कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर (जिंदगी

मुस्काई), शिवपूजन सहाय ('वे दिन के लोग') तथा हरिवंश राय 'बच्चन' (दस द्वार से सोपान तक, नीड़ का निर्माण फिर, क्या भूलूँ, क्या याद करूँ) उल्लेखनीय है।

सेट–5

हिन्दी { प्रश्न}

समयः 3घंटे 15मिनट **पूर्णांकः100**

परीक्षार्थी के लिए निर्देशः

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

सभी प्रश्नों के उत्तर दें–

1. संक्षिप्त पत्र लिखिए। 6

अपने प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना–पत्र लिखिए, जिसमें कई महीनो से अंग्रेजी की पढ़ाई न होने के कारण उत्पन्न कठिनाई का वर्णन किया गया हो।

अथवा

पासबुक खो जाने की शिकायत बैंक मैनेजर को पत्र लिखकर करें।

2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

(क) नारी सशक्तिकरण (ख) टेलीवीजन

(ग) आतंकवाद (घ) वसंत ऋतु

3. संक्षेपण करें : 4

अनुशासन की आवश्यकता छात्रजीवन के लिए सबसे अधिक है। वे विवेक–संगत श्रृंखला में बँधे रहने की आदत डालें। उनकी क्षमता बिखरकर नष्ट न होने पाए, उनकी साधना के बादल चट्टान और बंजर पर न बरसे, उनकी लालसा कलंक से काले पड़े भौरे की लालसा मात्र न बन जाए– इसके लिए छात्रों को व्यावहारिक जीवन में अनुशासन के नियमों का पालन करना परमावश्यक है। जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन की आवश्यकता पड़ती हैं केवल विद्यालय में नहीं, वरन् परिवार एवं समाज में भी अनुशासन के नियमों का पालन करना चाहिए। उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि पूरी सृष्टि और पूरा ब्रह्माण्ड भी अनुशासन में बँधा है। जीवन में अनुशासन न हो, तो हम आसानी से अराजकता के शिकार हो जाएँऐ।

4. आधुनिक काल की किन्ही पाँच विशेषताओं का परिचय दीजिए। 10

अथवा

कबीरदास या नाभादास का काव्यात्मक परिचय दीजिए।

5. संप्रसग व्याख्या कीजिए। 2×4=8

(क)"कौन–कौन है वह जन–गण–मन अधिनायक वह महाबली"

अथवा

तमचुर खग–रोर सुनहु, बोलत बनराई।

राँभति गो खरिकन में, बछरा हित थाई।।

(ख) और अब घर जाओ तो कह देना कि मुझे जो उसने कहा था वह मैंने कर दिया।

अथवा

व्यक्ति यथार्थ को जीता ही नहीं, उसे रचता भी है।

6.(1) निम्ललिखित प्रश्नों के बहुवैकल्पिक उत्तरों में से सही उत्तर चुनिए: 1×5=5

(1) 'अर्धनारीश्वर' के लेखक बताइए।

(क) मोहन राकेश (ख) सुभद्रा कुमारी चौहान

(ग) रामधारी सिंह दिनकर (घ) नामवर सिंह

(2) 'उसने कहा था' शीर्षक पाठ किस विधा की रचना है?

(क) कहानी (ख) कविता

(ग) गीत (घ) नाटक

(3) पद्मावत के कवि हैं–

(क) गोस्वामी तुलसीदास (ख) नाभादास

(ग) जायसी (घ) सूरदास

(4) 'नामवर सिंह' की रचना का नाम बताइए।

(क) प्रगीत और समाज (ख) जूठन

(ग) हार–जीत (घ) रोज

(5) 'भूषण' की रचना है–

(क) छप्पय (ख) कवित्त

(ग) दोहे (घ) कड़बक

(2) सही जोड़े का मिलान कीजिए : 1×5=5

(1) जूठन	(क) जे. कृष्णमूर्त्ति
(2) रोज	(ख) जयप्रकाश नारायण
(3) संपूर्ण क्रांति	(ग) अज्ञेय
(4) तिरिछ	(घ) ओमप्रकाश वाल्मिकि
(5) शिक्षा	(ड़) उदय प्रकाश

(3) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः 1×5= 5

(क) भूषण एक रीतिमुक्त ..... कवि ही थे। (आचार्य/विचार्य)

(ख) प्रात नभ था बहुत नीला ..... जैसे मोर का नभ। (अशंख/शंख)

(ग) नील जल में या किसी की गौर.....देह जैसे हिल रही हो। (झलमल/झिलमिल)

(घ) खेत रहनेवालों की सूची .....है। (अप्रकाशित है/प्रकाशित है)

(ड़) किसी के पास पूछने का..... नहीं है। (आकाश/अवकाश)

7. निम्नलिखित में से किन्हीं दो दीर्घ उत्तरीर्य प्रश्नों के उत्तर दिजिए। 2×5=10

'जूठन' शीर्षक पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'संपूर्ण क्रांति' शीर्षक पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखिए।

अथवा

'जन–जन' का चेहरा एक' शीर्षक कविता का भावार्थ कीजिए।

8.निम्नलिखित लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर दीजिए। 2×6=12

(क) निलहे गोरों और गाँधीजी से जुड़े प्रसंगों को अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' क्या है?

(ग) गंगा पर पुल बनाने में अंग्रेजों ने दिलचस्पी क्यों नहीं ली?

(घ) जहाँ भय है वहाँ मेधा नहीं हो सकती। क्यों?

(ड़) नारी की पराधीनता कब से आरंभ हुई?

(च) भ्रष्टाचार की जड़ क्या है? क्या आप जेपी से सहमत हैं, इसे दूर करने के लिए क्या सुझाव देंगे?

9.

(क)'पदबंध' किसे कहते है। इनके भेदों को सोदाहरण परिभाषा लिखिए। 5

(ख) किन्हीं पाँच के संधि–विच्छेद बनाइये। 1×5=5

सूर्योदय, हितोपदेश, सदैव, दशानन, सज्जन, जगदीश

(ग) किन्हीं पाँच का पर्यायवाची शब्द लिखिए। 1×5=5

नदी, जल, स्त्री, गणेश, असुर, मेघ

(घ) किन्हीं पाँच का लिंग–निर्णय किजिए। 1×5=5

चाय, दिशा, नाव, गंगा, मोती, नौकर

(ड़) किन्हीं पाँच मुहावरों का वाक्य प्रयोग कर अर्थ स्पष्ट कीजिए। 1×5=5

मुठ्ठी गरम करना,

ठिकाने लगाना,

हाथ पीले करना,

रास्ते का कांटा बनना,

दंग रह जाना

सेट–5

हिन्दी 100 (उत्तर)

(1)

सेवा में,

प्राचार्य

गाँधी इण्टर कॉलेज, नवादा

महाशय,

सविनय निवेदन है कि हम सभी छात्र कक्षा 12वीं में अध्ययन करते हैं। विगत कई महीनों से अंग्रेजी के शिक्षक की अस्वस्थता और अनुपस्थिति के कारण हमलोगों का सिलेबस अपूर्ण है। अंग्रेजी की पढ़ाई बाधित होने से हमलोगों को उक्त भाषा का सम्यक् ज्ञान नहीं हो पाएगा। आज के इस वैज्ञानिक युग में अंग्रेजी का सम्यक् अध्ययन और सम्यक् जानकारी बहुत आवश्यक है।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि अंग्रेजी शिक्षा की वैकल्पिक व्यवस्था कर हमलोगों के बाधित अंग्रेजी शिक्षण की कमी को दूर किया जाय। आपकी इस महती कृपा के लिए हम सभी छात्र सदैव कृतज्ञ रहेंगे।

आपका आज्ञाकारी

छात्रगण, नवादा

अथवा

सेवा में,

प्रबन्धक महोदय,

बैंक ऑफ इंडिया, कंकड़बाग पटना।

विषय– पासबुक खो जाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मेरा इस शाखा में एक बचत बैंक खाता है जिसका खाता सं. 4423100005 है। मेरी उक्त खाते की पासबुक अकस्मात् कहीं खो गई है। अतः आपसे करबद्ध निवेदन है कि मुझे नई पासबुक जारी करके कृतार्थ करें।

धन्यवाद। प्रार्थी

गौरव सिंह

खाता सं. 442310005

2 (क) नारी सशक्तिकरण

इस सृष्टि को निरन्तर चलते रहने हेतु स्रष्टा ने सभी जीवधारियों में नर और मादा बनाए और तदनुरूप शरीर गठन किया। दोनों के परस्पर सहयोग से ही जीवन की गाड़ी सरलता और सुगमता से चलती रहती है। दोनों ही गाड़ी के दो समान ऊंचाई के पहिए हैं– कोई कम या ज्यादा नहीं। दोनों के ही कर्त्तव्य, अधिकार, कार्यक्षेत्र सुनिश्चित हैं और वैसे ही स्वभाव प्रदान किए हैं स्रष्टा ने। नारी कोमल, दयालु, संकोची, सेवाभावी है तो पुरूष कठोर एवं अधिक परिश्रमी है।

भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं परम्पराओं में नारी को पुरूषां से भी ऊँचा स्थान दिया गया ह– 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते पत्र देवता'। नारी देवी है, वह मां भी है, बहिन भी है, और पुत्री भी। पर स्त्री को माता कहा गया है– 'मातृवत् परदारेषु'।

प्राचीन काल में नारी शिक्षित, विदुषी, कर्तव्यपरायण होती थी। ज्ञान विज्ञान, अध्यात्य, लोकाचार किसी भी क्षेत्र में पुरूष से कम नहीं थी।

मध्य काल आते–आते नारी का स्थान पुरूषों की स्वार्थपरता, काम–लोलुपता, आदि के कारण न केवल गिर गया, बल्कि उसके अधिकारों पर कुठाराघात भी होने लगा, उनका कार्यक्षेत्र सीमित हो गया। साहित्यकार भी नारी को दोषों की खान के रूप में देखने लगे।

आधुनिक काल आते–आते जहाँ नारी को पैरों की जूती समझा जाता था, अनेक अत्याचार उन पर होते थे वहाँ अब नारी जागरण, नारी स्वातन्त्रय का बिगुल बज उठा। स्वामी दयानन्द के आर्य समाज ने नारी शिक्षा का मन्त्र फूंका, राजा राममोहन राय ने सती–प्रथा रूकवाई, महात्मा गांधी ने नारी उत्थान का नारा दिया, अनेक

समाजसेवी व्यक्तियों ने पतित अबलाओं, अपहृताओं और वेश्याओं का उद्धार किया। सरकार ने भी संविधान द्वारा नारी को शिक्षा प्राप्त करने, नौकरी करने, आदि के समान अधिकार और अवसर प्रदान किए हैं। महिला सुधार हेतु नारी निकेतन खोल दिए गए हैं। आज की नारी डॉक्टरी, इन्जीनियरिंग, अध्यापन, लिपिकीय कार्य आदि क्षेत्रों में तो काम कर ही रही हैं, पुलिस, रक्षा के क्षेत्र में भी उच्च पदस्थ हैं।

यद्यपि सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाओं एवं समाजसेवी व्यक्तियों द्वारा महिला उत्थान के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं और किए जाते रहेंगे तथापि जब तक समाज जागरूक नहीं होगा और नारियों के प्रति असहिष्णुता का दृष्टिकोण नहीं त्यागा जाएगा तबतक पर्याप्त सफलता नहीं मिलेगी। आज आवश्यकता है कि पुरूष समाज अपने दृष्टिकोण को बदले, नारी को सच्चे हृदय से ऊपर उठाकर समकक्ष लाने का प्रयास करे और उसकी प्रगति में अड़ंगे डालने से बाज आए। तभी वह अपने उच्च महत्वपूर्ण स्थान को पुनः प्राप्त कर सकेंगी।

(ख) टेलिविजन

टेलीविजन बीसवीं सदी के महत्त्वपूर्ण आविष्कारों में एक है। आज यह रेडियो की तरह ही सर्वप्रिय है। टेलीविजन मनोरंजन एवं शिक्षा का बड़ा ही अच्छा एवं स्वस्थ साधन है। टेलीविजन के कारण विश्व संकुचित हो गया है। हमलोग सैकड़ों एवं हजारों किलोमीटर दूर पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों एवं घटनाओं को अपनी आँखों देख सकते है। इस तरह टेलीविजन व्यापक संचार का शक्तिशाली माध्यम है।

भारत में टेलीविजन का प्रचार सितंबर, 1959 में हुआ। टेलीविजन का पहला कार्यक्रम स्कूलों एवं ग्रामीण क्षेत्रों के लिए था। अप्रिल, 1976 में टेलिविजन को ऑल इंडिया रेडिया (आकाशवाणी) से अलग कर दिया गया। टेलीविजन का संगठन दूरदर्शन कहलाया। नवम एशियाई खेल दिल्ली में नवंबर, 1982 में हुआ था। दूरदर्शन ने उस समय कुछ कार्यक्रमों का प्रसारण किया।

टेलीविजन भारत जैसे विकासशील देशों के लिए लाभदायक है। हमलोग कृषि पर ही निर्भर करते है। हमारे यहाँ के किसान शिक्षित नहीं हैं। उन्हें कृषि की वैज्ञानिक विधि की जानकारी नहीं है। टेलीविजन से इस क्षेत्र में सहायता मिल सकती है। इससे किसानों को शिक्षित किया जा सकता है। इस तरह हमारी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

हमारे देश की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। हमलोग छोटे परिवार के लाभ दिखाने के लिए टेलीविजन का प्रयोग कर सकते है। इसके द्वारा सारे देश के लोगों को परिवार नियोजन के संबंध में उचित शिक्षा दी जा सकती है। इसके अतिरिक्त शिक्षा के प्रसार के लिए भी इसका प्रयोग किया जा सकता है।

हमारे टेलीविजन प्रसारण का उद्देश्य राष्ट्रीय समन्वय को प्रोत्साहित करना है। भारतवर्ष एक बहुत बड़ा देश हैं यहाँ भिन्न–भिन्न प्रकार के धर्म, संस्कृति तथा भाषाएँ है। टेलीविजन के द्वारा देश

की सांस्कृतिक एकता स्थापित की जा सकती है। टेलीविजन प्रसारण द्वारा हमलोग अंतरराष्ट्रीय संबंधों का विकास कर सकते है।

टेलीविजन के मुख्य उद्देश्यों में एक उद्देश्य आनंद प्रदान करना भी है। टेलीविजन के प्रसारण के बहुत–से कार्यक्रम हमारे मनोरंजन के लिए ही होते हैं। चित्रहार, सबसे मनोरंजन कार्यक्रमों में एक है। इसमें फिल्म एवं खेल–कूद का भी प्रसारण किया जाता है।

हमारे लिए टेलीविजन बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। इसका दाम भी कम हो गया है। इन दिनों लोग रंगीन टेलीविजन ही अधिक पसंद करते है। आज टेलीविजन का कार्यक्रम स्तरीय हो रहा है।

(ग) आतंकवाद

प्रश्न उठता है कि आतंकवाद है क्या? वस्तुतः आतंकवाद वह विचारधारा है जिसमें देश की मुख्यधारा से अलग रहकर अपनी राजनीतिक इच्छापूर्ति के लिए, तोड़–फोड़, लूट–पाट, हत्या, नरसंहार या आगजनी के कार्य लुक–छिपकर किए जाते हैं ताकि सरकार विकास कार्य न कर पाए और अन्ततः आर्थिक परेशानी एवं कानून और व्यवस्था के मोर्चे पर लगातार असफल होने से थककर आतंकवादियों की बात मान ले।

भारत में आतंकवाद का प्रच्छन्न रूप कश्मीर में दिखाई देता है, जहाँ के कुछ लोग कश्मीर को भारत को अलग करने के लिए आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त हैं। इस समुदाय को पाकिस्तान सरकार की शह है जो इस्लामिक राष्ट्र है और चाहता है कि कश्मीर इस्लामिक राष्ट्र का अंग बन जाए। पाकिस्तान इस कार्य के लिए अपने यहाँ आतंकवादियों को शरण भी। यही कारण है कि आये दिन भारत में नर–संहार होता है, तोड़–फोड़ होती है। वहाँ के आतंकवादियों ने ही विमान–अपहरण किया और लोकसभा परिसर में घुसकर आतंक फैलाने की चेष्टा की। मुंबई के ताज होटल में घुसकर अनेक बेकसूर लोगों की जानें लीं, गई जगह धमाके किए।

आतंकवाद के फैलने का मुख्य कारण है– गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा और सबसे बढ़कर धार्मिक उन्माद। भुखमरी के कारण भोले–भाले युवक–युवतियाँ धन के लोभ में तोड़–फोड़, मार–पीट के लिए तैयार होते हैं तब उन्हें धार्मिक उन्माद की शराब पिलाई जाती है, जिससे वे होश–हवाश खोकर आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं।

भारत सरकार को आतंकवाद रोकने के लिए कठोर कदम उठाने चाहिए। जैसा कि हाल में श्रीलंका सरकार ने किया या इजरायल सरकार करती है। सीमा की नाकेबन्दी करनी चाहिए ताकि आतंकवादी घुस न पाएँ। रोजगार के अवसर बढ़ाने चाहिए और शिक्षा की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए ताकि युवक गुमराह न हों। सबसे बढ़कर ऐसे कानून बनाए जाने चाहिए जिसके तहत आतंकवादियों को जल्द–से–जल्द कठोर दंड दिया जा सके।

जनता को भी सहयोग करना चाहिए और आतंकवादियों के सम्बन्ध में कोई भी सूचना सरकार को तत्काल देनी चाहिए। राजनीतिक दलों को भी अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए ऐसे कार्य न करने चाहिए जिसकी ओट में आतंकवादियों को छूट मिलें। यदि समय रहते शीघ्र कार्रवाई न की गई तो देश की अखंडता के लिए सबसे बड़ा खतरा दिनोदिन बढ़ता जाएगा।

(घ) वसन्त ऋतु

ऋतुएँ तो अनेक हैं लेकिन वसंत की सज–धज निराली है। इसीलिए वह ऋतुओं का राजा, शायरों–कवियों का लाड़ला, धरती का धन है। वस्तुतः इस ऋतु में प्रकृति पूरे निखार पर होती है।

वसन्त ऋतु का प्रारंभ वसंत पंचमी से ही मान लिया गया है, लेकिन चैत और वैशाख ही वसन्त ऋतु के महीने हैं। वसन्त ऋतु का समय समशीतोष्ण जलवायु का होता हैं चिल्ला जाड़ा और शरीर को

झुलसाने वाली गर्मी के बीच वसन्त का समय होता है।

वसन्त के आगमन के साथ ही प्रकृति अपना श्रृंगार करने लगती है। लताएँ मचलने लगती हैं और वृक्ष फूलों–फलों से लद जाते हैं। दक्षिण दिशा से आती मदमाती बयार बहने लगती है। आम की मँजरिये की सुगन्ध वायुमंडल को सुगन्धित कर देती है। मस्त कोयल बागों में कूकने लगती है। सरसों के पीले फूल खिल उठते हैं और उनकी भीनी–भीनी तैलाक्त गन्ध सर्वत्र छा जाती है। तन–मन में मस्ती भर जाती है। हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेज कवियों ने वसंत का मनोरम वर्णन किया है। कालिदास, वर्ड्सवर्थ, पंत, दिनकर का वसंत–वर्णन पढ़कर किसका मन आनंदित नहीं होता?

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी वसन्त ऋतु का महत्त्व बहुत अधिक है। न अधिक जाड़ा पड़ता है, न गर्मी। गुलाबी जाड़ा, गुलाबी धूप। जो मनुष्य आहार–बिहार को संयमित रखता है, उसे वर्ष–भर किसी प्रकार का रोग नहीं होता है। इस ऋतु में शरीर में नये खून का संचार होता हैं वात और पित्त का प्रकोप भी शांत हो जाता है।

सबसे बड़ी बात तो यह होती है कि इस समय फसल खेतों से कटकर खलिहानों में आ जाती है। लोग निश्चित हो जाते हैं। और, यह निश्चितता उन्हें खुशी से भर देती है। लोग ढोल–झाल लेकर बैठ जाते हैं होली के गीत उनके गले से निकलकर हवा में तैरने लगते हैं– होली खेलत नन्दलाल, बिरज में ..... होली खेलत नन्दलाल।

वसंत उमंग, आनन्द, काव्य, संगीत और सौंदर्य की ऋतु है। यह स्नेह और सौदर्य का पाठ पढ़ता है। यही कारण है कि सारी दुनिया में वसन्त की व्याकुलता से प्रतीक्षा होती है।

3. शीर्षकः अनुशासन की महत्ता

छात्रों को व्यावहारिक जीवन में अनुशासन के नियमों का पालन करना परमावश्यक है। हम जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन की श्रृंखला में बँधे रहकर ही अपनी संपूर्ण क्षमता का उपयोग कर सकते हैं और अपनी–अपनी कामनाओं की पूर्ति कर सकते हैं।

(कुछ शब्द संख्या–120; संक्षेपण की शब्द–संख्या–40)

4. आधुनिक काल की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैः–

(क) *जनजीवन का चित्रण–* रीतिकालीन कविता में जनजीवन की उपेक्षा की गई। आधुनिक कालीन काब्य में जनजीवन का चित्रण दृष्टिगत होता है। गद्य एवं पद्य दोनों में यह भाव मुखर हुए हैं। प्रगतिवाद तथा प्रयोगवाद में विशेष रूप से जन–जीवन के चित्रण को काव्य का आधार बनाया गया।

(ख) *यथार्थता–* आधुनिककाल में आदर्श का स्थान यथार्थ ने ले लिया। कवियों ने जीवन की विविध समस्याओं का चित्रण करते हुए निम्न एवं उच्चवर्ग की सच्चाई को प्रकट किया। उच्चवर्ग द्वारा निम्नवर्ग का शोषण करना सीाी को कष्ट देता रहा; अतः सभी कवियों ने शोषक वर्ग की पर्याप्त भर्त्सना की; यथा–

दर्पी हठी निरंकुश निर्भय कलुषित कुत्सित,

गत संस्कृति से गरल, लोक जीवन जिनसे मृत।

(ग*) रूढ़ियों के प्रति विद्रोह–* आधुनिक कवियों ने समाज में फैली रूढ़ियों, अन्धविश्वासों एवं पाखण्डों का तीव्र विरोध किया। इनका मत है कि जो समाज रूढ़ि–रीतियों पर आधारित नहीं होता, जहाँ मानव श्रेणी, वर्ग में विभाजित नहीं होता और जहाँ सामान्य जन का शोषण नहीं होता, वहीं सब प्रकार की सुख–समृद्धि होती है–

रूढ़ि रीतियाँ जहाँ न हों आधारित,

श्रेणी वर्ग में मानव नहीं विभाजित।

धन बल से हो जहाँ न जन श्रम शोषण,

पूरित भव जीवन के निखिल प्रयोजन।

(घ) नवीनता एवं विविधता– आधुनिककाल में नवीनता एवं विविधता दोनों का आग्रह दृष्टिगोचर होता हैं नवीनता के कारण ही आज काव्य में भाव एवं शैली दोनों की दृष्टि से नये–नये प्रयोग हो रहे हैं। साथ ही साहित्य में विविधता भी विद्यमान हैं पद्य के क्षेत्र में महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक काव्य, एकार्थ काव्य, गीतिकाव्य आदि का जन्म हुआ, तो गद्य के क्षेत्र में निबन्ध, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, आलोचना, रिपोर्ताज, संस्मरण, आत्मकथा, डायरी शैली आदि का प्रादुर्भाव परिलक्षित होता है।

(ड़) *स्वच्छन्दता–* आधुनिककाल के गद्य एवं पद्य दोनों में स्वच्छन्दता की भावना विद्यमान हैं पद्य के क्षेत्र में कवियों ने भाव, भाषा एवं शैली में स्वच्छन्दता को स्वीकार किया। छन्दों के बन्धन से मुक्त होकर उन्होंने स्वाभाविक रूप से सभी भावों को स्पष्ट किया। इन कवियों का मत द्रष्टव्य है–

खुले गये छन्द के बन्ध,

अब गीत मुक्त

औ' युग वाणी बहती आयास।

आज गद्य की विविध विधाओं उपन्यास, कहानी नाटक, आलोचना आदि में भी यह भावना दृष्टिगत होती है।

अथवा

कबीरदास (1398–1575) हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ निर्गुण संत कवि थे। पर्यटन से जो भी ज्ञान इन्हें मिला उन्होंने अपनी कविता में अभिव्यक्त किया है। उनका ईश्वर निर्गुण था। उसे ज्ञान एवं प्रेम की आँख से ही देखा जा सकता है।

उनकी लिखी कुछ पंक्तियाँ देखने लायक हैं–

(1) *'हरि मेरा पीव भाई, हरि मेरा पीव।*

हरि बिन रहि न सकै, मोरा जीव।

(2) 'जब मैं था, तब हरि नहीं

अब हरि हैं, मैं नाहिं।

(3) 'पोथी पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का पढ़ै, सौ पंडित होय।।

कबीर दास को हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भाषा का *'डिक्टेटर'* कहा था।

5 (क) कवि रघुवीर सहाय अपनी कविता ' अधिनायक' में प्रस्तुत पंक्ति की रचना कर उस सत्ताधारी वर्ग के जन प्रतिनिधियों की पहचान कराना चाहता है जो रासजी ठाट–बाट में जी रहे हैं। गरीबों पर, आम आदमी पर उनका रोब–दाब है। वे ही अपने को जनता का अधिनायक मानते हैं। वे बाहुबली हैं। लोग उनसे डरे–सहमे रहते हैं। कवि उन्हीं की पहचान उक्त पंक्तियों में कराना चाहता है।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'दिगन्त' में पद 'शीर्षक' से संकलित महाकवि सूरदास द्वारा रचित 'सूरसागर' से उद्धृत हैं। इन पंक्तियाँ में कवि सूरदास ने राजक ुँवर कृष्ण को प्रातः काल नींद से जगाने के लिए प्रातःकालीन प्रकृति का मनोरम वर्णन किया है।कवि सूरदास कहते हैं कि ब्रज के राजकुँवर श्रीकृष्ण को प्रातःका नींद से जगाने के लिए बन्दीजन मंगलगीत गाते हुए कहते हैं कि हे ब्रहराज कुँवर अब जाग जाइये; क्योंकि प्रातःकाल हो गया है। देखों, गुर्गा बोलकर प्रातःकाल होने की सूचना दे रहा है और पेड़–पौधों पर जो पक्षियों का समूह मधुर कोलाहर करने लगा है, उसको सुनकर आनन्द का अनुभव कीजिए। इसी के साथ अपने बाड़े में बँधी गाय अपने बछड़े के पास जाने के लिए रँभाने लगी है।

5 (ख) प्रस्तुत पंक्तियाँ 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी से ली गई है। इसके कथाकार पं.चन्द्रधर शर्मा गुलेरी हैं। इस पंक्ति में उस समय का विम्ब उभर कर आया है, जब लहना सिंह ने वजीरा सिंह और बोधा सिंह की रक्षा स्वयं घायल होकर की थी। उसकी स्थिति अत्यधिक चिन्तनीय है। वह बेहोश होकर अपनी प्रेयससी की विनम्र इच्छा को याद करते हुए वजवीरा सिंह से कहता है अब घर जाओ तो कह देना कि मुझे जो उसने कहा था मैंने पूरा कर दिया।

लहना सिंह के कथन में विशुद्ध प्रेम की बात तुष्ट हो रही है। लहना सिंह सच्चा प्रेमी है। उसे अपनी

प्रेमिका से कोई लाभ नहीं था। मात्र उसे हृदय में प्रेम काअमर दीप जल रहा था। जिसे वह अन्त तक प्रज्जवलित करता रहा । लहना सिंह ने उच्च जीवन सिद्धान्तों के पालन का आदर्श प्रस्तुत किया है। सूबेदारनी ने अपने पुत्र की रक्षा का वचन लहना सिंह से लिया था जिसका पालन लहना सिंह ने अपने प्राण की बाजी लगाकर पूरा किया।

अथवा

(ख) प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'दिगन्त' में संकलित मलयज द्वारा लिखित 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' 'शीर्षक ' डायरी से उद्धृत है। इस पंक्ति में लेखक मलयज ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि व्यक्ति यथार्थ में जीता भी है और यथार्थ को रचता भी है।

लेखक के अनुसार यथार्थ मनुष्य जीवन का एक कटु सत्य है। वास्तविकता से परे मनुष्य का जीवन एकाकी एवं व्यर्थ ही है। इस पंक्ति में लेखक ने संकेत दिया है कि उनके बच्चे उनकी रचना हैं और वे उसका यथार्थ हैं। उनकी चिन्ता भी लेखक का अपना यथार्थ है। लेखक पारिवारिक दायित्व के बन्धन से बँधा है, जबकि उसका परिवार बन्धन एवं चिन्तामुक्त हैं यही किसी व्यक्ति के जीवन का यथार्थ है। इस प्रकार स्पष्ट है कि व्यक्ति की रचना एवं उसके जीवन का यथार्थ दोनों एक–दूसरें के पूरक हैं।

6. (1) 1 –ग

2 – क

3 – ग

4 – क

5 – ख

(2) 1-घ,

2 – ग,

3 – ख,

4 – ङ ,

5 – क

(3).(क) आचार्य, (ख) शंख्य, (ग) झिलमिल, (घ) अप्रकाशित है (ड़) अवकाश

7. (क) " जूठन" शीर्षक आत्मकथा ओमप्रकाश वाल्मीकि की एक उत्कृष्ट रचना है। इस आत्मकथा ने पाठकों का ध्यान व्यापक रूप से आकृष्ट किया है। प्रस्तुत पाठ्य–पुस्तक में आत्मकथा का एक अंश 'जूठन' शीर्षक से प्रस्तुत है।

इस आत्मकथा के अंश की शुरूआत कथाकार ओम प्रकाश वाल्मीकि ने अपने प्रारम्भिक विद्यालय काल से की है। लेखक दलित समाज से आते हैं। इसलिए विद्यालय में हेडमास्टर एवं शिक्षकों का व्यवहार उनके प्रति बड़ा ही कठोर है। विद्यालय के प्रथम दिन ही हेडमास्टर ने उन्हें समूचे विद्यालय प्रागंण में झाड़ू लगाने का आदेश दिया। दूसरे दिन भी यही घटना घटी।

लेखक के बचपन में उनके परिवार की आर्थिक स्थिति भी बहुत खराब है। उनकी माँ, बहेनें,भाई एवं भाभी लगभग दस त्यागियों के घर में तथा मवेशियों के गोशाला में सफाई का कार्य करती हैं। कुल मिलाकर दस मवेशियों वाले घर से उसे 25 सेर अनाज साल में एक बार मिलता है। इसके अतिरिक्त दोपहर के भोजन में उन्हें जूठन दी जाती है।

शादी–व्याह के मौके पर मेहमानों की जूठी पत्तलों में बची पूरियों के टुकड़े टोकरी में इकट्ठा कर घर लाते थे और धूप में सुखा कर बरसात के दिनों में उसे उबालकर नमक–मिर्च डालकर खाते थे। अब लेखक आर्डिनेस फैक्टरी में नौकरी करता है। आज जब लेखक इन सब बातों के बारे में सोचता है तो मन के भीतर काँटे जैसे उगने लगते है।

लेखक का अगला संस्मरण और भी मार्मिक है। लेखक नौवीं कक्षा का छात्र था। घर की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। उन दिनों बैलों के मर जाने पर उसे उठाकर ले जाना, उसका चमड़ा उतारना उसी के परिवार का कार्य था। एक दिन गाँव में एक बैल मर गया। लेखक के घर को खबर दी गई। पिताजी उस दिन घर पर नहीं थे। माँ ने लेखक को अपने चाचा के साथ–साथ जाने को कहा। लेखक अपने चाचा के साथ गया। पहले लेखक के चाचा ने खाल उतारनी शुरू की। चाचा ने दूसरी छुरी लेखक को हाथ में धरा दी। छूरी चलाने का ढंग बताया। उस दिन लेखक के भीतर बहुत कुछ था जो टूट रहा था। जिन बातों से वह उबरना चाहता था, हालात उसे उसी दलदल में घसीट ले जा रहे थे।

उस दिन लेखक पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि धीरे–धीरे किन्तु दृढ़ संकल्प से पढ़ाई में ध्यान लगाता है। हिन्दी में स्नातकोत्तर करने के पश्चात् अनेक सम्मान जैसे डॉ0 अम्बेडकर राष्ट्रीय पुस्कार, परिवेश सम्मान, जयश्री सम्मान, कथाक्रम सम्मान से विभूषित होकर सरकार के ऑर्डिनेंस फैक्ट्री में अधिकारी पद को भी विभूषित करता है।

इस प्रकार लेखक ओमप्रकाश बाल्मीकि ने एक चूहड़(दलित) के घर में जन्म लेकर भी जीवन में सफलता के उच्च सोपान तक पहुँच कर यह सिद्ध कर दिया कि जहाँ चाह है, वहाँ राह है।

अथवा

5 जून, सन् 1974 को पटना के गाँधी मैदान में दिये गये जयप्रकाश नारायण के 'सम्पूर्ण क्रांन्ति' वाले ऐतिहासिक भाषण का एक अंश हमारी पाठयपुस्तक में सम्पूर्ण क्रांन्ति के नाम से संकलित है। यों तो सम्पूर्ण भाषण स्वतन्त्र पुस्तिका के रूप में 'जनमुक्ति' पटना से ही प्रकाशित हो चुका है। इस संकलित अंश से उसकी एक छोटी–सी झलक भर मिलती है, किन्तु लाखों की संख्या में सम्पूर्ण प्रदेश और देश के विविध क्षेत्रों से आये लोगों, विशेषकर

युवा वर्ग के उस ऐतिहासिक जन–सम्मर्द के बीच लोकनायक ने अस्सवस्थ दशा में भी शान्तिपूर्वक बातें कहीं और सम्पूर्ण जनता मंत्रमुग्ध होकर सुनती रही। उनकी बातें सुनकर भाषण के बाद लोगों के हृदय में क्रान्तिकारी विचार धधक उठे और आन्दोलन ने विराट् रूप धारण कर लिया। पटना के गाँधी मैदान में फिर न वैसी भीड़ इकट्ठी हुई और न वैसा कोई प्रेरक भाषण और न पुरअसर जनसंवाद कायम हो सका। वास्तव में जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति का लक्ष्य देश में अराजकता और भ्रष्टाचार के विरूद्ध एक शंखनाद माना जाता है।

(ख) राष्ट्रीय काव्यधारा की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी की विशिष्ट कवयित्री हैं। 'पुत्र–वियोग' शीर्षक कविता में पुत्र के निधन के बाद माँ के हृदय में उठनेवाली शोक भावनाओं को कवयित्री ने अभिव्यक्ति दी है। पुत्र वियोग पर बेनीपुरी जी ने 'गाँधीनामा' गद्य लिखा था। करूणा का भाव पैदा करने में कवयित्री की यह कविता खरी उतरती है।

कविता में अपने बेटे की मौत के बाद शोकाकुल माँ के मन में उठनेवाले अनेक निराशाजनक तथा असंयमित विचार तथा उससे उपजी विषादपूर्ण मनःस्थिति को उद्घाटित किया गया है। कवयित्री अपने बेटे के आकस्मिक तथा अप्रत्याशित निधन से मानसिक तौर पर अशान्त है। वह अपनी विगत समृतियों को याद कर उद्विग्न है। एक माँ के हृदय में उठनेवाले झंझावात की वह स्वयं भुक्तभोगी है। कविता में कवयित्री द्वारा नितांत मनोवैज्ञानिक तथा स्वाभाविक चित्रण किया गया है।

वस्तुतः कवयित्री ने अपने बेटे की मौत से उपने दुःखिया माँ के शोकपुर्ण उद्गारों का स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। ऐसी युक्तियुक्तपूर्ण एवं मार्मिक प्रस्तुति अन्यत्र दुर्लभ है। महादेवी वर्मा की एक मार्मिक कविता इस प्रकार है, जो माँ की ममता को प्रतिबिंबित करती है, "आँचल में है दूध और आँखों में पानी।"

अथवा

गजानन माधव मुक्तिबोध हिन्दी की प्रगतिशील कविता धारा के शीर्षस्थ कवि हैं। वे आलोचक एवं कथाकार भी हैं।

"जन–जन का चेहरा एक" अपने में एक विशिष्ट एवं व्यापक अर्थ समेटे हुए हैं। कवि पीड़ित संघर्षशील जनता की एकरूपता तथा समान चिन्तनशीलता का वर्णन कर रहा है। कवि की संवेदना, विश्व के तमाम देशों में संघर्षरत जनता के प्रति मुखरित हो गई है, जो अपने मानवोचित अधिकारों के लिए कार्यरत हैं। एशिया, यूरोप, अमेरिका अथवा कोई भी अन्य महादेश या प्रदेश में निवास करने वाले समस्त प्राणियों का शोषण तथा उत्पीड़न के प्रतिकार का स्वरूप एक जैसा है। उनमें एक अदृश्य एवं अप्रत्यक्ष एकता है।

उनकी भाषा, संस्कृति एवं जीवन–शैली भिन्न हो सकती है, किन्तु उन सभी के चेहरों में कोई अन्तर नहीं दीखता, अर्थात् उनके चेहरे पर हर्ष एवं विषाद, आशा तथा निराशा की प्रतिक्रिया, एक जैसी होती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि यह जनता दुनिया के समस्त देशों में संघर्ष कर रही है। अथवा इस प्रकार कहा जाए कि विश्व के समस्त देश, प्रान्त तथा नगर–सभी स्थान के "जन–जन" (प्रत्येक व्यक्ति) के चेहरे एक समान हैं। उनकी मुखकृति में किसी प्रकार की भिन्नता नहीं है। आशय स्पष्ट है, विश्ववबंधुत्व एवं उत्पीड़ित जनता जो सतत् संघर्षरत् है,उसी की पीड़ा का वर्णन कवि कर रहा है।

8

(क) नीलहे गोरे चम्पारण के किसानों का शोषण करते थे। गाँधीजी ने वहाँ जाकर शिक्षा का प्रसार किया। वहाँ के लोगों को चरित्रवान एवं सुसंस्कृत बनाया। एतद् विषयक पत्र भी वहाँ के अंग्रेज कलेक्टर को लिखा।

नीलहे बँगलों में जाकर गाँधीजी उनकी भी बातें सुनते थे। गाँधीजी कभी उनपर मिथ्या दोषारोपण नहीं करते थे।

(ख) बात करने के हुनर को 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' कहते हैं। स्पीच और लेख दोनों इसे नहीं छू पाते। इसकी पूर्ण शोभा काव्यकला प्रवीण विद्वतृमंडली में है। ऐसी चतुराई से प्रसंग छेड़े जाते हैं कि , जिन्हें सुन कानों को अत्यन्त सुख मिलता है। सयाने अपनी बातचीत को प्रखर बनाये रखते हैं ।

(ग) चम्पारण में नीलहे गोरे किसानों का शोषण और अन्य अत्याचार करते थे।

दक्षिण बिहार के बागी विचारों का असर चम्पारण में देर से पहुँचे। इसीलिए गंगा पर पुल बनाने की स्कीम में तत्कालीन शासन ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई और यों बरसों तक चम्पारण में गोरे निलहों का राज ब्रिटिश साम्राज्य की छत्रछाया में पनपता रहा।

(घ) जो डर गया वो मर गया। जहाँ भय है वहाँ मेधा (बुद्धि) का विकास अवरूद्ध हो जाता है। जीवन में भय जीवन का ह्यस है, मृत्यु है। मेधा का विकास निर्भयता, स्वतंत्रता और क्रांति की भावना से होता है। मेधावान ही ससत्य की खोज पूरी कर पाता है। मेधावान व्यक्ति ही कुंठा को दूर भगा सकता है। मेधावान ही चिंतामुक्त रह सकता है। मेधावान ही रूक्ष बनने से अपने आप को बचा सकता है। भयग्रस्त मेधावान नहीं हो सकता है।

(ड़) नारी की पराधीनता तब आरंभ हुई जब मानव जाति ने कृषि का आविष्कार किया, जिसके चलते नारी घर में दो टुकड़ों में बँट गईं। घर का जीवन सीमित और बाहर का जीवन सीमित और बाहर का जीवन निस्सीम होता गया एवं छोटी जिंदगी बड़ी जिन्दगी के अधिकारिक अधीन होती चली गई। नारी की पराधीनता का यह संक्षिप्त इतिहास है।

(च) इलेक्शन का खर्च, चुनाव का खर्च, बहुत ज्यादा है। यही भ्रष्टाचार की जड़ है। करोड़ों रूपए चुनाव में खर्च होते हैं। एक तरफ 'गरीबी हटाओ' का नारा लगाएँगें, समाजवाद का नारा लगाएँगे और चुनाव का खर्च ब्लैक– मार्केटियर लोगों से इकट्ठा करेंगे–– 'अनअकाउंटेड मनी' करोड़ों रूपए जिसका कोई हिसाब नहीं, कोई किताब नहीं। जेपी चिलाते रहे– इस चुनाव पद्धति में आमूल परिवर्तन होना चाहिए, चुनाव खर्च कम करना चाहिए लेकिन जेपी की किसी ने नहीं सुनी। परिणाम था सत्ता–पलट।

भ्रष्टाचार दूर करने का एक बड़ा उपाय है– चुनाव खर्च में कमी। चुनाव खर्च सरकार बहन करे। लोग नैतिक बनें। भ्रष्टाचार से बनी सरकार को कोई भ्रष्ट होने से रोक नहीं सकता।

9.

(क) एक ही व्याकरण की इकाई का कार्य संपादित करनेवाले क्रियाहीन पदसमूह को पदबंध कहते है। दौड़कर आती हुई लड़की ठेस लगने से गिर पड़ी। 'दौड़कर आती हुई' में संज्ञा पदबंध है।

पदबंध के प्रमुख पाँच भेद हैं– 1.संज्ञा पदबंध 2.सर्वनाम पदबंध 3.विशेषण पदबंध 4.क्रिया पदबंध 5.क्रिया विशेषण पदबंध।

संज्ञा पदबंधः संज्ञा की तरह कार्य करनेवाले पंदबंध को संज्ञा पदबंध कहते है। जैसे–रात को ड्यूटी पर रहनेवाला चपरासी आज नहीं आयाा। 'रात को ड्यूटी पर रहनेवाला' पदबंध 'चपरासी' संज्ञा के लिए आया है, अर्थात् यह पदबंध संज्ञा का काम कर रहा है। अतः यह संज्ञा पदबंध है।

सर्वनाम पदबंधः सर्वनाम की तरह कार्य करनेवाला पदबंध सर्वनाम पदबंध कहलाता है। जैसे–वहाँ मेरा विरोधकरनेवाला कोई नहीं था। मेरा विरोध करने वाला(कोई) सर्वनाम का काम कर रहा है। अतः यह सर्वनाम पदबंध है।

विशेषण पदबंधः विशेषण की तरह कार्य करनेवाले पदबंध को विशेषण पदबंध कहते है। जैसे– लाल अंगारे–सा उगता हुआ सूर्य देखने में बड़ा आकर्षक लगता है।

क्रिया पदबंधः क्रिया पदबंध में अनेक क्रियाएँ क्रिया की एक इकाई का काम करती है। जैसे–उसका कहना मान लिया जाना चाहिए। क्रिया की तरह कार्य करनेवाले पदबंध को क्रिया पदबंध कहते है।

क्रियाविशेषण पदबंधः क्रियाविशेषण की तरह काम करनेवाले पदबंध को क्रियाविशेषण पदबंध कहते है। जैसे–श्रेयस आजकल बहुत धीरे–धीरे बोलने लगा है।

9(ख) सूर्योदय– सूर्य+उदय हितोपदेश– हित+उपदेश

सदैव– सदा+ऐव दशानन – दश + आनन

सज्जन– सत्+जन जगदीश– जगत्–ईश

(ग) नदी– सरिता, तटिनी, जल– नीर, पानी,

स्त्री– नारी, सुन्दरी, गणेश– लम्बोदर, गजानन

असुर– दानव राक्षस, मेघ– जलधर, बादल,

(घ) चाय– स्त्री.– चाय मीठी है।

दिशा– स्त्री.– उस दिशा से आवाज आ रही है।

नाव– स्त्री.– नाव चलती है।

गंगा– स्त्री.– गंगा बह रही है।

मोती– पु.– मोती चमकता है।

नौकर– पु.–नौकर आ गया।

(ड़) *मुठी गरम करना(रिश्वत देना)*– पुलिस की मुठी गरम करने के बाद मेरा काम हो सका।

ठिकाने लगाना(मार डालना)– राम ने श्याम का ठिकाने लगा दिया।

हाथ पीले करना(विवाह करना)– युवराज सिंह ने नवम्बर में हाथ पीले कर लिये।

रास्ते का काँटा बनना(मार्ग में बाधा बनना)– देश की प्रगति के रास्ते में काटा बनने वालो को समाप्त कर देना चाहिए।

दंग रह जाना(आश्चर्यचकित होना)– योगी के चमत्कारों को देख कर मैं दंग रह गया।

सेट–6

हिन्दी–100

{प्रश्न}

समयः 3घंटा15 पूर्णांक–100

परीक्षार्थियों के लिए निर्देशः

1.परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

2.दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

3.परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

1. किन्हीं दो दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 120 शब्दों में देंः 2×10= 20

(क) 'बुनियादी शिक्षा' शीर्षक भाषण का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

अथवा

'ओ सदानीरा' का सारांश प्रस्तुत करें।

(ख) गाँव का घर" कविता का सारांश लिखें।

अथवा

तुलसीदास रचित किसी एक पद का भावार्थ लिखिए।

2. निम्नलिखित पाँच लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर प्रतयेक 60 शब्दो में देंः2×5=10

(क) कबीर के ईश्वर का रूप कैसा है?

(ख चातकी किसके लिए तरसती है?

(ग) गाँधी जी के शिक्षा संबंधी आदर्श क्या थे?

(घ) प्रवृत्तिमार्ग और निवृत्तिमार्ग क्या है?

(ड़) 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' क्या है?

3. सप्रसंग व्याख्या करें: 2×5= 10

(क) आदमी भागता है तो जमीन पर वह सिर्फ अपने पैरों के निशान नहीं छोड़ता, बल्कि हर निशान के साथ वहाँ की धूल में अपनी गंध भी छोड़ जाता है।

अथवा

आप उस समय महत्वाकांक्षी रहते हैं जब आप सहज प्रेम से कोई कार्य सिर्फ कार्य के लिए करते हैं।

(ख) मेरे तार–तार से तेरी

तान–तान का हो विस्तार

अपनी अंगुली के धक्के से

खोल अखिल श्रुतियों के द्वार।

अथवा

अपने कहने को क्या था, धन–धान नहीं था,

सत्य बोलता था जब–जब मुँह खोल रहे थे।

4. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखें: 1×10=10

(क) चुनाव प्रक्रिया (ख) नशा उन्मूलन।

(ग) बेरोजगारी (घ) आपके प्रिय शिक्षक

5.(क) निम्न शब्दों के संधि–विच्छेद करें: 1×5=5

दुर्दिन, तृष्णा, पयोद, यथेष्ट, दुर्ग

(ख) निम्न शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें: 1×5=5

भद्र, ऋजु, मोक्ष, सौम्य, निंदा।

(ग) निम्न शब्दों के विशेषण बताएँः 1×5=5

चर्चा, तेज, चरित्र, कृपा, क्रम।

(घ) निम्न अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखेंः 1×5=5

जो देने योग्य है, देखने योग्य, कार्य करने वाला, आदि से अन्त तक, दिन पर दिन।

6.संक्षेपण करेंः 4

वर्तमान युग मे जिस भीषणता के साथ जीवन–संघर्ष चल रहा है, उसमें वह व्यक्ति कभी भी विजयी नहीं हो सकता, जो चुपचाप बैठ कर अति दीर्घकाल तक सोचता–विचारता रहेगा। यहाँ तो वही टिक सकता है, जिसमें काफी स्फूर्ति है, जो दूसरों को ढकेलकर आगे बढ़ सकता है; नहीं तो जो उससे ताकतवर है उसे किनारे ढकेल देगा और आप आगे बढ़ जायेगा। अगर तुम इस जीवन में कुछ करना चाहते हो, अगर तुम्हें अपना जीवन सफल बनाना है तो तुम्हें प्रत्युत्पन्नमति होना चाहिए, अपने निर्णय पर दृढ़ रहना चाहिए और उस पर जमकर काम करना चाहिए। जिस व्यक्ति में ये गुण पाये जाते हैं, उसमें अन्य गुणों का समावेश भी रहता हैं।

7.(क) निम्नलिखित प्रश्नों के बहुवैकल्पिक उत्तरों में से सही उत्तर देंः 1×5=5

(1) 'जगरनाथ' शीर्षक कविता के कवि कौन हैं ?

(क) केदारनाथ सिंह (ख) अरूण कमल

(ग) नरेश महेता (घ) भूषण

(2) 'मातृभूमि' शीर्षक कविता के कवि हैं

(क) मैथिलीशरण गुप्त (ख) रामशेर बहादुर सिंह

(ग) अरूण कमल (घ) नरेश सक्सेना

(3) 'एक दीक्षांत भाषण' किस विधा की रचना है ?

(क) संस्मरण (ख) व्यंग्य

(ग) रिपोर्ताज (घ) यात्रा वृत्तांत

(4) 'आँखों देखा गदर' किसकी रचना है ?

(क) विष्णुभट गोडसे वरसईकर (ख) भोला पासवान शास्त्री

(ग) कबीरदास (घ ओम प्रकाश वाल्मीकि

(5) 'सूर्य किसकी रचना है ?

(क) कुमार गंधर्व (ख) ओदोलन स्मेकल

(ग) भगत सिंह (घ) जगदीश चंद्र माथुर

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें: 1×5=5

(1) कामिनी तो अपने साथ..... की शांति लाती है।
(यामिनी/दामिनी)

(2) सत्य का साकार रूप तो ..... ही होता है। (राजा/प्रजा)

(3) पुरूष और स्त्री में ..... का यह रूप आज कहीं भी देखने को नहीं आता। (अर्धनारीश्वर/स्त्रियोचित)

(4) शंख की चूड़ी के ..... से क्या महसूस करा दिया गया है ?

(कंपन/खनक)

(5) अर्धनारीश्वर भारत का एक .....प्रतीक है। (मिथकीय/बिम्बकीय)

(ग) सही जोड़े का मिलान करें: 1×5=5

(1) सूर्य (क) नरेश सक्सेना

(2) पृथ्वी (ख) शमशेर बहादुर सिंह

(3) उषा (ग) ओदोलेन स्मेकल

(4) पेशगी (घ) ओम प्रकाश वाल्मीकि

(5) जूठन (ड़) हेनरी लोपेज

8. अपने विद्यालय की किसी विशेष मनोरंजक घटना का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखें। 6

अथवा

पासबुक खो जाने की शिकायत बैंक मैनेजर को पत्र लिखकर करें।

9. मलिक मुहम्मद जायसी का काव्यात्मक परिचय दें। 5

अथवा

जयशंकर प्रसाद का काव्यात्मक परिचय दें।

सेट–6

हिन्दी–100

उत्तर

1. *(क) बुनियादी शिक्षा–* 'गाँव के बच्चों की शिक्षा' शीर्षक निबंध के रचयिता प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री कृष्ण कुमार हैं। 'शिक्षाशास्त्रियों में गाँवों और नगरों की शिक्षा विषय पर प्रायः वाद–विवाद होते रहे हैं। विमर्शपूर्ण यह व्याख्यान एक स्वस्थ और रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ अपना पक्ष रखता है जिसमें गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा की अवधारणा का बल है तथा शिक्षा के अपेक्षतया सर्वांगीण रूप का समाहार भी।'

बुनियादी शिक्षा के प्रस्ताव के साथ तीन बातें हैं– एक तो हाथ का काम स्कूल में हो, दूसरी, स्कूल की शिक्षा स्थानीय परिवेश से जुड़ी हो और तीसरी, स्कूल में जो–जो विषय पढ़ाए जाएँ, जो–जो कौशल पढ़ाए जाएँ, ज्ञान के जो क्षेत्र वहाँ बच्चों के संपर्क में लाए जाएँ, वे अलग–अलग न होकर संगठित हों, आपस में बँधे हों।

आधुनिक शिक्षा की एक बड़ी समस्या यह रही है कि हम ऐसी विशेषताओं को जनम देना चाहते हैं जो पहले से समाज में नहीं हैं, जिनकी केवल कल्पना हमारे मन में है। बुनियादी शिक्षा का प्रस्ताव ऐसी विशेषताओं की बात कर रहा है, जो पहले से हमारे समाज में हैं। इन्हें कहीं से लाया नहीं जाना है, ये हमारे समाज में हैं। इन्हें कहीं से लाया नहीं जाना है, ये पहले से हैं, इन्हें केवल पहचानना, निखारना और सँवारना है।

शिक्षा अभी तक हर बच्चे तक नहीं पहुँची है। आज की शिक्षा हमारे बच्चों को व्यापक सरोकारों से दूर करती है। इसकी शुरूआत उसी दिन से हो जाती है जिस दिन से हमारे बच्चे प्राथमिक शाला में प्रवेश करते हैं। शिक्षा को देश में फैलाने की बात करना बेमानी है। शिक्षा लड़कियों तक भी पहुँचनी चाहिए।

प्राथमिक शिक्षा को अधिक कारगर बनाने की जरूरत एक बहुत बड़ा सवाल है। प्राथमिक शिक्षा में लगे शिक्षकों की समस्याओं को भी समझना होगा। पाठ्यक्रम को भी समाज से जोड़कर पढ़ाना होगा।

गाँधीजी की बुनियादी तालीम की रूपरेखा आज भी शिक्षा, खासतौर से, प्राथमिक शिक्षा को एक नया जीवन देने में सक्षम है। गाँधीजी के ग्रामस्वराज के सपने का अर्थ है गाँवों को स्वायत्तता देना तथा ग्रामीणों को सम्मानपूर्वक जीने का हौसला देना।

अथवा

'ओ सदानीरा' शीर्षक निबंध के निबंधकार जगदीशचन्द्र माथुर हैं। माथुर जी एक प्रतिभाशाली निबंधकार हैं। 'उनके लेखन के बहुलांश पर नेहरू युग की कल्पनाशीलता, नवनिर्माण चेतना तथा आधुनिक वैज्ञानिक परिदृष्टि की छाप है। तद्नुरूप वे जीवन और रचना दोनों एक सुव्यववस्था, सुरूचि और कलात्मकता को आवश्यक मानते थे। सौंदर्यप्रियता और लालित्यबोध उनकी अभिरूचि के अंग थे।' ' यह निबंध 'सदानीरा' गंडक नदी को निमित्त बनाकर लिखा गया है पर उसके किनारे की संस्कृति और जीवन प्रवाह की अंतरंग झाँकी पेशकरता हुआ जैसे स्वयं गंडक की तरह ही प्रवाहित होता दिखलाई पड़ता है।'

गंडक चम्पारण में बहनेवाली उच्छृंखल नदी है। यह नदी अपना बहाव क्षेत्र और रास्ता बदल लिया करती है। गौतम बुद्ध के समय घना जंगल था, वृक्षों की जड़ों में पानी रूका रहता था। बाढ़ आती थी पर इतनी प्रचंड नहीं। पिछले छह–सात सौ साल में महावन, जो चम्पारण से गंगा तक फैला हुआ था, कटता चला गया ऐसे ही जैसे अगणितमूर्तियों का भंजन होता गया। वृक्ष भी प्रकृति देवी, वन श्री की प्रतिमाएँ हैं। वसुंधराभोगी मानव और धर्मांध मानव–एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

वर्तमान और अतीत की आद्यंतहीन कड़ी है गंडक नदी। न जाने कितने महात्माओं और संतों ने इसके किनारे तप और तेज पाया, किन्तु गंडक कभी गंभीर न बन सकी और इसीलिए इसके किनारे तीर्थस्थल भी स्थाई न रह सके। गंडक तो उच्छृंखल कन्या ही रही–ज्येष्ठा–सहोदरा गंगा का गांभीर्य इसे सुहाया नहीं।

गंडक ने कोई स्मृतियाँ नहीं छोड़ी। भवन नहीं, मंदिर नहीं, घाट नहीं। हवाई जहाज से गंडक घाटी के दोनों ओर नाना आकृति के ताल दीख पड़ते हैं, कहीं उथले कहीं गहरे किन्तु प्रायः सभी शस्य–श्यामला धरती रूपी गगन के विशाल अंतस् में ठिठकी हुई बदहालियों की भाँति टेढ़े–मेढ़े परन्तु शुभ्र एवं निर्मल। इन तालों को कहते हैं 'चौर' और 'मन'। चौर उथले ताल हैं जिनमें पानी जाड़ों और गर्मियों में कम हो जाता है और खेती भी होती है। मन विशाल और गहरे ताल हैं।

गंडक नदी का जल संदियों से चंचल रहा है। इसने कई तीरथ तोड़े। अब वे खंडहर दिखाई पड़ते हैं।

भैंसालोटन में भारतीय इंजीनियर जंगल के बीच निर्माण कार्य कर रहे हैं– नारायण का। ये बनने वाली नहरें ही उस नारायण की अनेक भुजाएँ हैं, बिजली के तारों का जाल ही तो उसका त्राणकर्त्ता चक्र है। लेखक मन ही मन उन्हें नमस्कार करता है।

ओ सदानीरा! ओ चक्र! ओ नारायणी! ओ महागंडक! युगों से दी–हीन जनता इन विविध नामों से गंडक को सम्बोधित करती रही है। गंडक की चिरचंचल धारा ने आराधना के फूलों को ठुकरा दिया।

संक्षेपतः गंडक नदी की चाल–ढाल और उसके कारण परिवर्तनों को निबंधकार ने रेखांकित किया है। जिससे यह अत्यन्त दिलचस्प निबंध बन गया हैं।

(ख) *"गाँव का घर"* शीर्षक कविता में कवि ग्रामीण संस्कृति का विवरण देते हुए गाँव के घर की विशिष्टता का चित्रण कर रहा है। गाँव के अन्तःपुर के बाहर की ड्योढ़ी पर एक चौखट रहा करता है। यह चौखट वह सीमा रेखा है जिसके भीतर अपने से पहले परिवार के वरिष्ठ नागरिकों (बुजुर्गो) को रूकना पड़ता है, अपनी खड़ाऊँ की खटपट आवाज से घर के अंदर की महिलाओं को अपने आने का संकेत देना पड़ता है। अन्य संकेत भी अपनाए जाते हैं। खाँसना अथवा किसी का नाम लिए बगैर पुकारना आदि। चोखट के बगल में गेरू से रंगी हुई दीवार पर बूढ़े ग्वाल दादा (दूध देने वाला) के दूध से भींगे अँगूठे के निशान अंकित रहते हैं, जिसमें दूध का हिसाब उल्लिखित रहता है, पूरे महीना भर के महीना के अंत में उसकी गिनती करके दूध के बिल (राशि) का भुगतान किया जाता रहा है। यह है ग्रामीण–परिवेश के परिवारों की जीवन–शैली की एक झलक।

किन्तु अब परिस्थितियाँ बदल चुकी है, गाँव
का वह घर अपना वह स्वरूप खो चुका हैं वह सादगी, वह नैसर्गिक स्वरूप अब स्वप्न की बातें हो गई हैं, अतीत की स्मृति बनकर रह गई हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि गाँ का वह घर अपना गाँव खो चुका हे, क्योंकि गाँव की वह प्राचीन परंपरा तिरोहित हो गई हैं पंचायती राज के आते है "पंच परमेश्वर" लुप्त हो गए, कहीं खो गए।

शहर की अदालतों और अस्पतालों में फैले हुए भ्रष्टाचार के वीभत्स मुख चबा जाने और लील जाने को तत्पर है तथा बुला रहे है। इससे गाँव की जिन्दगी चरमरा रही है।

अथवा

प्रस्तुत पद्यांशों में कवि *तुलसीदास* अपनी दीनता तथा दरिद्रता से मुक्ति पाने के लिए माँ सीता के माध्यम से प्रभु श्रीराम के चरणों में विनय से युक्त प्रार्थना प्रस्तुत करते हैं। वे स्वयं को प्रभु का दास कहते हैं। नाम लै भरै उदर द्वारा स्पष्ट हो जाता है कि श्रीराम का नाम–जप ही उनके लिए सबकुछ है। नाम–जप द्वारा उनकी लौकिक भूख भी मिट जाती

है। संत तुलसीदास अपने को अनाथ कहते हुए कहते हैं कि मेरी व्यथा गरीबी की चिंता श्रीराम के सिवा दूसरा कौन बूझेगा? श्रीराम ही एकमात्र कृपालु हैं जो मेरी बिगड़ी बात बनाएँगे। माँ सीता से तुलसीदासजी प्रार्थना करने है कि हे माँ आप मुझे अपने वचन द्वारा सहायता कीजिए यानी आशीर्वाद दीजिए कि मैं भवसागर पार करानेवाले श्रीराम का गुणगान सदैव करता रहूँ।

दूसरे पद्यांश में कवि अत्यंत ही भावुक होकर प्रभु से विनती करता है कि हे प्रभु आपके सिवा मेरा दूसरा कौन है, जो मेरी सुधि लेगा। मैं तो जनम–जनम से आपकी भक्ति का भूखा हूँ। मैं तो दीन–हीन दरिद्र हूँ। मेरी दयनीय अवस्था पर करूणा कीजिए ताकि आपकी भक्ति में सर्दव तल्लीन रह सकूँ।

2.

(क) कबीर के ईश्वर का रूप निर्गुण और निराकार है। उनका कोई आकार–प्रकार नही हैं न वे जन्म लेते है न वे अवतार लेते है।

(ख) चातकी जल की छोटी–सी बूँद के लिए तरसती है।

(ग गाँधीजी के शिक्षा–संबंधी आदर्श थे–'बालकों का सर्वाधीण विकास; जिसके अंतर्गत मानसिक, शरीरिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास तथा इन्हीं विकास की भीत्ति पर बच्चों के शिक्षा की नींव डालना चाहतें थें। बहरहाल, उनका यही आदर्श था कि बच्चे अपने बाल्यकाल से ही सच्चरित्र, मेहनतकश, ईमानदार एवं कर्त्तव्यनिष्ठ बनें।

(घ) प्रवृत्तिमार्ग वह मार्ग है, जिस रास्ते पर चलकर गृहस्थ जीवन को अपनाया जाता हैं, यानी नारी युक्त जीवन प्रवृत्ति मार्ग है, जबकि निवृत्तिमार्ग वह मार्ग है, जिस मार्ग में नारी का त्याग किया जाए, अर्थात् संन्यासी का जीवन निवृत्तिमार्ग है ।

(ड़) बात करने के हुनर को 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' कहते हैं। स्पीच और लेख दोनों इसे नहीं छू पाते। इसकी पूर्ण शोभा काव्यकला प्रवीण विद्वत्मंडली में है। ऐसी चतुराई से प्रसंग छेड़े जाते हैं कि जिन्हें सुन कानों को अत्यन्त सुख मिलता है। सयाने लोग अपनी बातचीत को प्रखर बनाये रखते हैं ।

3.

(क) प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक कहानीकार उदय प्रकाश रचित 'तिरिछ' से उद्धृत हैं। यह एक जादुई यथार्थ की कहानी हैं ।

तिरिछ में काले नाग से सौ गुना ज्यादा जहर होता हैं, साँप तो तब काटता है, जब उसके ऊपर पैर पड़ जाए या कोई जब जबरदस्ती उसे तंग करे। लेकिन तिरिछ तो नजर मिलते ही दौड़ता हैं ,पीछे पड़ जाता हैं उससे बचने के लिए कभी भी सीधे नहीं भागना चाहिए। टेढ़ा–मेढ़ा चक्कर काटते हुए, गोल–मोल दौड़ना चाहिए।

जब आदमी भागता है तो जमीन पर वह सिर्फ अपने पैरों के निशान ही नहीं छोड़ता, बल्कि हर निशान के साथ, वहाँ की धूल में अपनी गंध भी छोड़ जाता है। तिरिछ इसी गंध के सहारे दौड़ता है।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त रचित 'झंकार' पाठ से उद्धृत है। वीणा से राग स्वर तभी निकलता है, जब उस तार पर अपनी जीवनाहुति देते हैं। हमें अपने को तनवाने के लिए प्रस्तुत करना होता है। आवाज निकालने के लिए वाद्य यंत्र के तारों को तनना–साधना पड़ता है।

कवि कहता है कि मेरे तार–तार से तेरी तान–तान का विस्तार होता हैं अपनी अँगुली के धक्के से अखिल श्रुतियों के दरवाजे खोलने पड़ते हैं। संगीत निकालना पड़ता है।

4.

(क) **चुनाव प्रक्रिया**

जनतंत्र में चुनाव, अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता । राजतंत्र में राजा का राज चलता है। तानाशाही में तानाशाह की तूती बोलती है। प्रजातंत्र में प्रजा ही राजा का मालिक होती है। प्रजा ही राजा को चुनती है। अतः चुनावी प्रक्रिया का पारदर्शी होना अति आवश्यक है। प्रजातंत्र में अब ऐसा पाया जाता है कि एक बार सत्तारूढ़ हुआ आदमी अपनी जड़ें इतनी गहरी कर लेता है कि वह राजतंत्र जैसा ही व्यवहार करने लगता। पारदर्शी शासन चलाए तो, वह उचित हैं लेकिन वह मनमानी करने लगता हैं वह राजकोष को व्यक्तिगत कोष समझने लगता है। लूट–पाट मचा देता हैं घोटाले की श्रृंखला बनने लगती हैं महँगाई बढ़ने लगती है। जनता पिसने लगती है। उद्योगपतियों क्रमशः धनी होने लगते हैं। उपभोक्ता मरने–पिसने लगते हैं। देश का जनाजा निकल जाता हैं पाकिस्तान घुड़कने लगता है । चीन ओर अमेरिका आँखें दिखाता है । चीन भारत के उद्योगो को चौपट करता है तो अमेरिका अपने उत्पादों का विक्रीकेंद्र भारत को समझता है। ये तीनों भारत का खून चूसते हैं। भारत की संस्कृति को विकसित करना इनका उद्देश्य है। समय रहते यदि भारत की आँखें नहीं खुली तो भारत दुनिया

के नक्शे से गायब भी हो सकता है।

हमने अपने चुनावों और चुनाव–प्रक्रिया द्वारा देश के जनतंत्र को नहीं बचाया तो और भी बुरे दिन आ सकते हैं। मजदूरों का शोषण बढ़ सकता है। गरीब को जीने का हक छिन सकता हैं। किसान आत्महत्या पर उतारू हो सकता हैं

चुनाव–प्रक्रिया पारदर्शी होनी चाहिए। नेता यदि बेईमान हो जाय तो उससे सत्ता छीन लेनी चाहिए। जब से भारत के इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन है तब से मतदान पारदर्शी हुआ है। चारा खानेवाले, अलकतरा पीनेवाले खाक में मिले हैं। हाँ, कोयला खानेवाला को पकड़ना अभी बाकी हैं

चुनावों में पैसे पानी की तरह बहाए जा रहे हैं। यह खतरनाक संकेत हैं। इससे भारत को अपनी चुनाव प्रक्रिया को बचाए रखना होगा। आप पार्टी अपने को ईमानदार और बाकी सबको बेईमान कहती है। वह भी विदेशी पैसे के बल फड़क रही है। हमारे एम0एल0ए0 और एम0पी0 यदि अपराधी नहीं होंगे तभी भारत का प्रजातंत्र पटरी पर चल सकता है।

एक कड़ा लोकपाल विधेयक लाने में सबकी नानी मरती है। चुनाव प्रक्रिया यदि पारदर्शी होगी तो भारत की जनता सही जनप्रतिनिधियों का चुनाव कर पाएगी। जनता की राय का महत्त्व बढ़ना चाहिए। पैसे के बल पर एम0 पी0 बने लोगों को खदेड़ना चाहिए। इससे प्रजातंत्र के अंदर की तानाशाही भी पनाह माँगेगी। प्रजातंत्र से जनता को लाभ–ही–लाभ हैं मीडिया को भी सशक्त होना होगा।

चुनाव प्रक्रिया यदि पारदर्शी हो गयी तो लोगों के बीच बैमनस्य भी मिट जाएगा। जातीयता का प्रचार कम हो जाएगा। धर्मों का आपसी वैमनस्य भी नहीं फैलेगा। अनन्त राशि का चुनावी खर्च हमें रोकना होगा। चुनावों के बाद महँगाई बढ़ जाती है। चुनावों के बाद आपसी संघर्ष भी बढ़ जाता हैं। इस पर शुद्ध चुनाव ही रोक लगान में समर्थ हो सकेंगे। चोर नेताओं का चुनाव रूक सकेगा। चुनाव के बाद के घोटाले रूक सकेंगे। प्रजातंत्र की सीमाएँ सामने न आकर उसकी विशेषताएँ प्रकाश में आएँगी।

संक्षेपतः हम कह सकते हैं कि साफ–सुथरे, पारदर्शी चुनाव और चुनाव–प्रक्रिया ही भारत की रक्षा कर सकेगी–

'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी

दुश्मन रहा है दौरे जहाँ हमारा।'

(ख) नशा उन्मूलन

नशा मनुष्य और मनुष्यता का नाश कर देता हैं। नशाग्रस्त व्यक्ति होश खो देता है। बेहोशी में ही वह आनंद का अनुभव करता है। कभी–कभी तो वह सड़कों पर लुढ़क जाता है और कभी–कभी तो मार–पीट पर उतर जाता है।

नवयुवक यदि नशे का सेवन करता है। तो उसका भविष्य अंधकार में मिल जाता हैं। नशे से ग्रस्त व्यक्ति को देखकर कुत्ते भी भूँकने लगते हैं। अतः नशा उन्मूलन करना ही होगा। जड़ से नशे की आवश्यकता और उपयोगिता को उखाड़ना होगा।

नशा करनेवाले खैनी, बीड़ी और सिगरेट पीते है। वे शराब सस्ती और महँगी पीते हैं। वे गुटखा खाते हैं। वे जर्देवाला पान खातें हैं। वे दारू और सोमरस का सेवन करते हैं। वे भाँग,गाजा और अफीम खाते–पीते रहते हैं। हिरोइन तो बुद्धि का नाश ही कर देती है। नशेबाज की शरीद दुबली–पतली हो जाती हैं। उनका स्वास्थ्य खराब हो जाता हैं वे बीमारी से ग्रस्त हो जाते है। अफीम खानेवाले पर तो साँपों का जहर भी असर नहीं करता हैं।

नशेबाजों का जीवन दुःखी हो जाता हैं। बोलने का तौर–तरीका आक्रामक हो जाता हैं ।स्वास्थ्य नीचे गिर जाता हैं कैंसर डायबटीज एवं चीनी की बीमारी उन्हें हो जाती है ओर यदि नहीं संभले तो मृत्यु, आकस्मिक मृत्यु भी हो सकती है। धन का नाश हो जाता हैं।

पारिवारिक एवं सामाजिक शांति खतरे में पड़ जाती हैं । आगे चलकर नशेबाज, रंगदारी पर उतर जाते हैं। दादागिरी उनका पेशा बन जाता हैं बाद वे नेता भी बन जाते हैं। नशाखोरों की भूख मर जाती है। हाँ, कामशास्त्र–कला में प्रवीण वे अवश्य बन जाते हैं। बुद्धि का ह्रैास हो जाता है। नशाखोर घर में अपनी स्त्रियों को खूब पीटते हैं। स्त्रियों पर हाथ उठाना तो एक पागलपन का लक्षण है। नशाखोर का जीवन संतुलित नहीं रह पाता।

आखिर क्यों करते हैं, लोग नशा ? नशा आदत बन जाती हैं नशाखोर अपने को भुलाना चाहता हैं । वह तनाव मुक्ति चाहता हैं नशाखोर मानसिक आनंद चाहता है। वह पोर्नर–बोर्नर की कला नेत्रगत करना चाहता है। वह अज्ञानता में रहना चाहता हैं वह अशिक्षा को गले लगाना चाहाता है। बदनामी से उसे डर नहीं लगता है।

नशा उन्मूलन आज आवश्यक हो गया है। लेकिन शहरीकरण से नशाखोरी और भी बढ़ रही हैं । गाँव के लोग भी पीने–खाने लगे है। नवयुवकों को यदि यह बीमारी लग गयी तो उनका भविष्य चौपट हो जाता हैं । अतः नशा उन्मूलन की दवाईयाँ खाकर इस रोग को दूर करना होगा। सरकारे टैक्स के लोभ में इन रोक कार्यक्रमों को बढ़ावा नहीं दे पाती। गरीबों का घर नष्ट हो जाता है।

अतः नशा उन्मूलन से ही हमारे देश की वास्तविक उन्नति होगी।

(ग) बेरोजगारी

आज भारत के सामने अनेक समस्याएँ चट्टान बनकर प्रगति का रास्ता रोके खड़ी हैं। उनमें से एक प्रमुख समस्या है– बेरोजगारी। महात्मा गाँधी ने इसे समस्याओं की समस्या कहा था।

योग्यता के अनुसार काम का न होना। भारत में मुख्यतया तीन प्रकार के बेरोजगार हैं। एक वे, जिनके पास आजीविका का कोई साधन नहीं है। वे पूरी तरह खाली हैं। दूसरे, जिनके पास कुछ समय काम होता है, परंतु मौसम या काम का समय समाप्त होते ही वे बेकार हो जाते हैं। ये आंशिक बेरोजगार कहलाते हैं। तीसरे वे, जिनहें योग्यता के अनुसार काम नहीं मिला। जैसे कोई एम० ए० करके रिक्शा चला रहा है या बी० ए० करके पकौड़े बेच रहा है।

इस देश में रोजगार देने की जितनी योजनाएँ बनती हैं, वे सब अत्यधिक जनसंख्या बढ़ने के कारण बेकार हो जाती हैं। एक अनार सौ बीमार वाली कहावत यहाँ पूरी तरह चरितार्थ होती है। बेरोजगारी का दूसरा कारण है–युवकों में बाबू गिरी की होड़। नवयुवक हाथ का काम करने में अपना अपमान समझते हैं। विशेषकर पढ़े–लिखे युवक दफ्तरी जिन्दगी पसन्द करते हैं। इस कारण वे रोजगार कार्यालय की धूल फाँकते रहते हैं।

हमारी शिक्षा–प्रणाली नित बेरोजगारी पैदा करती जा रही है। व्यावसायिक प्रशिक्षण का हमारी शिक्षा में अभाव है। चौथा कारण है– गलत योजनाएँ सरकार को चाहिए कि वह लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दें। मशीनीकरण को उस सीमा तक बढ़ाया जाना चाहिए जिससे कि रोजगार के अवसर कम न हों। इसीलिए गाँधीजी ने मशीनों का विरोध किया था, क्योंकि एक मशीन कई कारीगरों के हाथों के बेकार बना डालती है। सोचिए, अगर साबुन बनाने का लाइसेंस बड़े उद्योगों को न दिया जाए तो उससे हजारों–लाखों युवक यह धन्धा अपनाकर अपनी आजीविका कमा सकते हैं।?

बेरोजगारी के दुष्परिणाम अतीव भयंकर हैं। खाली दिमाग शैतान का घर। बेरोजगार युवक कुछ भी गलत–सलत करने पर उतारू हो जाता हैं। वही शान्ति को भंग करने में सबसे आगे होता हैं। शिक्षा का माहौल भी वही बिगाड़ते हैं जिन्हें अपना भविष्य अन्धकारमय लगता हैं। बेकारी का समाधान तभी हो सकता है, जब जनसंख्या पर रोक लगाई जाए। युवक हाथ से काम करें। सरकार लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दे। शिक्षा व्यवस्था से जुड़े तथा रोजगार के अधिकाधिक अवसर जुटाए जाएँ।

(घ) आपके प्रिय शिक्षक

आदर्श शिक्षक विरल हैं। वर्तमान युग में तो और भी। लेकिन जो हैं उनमें कुछ ऐसे हैं जो अपने ज्ञान, चरित्र और दैनिक जीवन से अपने छात्रों पर एक बड़ी छाप छोड़ते हैं। मेरे विद्यालय में एक ऐसे ही शिक्षक हैं। उनका नाम श्री साधु चौबे है, वे मेरे विद्यालय के सर्वोत्तम शिक्षक हैं। इसलिए मैं उन्हें सबसे अधिक पसंद करता हूँ।

श्री साधु चौबे कला–स्नातक हैं। वे हमें अँग्रेजी, गणित और हिंदी पढ़ाते हैं। गणित और हिंदी में उनके मुकाबले विद्यालय में कोई नहीं है। गत दस वर्षों से वे शिक्षण का कार्य कर रहे हैं। इसलिए वे शिक्षण–कला में पटु हैं। वे कुलीन परिवार के हैं।

कुछ ठोस कारण हैं जिनके चलते वे विद्यालय के सर्वाधिक प्रिय शिक्षक हैं। वे सीधे–सादे और निंरभिमान हैं। उनका जीवन निर्मल एवं पवित्र हैं पढ़ाने में वे पटु हैं। अपने कलात्मक ढंग के पाठन से वे वर्ग को मुग्ध कर लेते हैं। अत्यंत कठिन विषय भी उनके हाथों सुगम बन जाता है। वे हमलोगों को दोनों गणित, उच्च और प्राथमिक, तथा अँगरेजी पढ़ाते है। उनकी सुंदर शिक्षण–पद्धति के कारण गणित जैसा कठिन और नीरस विषय भी मोहक और रूचिकर हो जाता है। दो चीजें हैं जो उनके शिक्षण को और कारगर बनाती है। एक तो उनकी आवाज स्पष्ट और मधुर है; दूसरी चीज उनकी साफ–साफ और अच्छी लिखावट हैं उनकी चित्रकारी भी प्रशंसनीय होती हैं। वे कमजोर छात्रों की सहायता करने में दिलचस्पी लेते हैं। पढ़ाते समय वे ऐसे छात्रों की कठिनाइयों को भाँप लेते हैं और शीघ्र ही उनकी सहायता को पहुँच जाते हैं। हृदय से वे बहुत उदार और सहानुभूतिशील हैं। अपने निवासस्थान पर भी वे छात्रों को निःशुल्क पढ़ाते हैं। वे एक अच्छे शिक्षक ही नहीं, वरन् एक बड़े समाजसुधारक भी हैं। वे अपने अवकाश को समाज की बुराइयों को दूर करने में लगाते हैं। वे हरिजन तथा अन्य निर्धन लोगों के साथ मित्र की तरह व्यवहार करते हैं। वे बीमारों और अपाहिजों की सेवा करने में हिचकते नहीं। यही कारण है कि स्थानीय लोग उन्हें प्यार और आदर करते हैं।

छात्रों के लिए ऐसे शिक्षक सच्चे मार्गदर्शक एवं मित्र होते हैं। प्राचीन भारत में शिक्षक

अत्यंत सम्मान के पात्र होते थे। वर्तमान भारत में ऐसे शिक्षकों की कमी है। यदि प्रचुर संख्या में ऐसे शिक्षक हो जाएँ तो भारत अपना गौरव पुनः प्राप्त कर ले।

5.(क) (1) दुः+दिन= दुर्दिन । (2) तृष्+ना= तृष्णा ।

(3) पयः+द= पयोद। (4) यथा+ईष्ट=यथेष्ट।

(5) दुः+ग= दुर्ग ।

(ख)

शब्द	विपरीतार्थक शब्द
(1) भद्र	अभद्र
(2) ऋजु	सरल
(3) मोक्ष	बंधन
(4) सौम्य	उग्र, असौम्य
(5) निंदा	स्तुति

(ग)

शब्द	विशेषण
(1)चर्चा	चर्चित
(2) तेज	तेजस्वी
(3) चरित्र	चारित्रिक, चरित्रवान
(4) कृपा	कृपालु
(5) क्रम	क्रमिक, क्रमशः

(घ)

अनेक शब्द	*एक शब्द*
(1) जो देने योग्य है	देय
(2) देखने योग्य	दर्शनीय, द्रष्टव्य
(3) कार्य करनेवाला	कार्यकर्त्ता
(4) आदि से अंत तक	आद्यंत
(5) दिन पर दिन	दिनानुदिन ।

6.

शीर्षकः जीवन–संघर्ष

आज भीषण जीवन–संघर्ष चल रहा है। स्फूर्तिवान और ताकतवर लोग ही यहाँ टिक सकते हैं। जीवन में सफल होने के लिए दृढ़ एवं कर्मशील होना होगा। ऐसे गुण–सम्पन्न लोगों में अन्य गुण भी आ जाते है।

अवतरण में आए कुल शब्द–112

प्रयुक्त शब्द–37

7.**(क)** (1)–क, (2)–ग, (3)–ख, (4)–क, (5)–ख

(ख) (1)–यामिनी, (2)–राजा, (3)– अर्धनारीश्वर, (4)–कंपन,

(5)–मिथकीय

(ग) (1)–ग, (2)–क, (3)–ख, (4)–ड़, (5)–घ

8.

परीक्षा भवन

पटना कालेजिएट स्कूल

पटना

27.10.216

प्रिय मित्र सोनु,

तुम जानते ही हो कि आए दिन विद्यालय में कोई–न–कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम होते ही रहते हैं। हमारे विद्यालय में लड़के और लड़कियाँ दोनों साथ–साथ पढ़ते हैं। अतः मनोरंजकता और बढ़ जाती है।

नए छात्र–छात्राओं के आगमन पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य, गाना–बजाना, नाटक–ड्रामा सब आयोजित किए गए थे। सभी छात्र–छात्रा तीन घंटे के कार्यक्रम में आनंद में डूबे रहे। पूरे विद्यालय के छात्र–छात्रा एकत्रित एक हॉल में थे। तिलक–दहेज के विरूद्ध 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी मंचित हुई। लड़का लड़की देखने आया था। लड़की ने उसे डाँट कर भगा दिया। वह लड़का लड़कियों पर सीटी बजाता था। लड़की ने कहा– तेरे पास रीढ़ की हड्डी ही नहीं है तो विवाह और तिलक का प्रश्न ही नहीं उठता। सभी ने तालियाँ बजायीं। सभी यह कहानी से सीख लेकर अपने–अपने घर

गए।

शेष कुशल। बड़ों को प्रणाम।

तुम्हारा अभिन्न

गौरव

अथवा

सेवा में,

बैंक मैनेजर

पंजाब नेशनल बैंक,

नवादा।

विषय– पास बुक खो जाने की शिकायत दर्ज करने हेतु।

महोदय,

कल मेरा पास बुक खो गया हैं मेरा खात संख्या 14520258 है। यह पंजाब नेशलन बैंक की नवादा शाखा से संबंद्ध है।

अतः मैं इस घटना की शिकायत बैंक से करता हूँ। मुझे एक नया पास बुक भी निर्गत कर दिया जाय। इसके लिए जो शुल्क लगेगा वह मेरे खाते से काट लिया जाय।

विशेष कृपा।

आपका ग्राहक

राहुल कुमार

दिनांक–15.12.2016

न्यु एरिया,नवादा

9. *मलिक मुहम्मद जायसी* (1592–1548) 'प्रेम की पीर के कवि हैं। मार्मिक अंतर्व्यथा से भरा हुआ यह प्रेम अत्यंक व्यापक, गूढ़ आशयवाला और महिमामय हैं। 'पद्मावत' के आख्यान में सजीव कहानी का मर्मस्पर्शी वेदनामय रस है और चरित्रों, उनके सुलगत–दहकते,

मनोभावों के दुर्निवार प्रभाव हैं।'

जायसी की कृतियाँ हैं– 'पद्मावत', 'अखरावट', 'आखिरी कलाम', 'चित्ररेखा', 'कहरानाम' और 'मसला या मसलानामा'।

उनके पद्य के नमूने हैं–

(1) *जौं लहि अंबहि डाभ न होई।*

तौ लहि सुगंध बसाई न सोई।।

(2) 'जहँ लोभ तहँ लाभ न होई।

जहँ लाभ तहँ लोभ न होई।।'

(3) 'धनि सो पुरुष जस कीरति जासू।

फूल मरै पै मरै न बासू।।'

जायसी के माध्यम से हिंदी साहित्य ने न सिर्फ अपने युग की बल्कि युगों के भीतर कड़कती हुई मानवीय विषाद की तस्वीर देखती जिसमें निष्कलंक आदर्श भी हैं और बहुत कड़वे यथार्थ भी हैं।

अथवा.

जयशंकर प्रसाद (1889–1937) हिंदी छायावाद के प्रवर्तक कवि हैं। उन्होंने 'कामायनी' नामक महाकाव्य भी लिखा था।

'जयशंकर प्रसाद न केवल एक महान छायावादी कवि थे बल्कि वे एक महान नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार एवं निबंधकार भी थे।' उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रसाद जी के पास ऐतिहासिक बुद्धि थी। वे मानव के विकास के बारे में सोचते थे। वे समाज और जाति के सुंदर भाग्य के बारे में भी चिंतन करते थे। उनका चिंतन राष्ट्रवादी सांस्कृतिक उत्थान से आप्लावित था।

उनकी कृतियाँ हैं– 'झरना', 'आँसू', 'लहर' और 'कामायनी'।

उनकी कविता के नमूने हैं–

(1) *'तुमुल कोलाहल कलह में*

मैं हृदय की बात रे मन।'

(2) 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो।'

सेट - 7

हिन्दी–100 अंक

{ प्रश्न }

समय–3घंटे 15मिनट **पूर्णांकः100**

परीक्षार्थी के लिए निर्देशः

1.परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

2.दाहिनी ओर हाशिये पर दिये गए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

3.परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

1.(क) यौगिक तथा योगरूढ़ शब्दों में अंतर स्पष्ट करें। 7½

(ख) किन्हीं पाँच के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखें। 5×1½ = 7½

राम, कृष्ण, सीता, धरती, आकाश, बादल, सूरज, इन्द्र।

(ग) किन्हीं पाँच के विग्रह कर समास बताइए। 5×1½ = 7½

यथा शक्ति, स्वर्ग प्राप्त, नीलगाय, नवग्रह,
दशानन, भाई–बहन, लंबोदर, गंगाजल।

(घ) किन्हीं पाँच के संधि–विच्छेद करें। 5×1½ = 7½

सत्याग्रह, दावानल, विद्यार्थी, रामायण, पुस्तकालय,
धर्मचारी, परमानंद, नीलाबंर।

2. रीतिकाल को अन्य किन–किन नामों से जाना जाता है। तर्कपूर्ण उत्तर दिजिए। 5

अथवा

तुलसीदास या सूरदास का काव्यात्मक परिचय दें।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं छः लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दें: 6×2 =12

(क) 'बिटिया' से क्या सवाल किया गया है ?

(ख) डायरी क्या है ?

(ग) 'जन–जन का चेहरा एक' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

(घ) 'मुख देखी नाहीं मनी' का क्या अर्थ है ? कबीर पर यह कैसे लागू होता है ?

(ड़) धाँगड़ शब्द का क्या अर्थ है ?

(च) प्रवृत्तिमार्ग और निवृतिमार्ग क्या है ?

4. निम्नलिखित दो दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दें: 2×5 = 1 0

(क) 'अर्धनारीश्वर' शीर्षक पाठ का सारांश लिखें।

अथवा

'प्रगीत और समाज' शीर्षक पाठ का सारांश लिखें।

(ख) 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता का भावार्थ अपने शब्दों में प्रस्तुत करें। अथवा, रीतिकाल के कवियों में भूषण श्रेष्ठ कवि हैं, प्रमाणित कीजिए।

5.(1) सही जोड़े का मिलान करें: 5

(1) सूरसागर	(क) अशोक वाजपेयी
(2) शिक्षा	(ख) नामवर सिंह
(3) हार–जीत	(ग) जे0 कृष्णमूर्त्ति
(4) अर्धनारीश्वर	(घ) सूरदार
(5) प्रगति और समाज	(ड़) रामधारी सिंह दिनकर

(2) निम्नलिखित प्रश्नों के बहुवैकल्पिक उत्तरों में से सही उत्तर चुनें: 5

(1). 'कड़बक' किसकी रचना है ?

(क) जायसी (घ) नामवर सिंह

(ख) नामवर सिंह (ग) दिनकर

(2). 'रामचरितमानस' किनकी कृति है ?

(क) सूरदास (ग) तुलसीदास

(ख) दिनकर (घ) कबीरदास

(3). भूषण किस काल के कवि हैं ?

(क) आधुनिक काल (ग) भक्तिकाल

(ग) रीतिकाल (घ) इनमें से कोई नहीं

(4). दिनकर की कौन–सी रचना है–

(क) रामचरितमानस

(ख) अर्धनारीश्वर

(ग) कड़बक

(घ) हँसते हुए मेरा अकेलापन।

(5). सूरदास किस काल के कवि थे–

(क) आदिकाल (ग) रीतिकाल

(ख) भक्तिकाल (घ) आधुनिककाल

(3). निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्त्ति करें: 5

(क) आदमी यथार्थ को जीता ही नहीं, ...
को रचता भी है। (यथार्थ/अयथार्थ)

(ख) जो.....छोड़कर भागता है, उसे गोली
मार दी जाती है। (फौज/मंदिर)

(ग) तुलसीदास भगवान..... के भक्त थे। (राम/कृष्ण)

(घ) अशोक वाजपेयी की रचना.....है। (दीपावली/हार–जीत)

(ड़) नामवर सिंह ..... के प्रख्यात आलोचक हैं। (हिन्दी/अंग्रेजी)

6. सप्रसंग व्याख्या करें। $2 \times 4 = 8$

(क) हमारी मनोवृत्ति प्रतिक्षण नए–नए रंग दिखलाया करनी है, वह प्रपंचात्मक संसार का एक बड़ा भारी आईना है, जिसमें जैसी चाहो वैसी सूरत देख लेना कोई दुर्घट बात नहीं है।

अथवा

जिस पुरूष में नारीत्व नहीं, वह अपूर्ण है।

(ख) क्रांति का, निर्माण का, विजय का सेहरा एक,

चाहे जिस देश, प्रांत, पुर का हो,

जन–जन का चेहरा एक!

अथवा

फिर भी कोई कुछ कर न सका

छिन ही गया खिलौना मेरा

मैं असहाय विवश बैठी ही

रही उइ गया छौना मेरा।

7. संक्षेपण करें:– 4

समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। सूरज, चाँद, हवाएँ, प्रकृति के विभिन्न उपादान कर्म में लगें रहते हैं, कर्म ही नहीं, समय पर कर्म करने की उनकी प्रेरणा हमें सदैव आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। सूरज समय पर उगता है। समय पर डूबता। है। इस कार्य में वह कभी लापरवाही नहीं करता। सच तो यह है कि विद्यार्थी जीवन में समय के महत्व को समझना चाहिए। यह भी समझना चाहिए कि समय बीत जाने के बाद लाख रूपये खर्च करने के बाद भी वह नहीं वापस आ सकेगा। अतः जीवन के उत्तरोत्तर विकास के लिए हमें समय के महत्त्व को भली प्रकार समझ लेना चाहिए ताकि पश्चाताप करने की स्थिति न आने पाए।

8. संक्षित पत्र लिखें: 6

अपने प्रधानाचार्य के पास एक आवेदन पत्र लिखिए जिसमें दो दिनों की छुट्टी की माँग की गई हो।

अथवा

अपने क्षेत्र में कानून–व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति पर स्थानीय दैनिक समाचार

पत्र के संपादक को पत्र लिखें।

9. किसी एक विषय पर निबंध लिखें:– 10

(क) सदाचार का महत्त्व

(ख) आपके प्रिय कवि

(ग) आपकी प्रिय पुस्तक

(घ) अनुशासन

(ड़) शरद ऋतु

हिन्दी– 100 अंक

सेट – 7

{उत्तर}

1. (क) *यौगिक शब्दः*– हिन्दी भाषा में अनेक ऐसे शब्द हैं जो एक से अधिक इकाइयों से मिलकर बनते हैं। जैसेः–

प्रधान मंत्री (रूढ़ शब्द रूढ़ शब्द)

अन पढ़ (उपसर्ग रूढ़ शब्द)

घर वाला (रूढ़ शब्द प्रत्यय)

कुछ ऐसे शब्द भी हैं, जिनके सार्थक टुकड़े किए जा सकते हैं और जो इन इकाइयों का अर्थ होता है, वही उस शब्द का भी अर्थ होता है।

अन्य उदाहरणः–

विद्या अर्थी = विद्यार्थी

दीप अवली = दीपावली

देश भक्ति = देशभक्ति

पाठ शाला = पाठशाला

योगरूढ़ शब्दः कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं, जिनके एक से अधिक अर्थ होते हुए भी वे किसी एक विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाते है; योगरूढ़ कहलाते हैं। जैसेः–

शब्द	खंड	अर्थ	रूढ़ अर्थ
अक्षर	अ क्षर	ब्रह्मा,शिव,विष्णु,वर्ज,सत्य	वर्ण
पंकज	पंक ज	शंख,मछली,कमल	कमल

ऐसे शब्दों को योगरूढ़ शब्द कहते हैं। इनमें यौगिक और रूढ़–दोनों शब्दों की विशेषाएँ पाई जा सकती हैं। जैसेः–

चतुर्भुज (विष्णु)

हिमालय (एक विशेष पर्वत)

घनश्याम (कृष्ण)

नीलकंठ (शिव) आदि ऐसे ही शब्द हैं।

(ख) राम– सीतापति, दशरथनंदन,

कृष्ण– मुरलीधर, गिरिधर

सीता– वैदेही, जनकनन्दिनी

धरती– धरा, वसुधा,

आकाश–नभ, व्योम

बादल– जलद, मेघ,

सूरज– सूर्य, दिनकर,

इन्द्र – सुरेन्द्र, सुरेश,

(ग) यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार (अव्ययीभाव समाज)

स्वर्गप्राप्त = स्वर्ग को प्राप्त (तत्पुरूष समाज)

नीलगाय = नीली है जो गाय (कर्मधारय समाज)

नवग्रह = नौ ग्रहों का समूह (द्विगु समास)

दशानन = दस है आनन जिसके अर्थात् रावण (बहुब्रीहि समास)

भाई–बहन = भाई और बहन =(द्वन्द्व समास)

लम्बोदर = लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश (बहुब्रीहि समास)

गंगाजल = गंगा का जल (तत्पुरूष समास)

(घ) सत्याग्रह = सत्य+आग्रह

दावानल = दाव + अनल

विद्यार्थी = विद्या + अर्थी

रामायण = राम + अयण

पुस्तकालय = पुस्तक + आलय

धर्माचारी = धर्म + आचारी

परमानंद = परम + आनंद

नीलांबर = नील + अंबर

2. हिन्दी साहित्य में रीतिकाल का प्रारंभ भक्तिकाल के बाद माना जाता है। 'रीतिकाल' आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा दिया गया नाम है। मिश्र बंधुओं ने इस काल को 'अंलकृत काल' कहा, जब कि विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इस काल को 'श्रंगाल काल' नाम दिया था। अन्य विद्वानों ने इसे अपने–अपने तर्क से इन नामों की पुष्टि की है। सच तो यह है कि इस काल के नामकरण को लेकर मतभेद रहा है। किन्तु रामचन्द्र शुक्ल द्वारा दिया गया नाम ही प्रचलित हुआ। क्योंकि इस युग की सामान्य प्रवृत्तियों को देखते हुए शुक्ल जी द्वारा दिए गए इस नाम से औचित्य को प्रायः सभी विद्वानों ने स्वीकार किया।

इस नामकरण के संबंध में मिश्रबंधुओं का तर्क था कि अलंकार शब्द काव्यांगों के साथ साज–सज्जा का भी बोधक है, अतः 'अलंकृत काल' कहना ज्यादा श्रेष्ठ होगा, दूसरी ओर विश्वनाथ प्रसाद मिश्र की मान्यता थी कि श्रृंगारकला कहने से आंतरिक रूप 'रस' का बोध होता है, जो उस काल की रचनाओं में पर्याप्त दिखलाई पड़ता है। अस्तु, 'रीतिकाल' ही विशेष मान्य एवं प्रचलित रूप में रहा; जब कि अन्य शेष नाम सीमित अर्थ देनेवाले रहे, इसलिए एकमात्र रीतिकाल नाम ही इस कालावधि को व्यापक रूप से परिभाषित करने में समर्थ सिद्ध हुआ। सच तो यह है कि इस नाम की विशेषता के कारण हम तद्युगीन जीवन एवं समाज से सम्यक् रूप अवगत हो पाते हैं। आचार्य शुक्ल ने यह नाम इसलिए भी दिया कि कोई महत्वपूर्ण पक्ष छूट न जाए तथा इसी के भीतर सभी प्रमुख प्रवृत्तियाँ भी आ जाए।

अथवा

तुलसीदास भक्तिकाल के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इन्हें भक्तिकालीन सगुण राम भक्ति शाखा के कवियों की पहली पंक्ति में स्थान दिया गया है। इसका कारण यह है कि उन्होंने शास्त्र परंपरा और संस्कृत भाषा के स्थान पर लोक जागरण और लोक कल्याण के लिए लोकभाषा में काव्य–सृजन को महत्त्व दिया। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह मानी जाती है कि इनका रचनात्मक सौंदर्य शिक्षित जन साधारण का मन मोह लेता है तथा इनके दोहों, चौपाइयों और छंदों को गुनगुनाने लगता है।

'श्रीरामचरितमानस' इनका प्रसिद्ध ग्रंथ है और इस ग्रंथ में उन्होंने राम–कथा के बहाने जीवन की तमाम गुत्थियों एवं समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न किया है। इनकी रचनाओं में गजब का उपदेश है, वे उपदेश सभी उम्र तथा स्तर के लोगों के लिए है। वे उपदेश धनी–गरीब, साक्षर–निरक्षर, स्त्री–पुरूष, बालक–वृद्ध सबों को प्रेरित करनेवाले हैं।

तुलसीदास ने राम के चरित्र के माध्यम से यह बतलाने का प्रयास किया

है जीवन के शाश्वत विकास के लिए राम–भक्ति जरूरी है। इसीलिए वे कहते हैं कि–

'कामिहि नारि पियारि जिमि

लोभिहि प्रिय जिमि दाम।

तिमि रघुनाथ निरंतर

प्रिय लागहु मोहि राम।।'

अर्थात् जिस तरह कामी को नारी, लोभी को धन प्रिय लगता है, उसी तरह से आप भी मुझे प्रिय लगें। वस्तुतः तुलसीदास के काव्य में नूतन संदेश दिए गए है, वे आज भी युगांतरकारी प्रतीत होते हैं।

अथवा

'सूरदास' भक्तिकाल के श्रेष्ठ कवि हैं। इनके आराध्य देव भगवान् श्रीकृष्ण रहे हैं तथा इनके काव्य का मुख्य विषय कृष्ण का जीवन–चरित्र एवं उनकी भक्ति रहा है। 'भागवत' के आधार पर उन्होंने राधा–कृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन किया है।

इनकी प्रमुख रचनाएँ 'सूरसागर' 'साहित्य लहरी; और 'सूर सारावली' में संकलित हैं। 'सूरसागर' में उन्होंने श्रीकृष्ण के शैशव और किशोर वय की विविध लीलाओं को स्थान दिया है, इनमें उनकी अंतर्रात्मा गहरी अनुभूति तक उतर सकी है। बालक की विविध चेष्टाओं और विनोदों के क्रीड़ास्थल, मातृ हृदय की अभिलाषाओं, उत्कंठाओं और भावनाओं के वर्णन में सूरदास हिंदी के श्रेष्ठतम कवि हैं।

सूरदास ने ब्रजभाषा में गीतिकाव्य की चली आ रही परंपरा को चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया है। यही कारण है कि कविता, संगीत, नाट्य, चित्र, मूर्त्ति आदि कलाओं का एकत्र समाहार उनके काव्य में पर्याप्त मात्रा में दिखलाई पड़ता है। ब्रजभाषा को ग्रामीण जनपद से उठाकर उन्होंने नगर एवं ग्राम के संधिस्थल पर ला बिठाया। उन्की भाषा में तत्सम शब्दों का प्रचुर प्रयोग है, फिर भी वे सुगम, सरल तथा मनमोहक हैं।

सारांशतः सूरदास का काव्य भक्ति का ऐसा काव्य है, जिसके प्रवाह में पाठक और श्रोता–दोनों बहने लगते हैं। वे पाठकों एवं श्रोताओं पर कृष्ण–भक्ति की ऐसी छाप डालते हैं कि उनका प्रभाव स्थायी बन जाता है।

3.(क) 'बिटिया' से यही सवाल किया गया कि 'बतलाओ बेटी! तुम्हारे आस–पास कहाँ–कहाँ लोहा हैं ?'

(ख) प्रतिदिन की घटित घटनाओं को लिखना डायरी है। इसमें सुबह से शाम तक के देखी–भोगी गतिविधियाँ एवं क्रिया–कलापों का वर्णन किया जाता है, साथ

ही अपने विचार भी रखे जाते हैं।

(ग) 'जन–जन का चेहरा एक' से कवि का तात्पर्य यह है कि कवि पीड़ित और संघर्षशील जनता को, जो निरंतर संघर्ष कर रहा है, वह चाहे किसी भी देश का हो, किसी भी रंग–रूप का हो, किसी भी संस्कृति और विचारधारा का हो, उसका रूप एक–जैसा है। वह अपने कर्म और श्रम से न्याय, शांति तथा भाईचारे का माहौल बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयासरत है। अतः इन सबों का चेहरा एक है, क्योंकि भावनात्मक स्तर पर उनमें एक नवीन अंतर्वर्ती एकता दिखलाई पड़ती है। यही एकता संघर्षकारी संकल्प के रूप में प्रेरणा और उत्साह का संचार करता है।

(घ) 'मुख देखी नाहीं मनी' का अर्थ है मुख देखकर कुछ नहीं कहा जाना! कबीर पर यह बात इस अर्थ में लागू होता है कि उन्होंने अपनी बात किसी से सुनकर या देखकर नहीं कह दी, बल्कि अपने अनुभव से ग्रहणकर कहा था। कबीर अपनी बातों को कसौटी पर कसकर दूसरों के समक्ष रखते हैं।

(ङ) 'धाँगड़' शब्द का अर्थ है– भाड़े का मजदूर।

(च) प्रवृत्तिमार्ग वह मार्ग है, जिस रास्ते पर चलकर गृहस्थ जीवन को अपनाया जाता हैं यानी नारी युक्त जीवन प्रवृत्ति मार्ग है, जबकि निवृत्तिमार्ग वह मार्ग है, जिस मार्ग में नारी का त्याग किया जाए, अथवा संन्यासी जीवन निवृत्तिमार्ग है।

4.(क) 'अर्धनारीश्वर' शीर्षक निबंध सुप्रसिद्ध कवि एवं गद्यकार रामधारी सिंह दिनकर का प्रसिद्ध निबंध है। 'अर्धनारीश्वर' के बारे में ऐसी मान्यता है कि यह भारत का एक मिथकीय प्रतीक है जिसमें दिनकर अपना मनोनुकूल आदर्श निरूपित होता हुआ देखते हैं। यह आदर्श जो मिथकीय है उनके काव्य एवं गद्य साहित्य–दोनों में ही प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में दृष्टिगोचर होता है।

प्रस्तुत निबंध में वे कहते हैं– 'अर्धनारीश्वर शंकर और पार्वती का कल्पित रूप है, जिसका आधा अंग पुरूष का और आधा अंग नारी का होता है। ' स्वभावतः ये उभय रूप सदियों से आकर्षण का केन्द्र रहा है और दोनों के समन्वय को दिखलाता हैं । नर और नारी का यह चित्रण पूर्ण रूप से समानता को प्रदर्शित करता है जिसमें एक के गुण दूसरे के दोष नहीं हो सकते। अर्थात् पुरूषों में यदि नारियों के गुण आ जाएँ तो इससे उनकी मर्यादा कम नहीं होगी, बल्कि उनकी पूर्णता में अभिवृद्धि ही होगी। दिनकरजी लिखते हैं– 'नारी की पराधीनता तब आरंभ हुई जब मानव जाति ने कृषि का आविष्कार किया। जिसके चलते नारी घर में और पुरूष बाहर रहने लगा। यहीं से जिंदगी दो टुकड़ों में बँट गई। घर का जीवन सीमित और बाहर का जीवन निस्सीम होता चला गया एवं छोटी जिंदगी बड़ी जिन्दगी के अधिकाधिक अधीन होती चली गई। नारी की पराधीनता का संक्षिप्त इतिहास यही है।

पूरे निबंध में दिनकर ने इसी बात पर जोर डाला है कि नारी, जो काल एवं परिस्थिति विशेष के प्रभाव के कारण पराधीनता की शिकार बनी है, उसे उचित सम्मान दिया जाना चाहिए। चूँकि नर और नारी एक ही द्रव्य की ढली दो प्रतिमाएँ हैं। आरंभ में दोनों बहुत कुछ समान थे। आज भी प्रत्येक नारी में कहीं–न–कहीं एक प्रत्येक नर में कहीं–न–कहीं एक क्षीण नारी छिपी हुई है। किंतु सदियों से नारी अपने भीतर के नर को और नर अपने भीतर की नारी को बेहतर दबाता आ रहा है। इसका परिणाम यह हुआ है कि नारी एवं नर वर्ग अपने–अपने कर्तव्य के पथ से च्युत हो चले हैं। इस संदर्भ में दिनकर जी का मन्तव्य है कि 'पुरूष इतना कर्कश और कठोर हो चुका है कि युद्धों में अपना रक्त बहाते समय उसे यह ध्यान ही नहीं रहता कि रक्त के पीछे जिनका सिन्दुर बहनेवाला है, उसका क्या होगा और न उस सिन्दुरवालियों को ही इसकी फिक्र है कि और नहीं तो, उन जगहों पर तो उनकी राय खुले जहाँ सिंदूर पर आफत आने की आशंका है।' इसीलिए वे कहते हैं कि 'कौरवों की सभा में यदि संधि की वार्ता कृष्ण और दुर्योधन के बीच न होकर कुंती और गांधारी के बीच हुई होती, तो बहुत संभव है कि तब उस समय इतना भारी महाभारत न मचता।'

इस निबंध में उन्होंने प्रवृत्तिमार्ग एवं निवृत्तिमार्ग की भी चर्चा की है तथा यह बतलाने की कोशिश की है कि एक गृहस्थ जीवन अपनाकर नारी का सम्मान करने पर बल देता है, जबकि दूसरा नारी को सम्मान करने पर बल देता है, जबकि दूसरा नारी को तिरस्कार कर संन्यासी जीवन अपनाने को कहता है।

गाँधी और मार्क्स ने भी अपने जीवन में नारी जाति के सम्मान की वकालत की थी। दोनों ऐसे विचारक रहे हैं जिन्होंने मानवता की रक्षा के लिए अपना समर्ग जीवन लगा दिया था। गाँधी जी ने अंतिम दिनों में नारीत्व की साधना की थी। उनकी पोती ने उन पर एक पुस्तक लिखी थी जिसका नाम है 'बापू,मेरी मा'। इस पुस्तक में नारी के स्त्रियोचित गुणों यथा–दया, क्षमा,करूणा, सहिष्णुता एवं भीरूता को भी दिखलाया गया है तथा 'नारी और नर' के आपसी स्नेहिल सामंजस्य को सामने लाने की चेष्टा की गई है। वस्तुतः निबंध सामयिक है तथा आज के संदर्भ में प्रेरणास्पद है।

अथवा

'प्रगीत और समाज' सुप्रसिद्ध विद्वान् आलोचक नामवर सिंह द्वारा रचित निबंध है। यह निबंध उनकी बहुचर्चित पुस्तक 'वांद विवाद संवाद– से लिया गया हैं इस निबंध में हजार वर्षो फैली हिंदी काव्य परंपरा पर ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि के साथ विचार करते हुए 'प्रगीत' नामक काव्य रूप की निरंतरता को हिंदी समाज की जातीय प्रकृति एवं भाव प्रवाह की उपज के रूप में परिभाषित किया गया हैं

कोई भी काव्य–रूप ऐतिहासिक–सामाजिक जरूरतों की उपज एवं संपूरक हुआ करता है। कविता में जब सामाजिक यथार्थ एवं व्यापक जीवन के चित्रण का प्रश्न आता है, तब हमारा ध्यान स्वतः प्रबंध काव्यों एवं लंबी कविताओं की ओर चला जाता

हैं कारण 'प्रबंधकाव्य' ही एक ऐसी विद्या के रूप में प्रतिष्ठित मिलता है, जिसमें मानव जीवन का संपूर्ण दृश्य उपस्थित रहता है। जबकि छोटी कविताओं में तो वैयक्तिक एवं आत्मपरक अनुभूतियाँ ही मिलती हैं जो समाज के विराट फलक को रेखांकित नहीं कर पाती। लेकिन प्रसाद की 'शेर सिंह का शस्त्र समर्पण; 'पेशोला की प्रतिध्वनि; 'प्रलय की छाया, 'कामायनी' तथा निराला की 'राम की शक्तिपूजा' तथा 'तुलसीदास' –ऐसे आख्यान–पर काव्य हैं, जिनमें सामाजिक उद्देश्य की पूर्त्ति हो जाती है।

मुक्तिबोध की कविताओं में आत्मपरकता है, जो जीवन की तीव्रतम अनुभूति के साथ रची गई है। इनकी कविताओं में जीवन का यथार्थ दिखलाई पड़ता हैं ये कविताएँ प्रभाव पूर्ण होने के साथ–साथ प्रांसगिकता पूर्ण भी प्रतीत होती हैं।

त्रिलोचन की चर्चा करते हुए नामवर सिंह ने बतलाया है कि उन्होंने कुछ चरित्र–केन्द्रित लंबी वर्णनात्मक कविताओं के साथ–साथ कुछ सॉनेट और गीत भी लिखें हैं। जीवन, जगत और प्रकृति के जितने भी रंग–विरंगे चित्र हैं, वे सब–के–सब त्रिलोचन की रचनाओं में दिखलाई पड़ती हैं। उनका एक काव्य–संग्रह है– 'उस जनपद कवि हूँ' जिसमें कवि ने पूरे सामाजिक जीवन के परिदृश्य का चित्रण किया है।

नार्गाजुन का कवि–व्यक्तित्व पाठकों को सदैव आकर्षित करता रहा है। वे कबीर की तरह अक्खड़ और फक्कड़ रहे हैं। जिनकी रचनाओं में सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह का भाव दिखलाई पड़ता है। वे रचनाएँ 'देखन में छोटन लगे, घाव करे गंभीर' के भाव को प्रदर्शित करती हैं।

तुलसीदास के विनय के पदों में जीवन का विराट संग्राम है। काम, क्रोध, लोभ,मोह, मत्सर एवं ईर्ष्या–द्वेष ऐसे दुर्गुण हैं जिनके उनमूलन से ही सुखमय जीवन को परिकल्पना की जा सकती है। इनके गीतों में पूरे युग की वेदना समाहित है। उनके गीत 'स्वान्तः सुखाय' नहीं होकर 'परान्तः सुखाय' वन गए हैं, जो सामाजिकता को प्रदर्शित करता हैं

तुलसी के अलावा कबीर, सूर, मीरा, नानक और रैदास के गीतों में भी वह सामाजिकता है, जिसकी उनके समय में माँग थी। उस दृष्टि से इन भक्त कवियों के योगदान को नजर अंदाज कदापि नहीं किया जा सकता।

विद्यापति भी एक सफल गीतकार कवि रहे हैं, जिनके गीतों की स्वर लहरी मिथिला की अमराइयों में अनुगूँजित रही हैं। आज वे गीत विश्व पटल पर छा गई हैं तथा अपने वैश्विक परिदृश्य के कारण लोक मंगल का स्थान पा रही है। इसी तरह मैथिलीशरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, शमशेर बहादुर सिंह आदि की रचनाओं में जो 'प्रगीत' हैं,वे समाज से गहरा सरोकार रखती है हैं। कहना नहीं होगा कि पिछले पाँच–सात वर्षों में 'कविता' विद्या की पुनः प्रतिष्ठा हुई है, इसके पीछे का मूल कारण वे 'गीत' और 'प्रगीत' हैं, जिनमें जिवन का विराट चित्रण है, सामाजिक जीवन का यथार्थ है और सुख–दुःख का अभाव और मानवीय

प्रेम भी है।

(ख) 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कविता है। जिस कविता की भाव–भूमि चतुर्दिक उमड़ते–घुमड़ते शोक से आवेष्टित है। ऐसे क्षेणों में उड़ा श्रद्धा को आश्रय प्रदान करती हैं मूर्च्छित मनु को देख श्रद्धा–दयार्द्र हो उठती है।

श्रद्धा और मनु का मिलन होता है। श्रद्धा की कोमल भावनाएँ चतुर्दिक शांति का प्रसार करना चाहती हैं। यहाँ श्रद्धा हृदय का प्रतीक है। उड़ा वृद्धि का प्रतीक है। मनु मन का प्रतीक है। ऐसे में मन के स्तर पर कोलाहल का पारावार कवि मन को आंदोलित करता है। कवि के शब्दों में–

"तुमुल कोलाहल कलह में

मैं हृदय की बात रे मन।

विकल होकर नित्य चंचल,

खोजती जब नींद के पल;

चेतना थक–सी रही तब,

मैं मलय की बात रे मन।"

वस्तुतः व्याकुल आराम खोजता है। आराम तो उसे नारी के स्नेहिल संस्पर्श में ही मिल सकता है। ऐसे क्षेणों में श्रद्धा मनु को विश्राम और चैन देती है। वह वस्तुतः मलय पर्वत से निकलनेवाली 'मलयानिल' हवा जैसी प्रतीत होती है। प्रसाद जी के अनुसार 'मन बड़ा चंचल है, वह कभी थकना नहीं जानता, किंतु शरीर पर उसका प्रभाव जब पड़ता है, तो 'शरीर' जरूर थक जाता है। अतः 'श्रद्धा' जीवन की घाटियों में जल युक्त बरसात है, जहाँ एक–एक बूँद पानी के लिए सभी पिपासित बने रहते हैं। दुनिया जेठ की वह तपती दुपहरी है लेकिन ऐसे समय में श्रद्धा ही 'ठंढक' पहुँचाती है। यही इस कविता का मूल भाव है।

(ख) **अथवा**

रीतिकाल के समस्त कवियों में भूषण श्रेष्ठ हैं, क्योंकि वे जातीय स्वाभिमान, आत्म गौरव, शौर्य एवं पराक्रम भावना से परिपूर्ण कवि रहे हैं।

पहला कवित्त छत्रपति की प्रशंसा में रचा गया है। इनके संबंध में कवि का कथन है कि जिस प्रकार इंद्र का यम पर अधिकार होता है और समुद्र की आग बड़वाग्नि–समुद्री जल को शांत करती है, ठीक उसी प्रकार छत्रपति शिवाजी की शक्ति और उनका प्रभाव है। जिस प्रकार भगवान शंकर 'कामदेव' पर ,परशुराम 'सहस्त्रार्जुन' पर भगवान् कृष्ण 'कंस' पर विजय पताका लहराए थे उसी प्रकार इनका भी व्यापक

प्रभाव देखने को मिलता हैं। वस्तुतः वे हिन्दुओं के मान–रक्षण एवं मान–वर्द्धन में निरंतर सहयोग करते रहे हैं।

दूसरे कवित्त में कवि ने राजा छत्रसाल की वीरता का बखान किया है। कवि के अनुसार म्यान से निकलनेवाली उनकी तलवार सूर्य की तरह प्रखर और वेगवान है। वह तेज धारदार तलवार विशाल गजराज के समूहों को छिन्न–भिन्न कर देने के लिए पर्याप्त हैं। दुश्मनों के गले में वह नागिन–सी लिपटती है। कटे हुए नर–मुंडों की मालाएँ क्षण–क्षण तैयार हो रही हैं, ऐसा लगता है कि राजा छत्रसाल रूद्र भगवान को रिझा रहे हों। राजा छत्र साल महाबली योद्धा हैं। उनकी प्रशंसा कहाँ तक की जाय ? ऐसा लगता है कि छत्रसाल की तेज धारदार तलवार शत्रुओं के जाल को काटकर रणचंडी की भाँति किलकारी भरती हुई काल को ग्रास बना रही हैं।

प्रस्तुतः यह कवित्त भयानक रस का संचार करता है। ऐसा लगता है कि उनका यह वर्णन आँखों के सामने नाच रहा हो। ये कवित्त स्वाभिमान, आत्मगौरव एवं पराक्रम के भाव जगाने के लिए पर्याप्त हैं।

5.1.का उत्तरः–(1)–(घ), (2)–(ग), (3)–(क), (4)–(ड़), (5)–(ख)

2.का उत्तर–(1)–(क), (2)–(ग), (3)–(ख), (4)–(ख), (5)–(ख)

3.का उत्तर– (क)–यथार्थ, (ख)–फौज, (ग)–राम, (घ)–हार–जीत, (ड़)–हिंदी

6.(क) प्रस्तुत अवतरण 'बातचीत' शीर्षक निबंध से लिया गया है, जिसके कारण लेखक बालकृष्ण भट्ट हैं। इन पंक्तियों में बातचीत करने के तरीके पर विचार किया गया है।

लेखक का मन्तव्य है कि अपने आपसे बातचीत करने का सबसे उत्तम तरीका है। यह संसार प्रपंचात्मक है जिसके कारण भीतरी मनोवृत्ति नए–नए रंग दिखला देती है और हमारे ऊपर हमारा खुद का नियंत्रण नहीं हो पाता। सच तो यह है कि जीवन में अनेक तरह की परिस्थितियों आती रहती हैं और उसी के अनुसार हम अपनी बातचीत के लहजे में ढलते हैं। अतः हम किसी में दुर्गुण या सद्गुण देखना चाहेंगे, तो यह बातचीत से पता चल जाएगा, लेकिन यदि हम अपने मन पर नियंत्रण रखते हैं, तो वह हमारे लिए एक अच्छा गुण होगा तथा हम किसी के साथ अच्छी बातचीत कर पायेंगे।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर द्वारा लिखित 'अर्धनारीश्वर' शीर्षक निबंध से ली गई हैं। इन पंक्तियों में लेखक ने बतलाया है कि 'नारी' का गुण पुरूष में अवश्य होना चाहिए। नारी में त्याग, समर्पण और मानवीय प्रेम का गुण होता हैं । यदि ये गुण पुरूष में नहीं हैं, तो वह पुरूष' अपूर्ण' साबित होगा।

इन पंक्तियों में लेखक ने नारी के गुणों की प्रशंसा करते हुए इसे पुरूष वर्ग के लिए जरूरी बतलाया है।

6.(ख) प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर गजानन माधव मुक्तिबोध द्वारा रचित 'जन–जन का चेहरा एक' से लिया गया हैं। इन पंक्तियों में कवि ने बतलाया है कि क्रांति निर्माण और विजय का सेहरा प्रायः एक जैसा ही रहता हैं चाहे वह किसी भी देश, किसी भी प्रांत एवं किसी भी गाँव का क्यों न हो! कवि ने यहाँ यह बतलाने की चेष्टा की है कि आम आदमी का शोषण के खिलाफ जो संघर्ष है, उसका मूल स्वर एक ही है। उसका किसी देश, प्रांत, गाँव आदि से लेना–देना नहीं है। इन पंक्तियों में कवि ने जन–संघर्ष की वाणी की प्रासंगिकता को स्पष्ट किया है।

वस्तुतः पूरी कविता में जो बात कही गई है वह यह कि आम आदमी की पीड़ा वैश्विक स्तर पर महसूस की जानी चाहिए, जहाँ देश–काल, जाति–सम्प्रदाय आदि का भाव स्पर्श न कर सके।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखित कविता *'पुत्र वियोग'* से ले गई है। इस कविता में कवयित्री ने पुत्र के वियोग की स्थिति में मन में आए विरह जन्य भावों की बड़े ही कारूणिक शब्दों में प्रस्तुति की है।

सुभद्रा कुमारी चौहान कहती है कि पुत्र को बचाने के लाखों उपाय किए गए लेकिन कुछ नहीं हो सका। अतः माता के ऊपर छाया करनेवाला 'पुत्र' का साया उठ गया, वह माता का खिलौना ही तो था, जिसे पाल–पोसकर बड़ा किया था। ऐसे मौके पर माता असहाय हो बैठी रही, कुछ भी किया लेकिन वह सफल नहीं हो पाया और उसका छौना (पुत्र) चला गया।

इन पंक्तियों में तीव्र करूण रस की अभिव्यक्ति हुई है। विरह पूर्ण इन पदों में जो शोकोद्‌गार व्यक्त हुए हैं, वे बेहद मर्मस्पर्शी हैं।

7. दिए गए अवतरण की शब्द संख्या–115

संक्षेपण की शब्द संख्या–38

शीर्षक– समय का महत्त्व

समय किसी व्यक्ति की प्रतीक्षा नहीं करता। प्रकृति के हरेक अंग–उपांग कर्म में निमग्न हैं। अतः विद्यार्थी जीवन में समय के महत्त्व को भली प्रकार समझना चाहिए। आगे बढ़ने के लिए इससे बड़ा दूसरा मार्ग नहीं हो सकता।

8. सेवा में,

प्रधानाचार्य,

राजकीयकृत महेश उच्च माध्यमिक विद्यालय,

अनिसाबाद, पटना– 800002 (बिहार)।

विषयः दो दिनों की छुट्टी के लिए आवेदन।

महाशय,

निवेदन पूर्वक सूचित करना है कि मेरे भाई की शादी दिनांक 2.5.2016 को होनेवाली है तथा उस रोज आरा शहर में बारात के साथ जाना है।

अतः श्रीमान् से विनम्र निवेदन है कि मुझे दिनांक 2.5.16 से 3.5.16 तक दो दिनों की छुट्टी प्रदान करें। इसके लिए आपका मैं आजीवन आभारी रहूँगा।

आपका स्नेहभाजन,

सिद्धांत कुमार

कक्षा–7 (विज्ञान)

दिनांक–1.5.2016 क्रमांक–6

अथवा

सेवा में,

संपादक जी,

दैनिक हिन्दुस्तान,

एच.टी.मीडिया लिमिटेड, बुद्ध मार्ग,पटना–800001(बिहार)

विषयः– अपने क्षेत्र में कानून–व्यवस्था के बिगड़ने के संबंध में!

महाशय,

निवेदन पूर्वक सूचित करना है कि मेरे क्षेत्र में आए दिन जमीन से संबंधित विवाद पैदा होते रहते हैं। इसका कारण यह है कि मेरे क्षेत्र में अभी भी बहुत सारी खाली परती जमीन है, जिसे दलाल एक ही जमीन को कई–कई लोगों के हाथों बेच देते हैं। जिससे लड़ाई मार–पीट तथा गाली–गलौज की नौबत आ जाती हैं सड़कों पर चलना मुश्किल हो जाता है तथा अक्सर अपराधी प्रवृत्ति के लोगों का आना–जाना शुरू हो जाता है। ऐसे किस्म के लोग इन क्षेत्रों में लूट–पाट भी कर बैठते हैं ताकि दहशत की स्थिति बनी रहे।

अतः श्रीमान् से करबद्ध निवेदन है कि इस क्षेत्र में पुलिस गश्ती दल तेज की जाय तथा कुछ पुलिस बल की यहाँ नियुक्ति कर दी जाय ताकि आम नागरिक भय मुक्त वातावरण में रहकर घर से निर्भय हो आ–जा सकें। बच्चे भी ठीक से अपनी पढ़ाई कर सकें तथा हो–हल्ला शांत हो सकें। इसके लिए पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती की जाय।

इस पुनीत कार्य के लिए हम आपके विशेष आभारी बने रहेंगे।

निवेदनः–

वेदव्रत कुमार, वैदेही कुमारी

एवं अन्य नागरिक गण, अगमकुआँ, पटना।

७.(क) सदाचार का महत्त्व

जीवन में सदाचार का विशेष महत्त्व है। 'सदाचार का अर्थ है श्रेष्ठ आचार या आचरण। व्यक्ति अपने आचरण एवं व्यवहार से ही पहचाने जाते हैं।

छात्र जीवन में सदाचार का महत्त्व सीख लेने से चरित्र निर्मल और पवित्र बना रहता हैं दोष–दुर्गुण का संस्पर्श नहीं हो पाता। यह हमें नैतिकता का पाठ पढ़ाता हैं वस्तुतः जीवन के सारस्वत विकास के लिए 'सदाचार' संजीवनी का काम करता है।

महात्मा गाँधी जी सदैव सदाचरण का पालन करते रहे। इसी कारण उनमें गजब की आध्यात्मिक शक्ति थी। वे सत्य, अहिंसा तथा सहिष्णुता के बल पर अपने जीवन को उस ऊँचाई तक ले गए, जिसकी कभी किसी ने परिकल्पना नहीं की थी। बापू के तीन बंदर हमें इसी की शिक्षा देते हैं। वे कहते हैं– 'बुरा मत देखों, बुरा मत बोलो और बुरा मत सुनो।' जो व्यक्ति इन उपदेशों को जीवन में अपना लेगा, वह महान् पुरूष बन जाएगा; इसमें संदेह नहीं किया जा सकता। बापू ने इसीलिए 'सदाचार' पर जोर दिया था कि इससे आत्मशुद्धि होती है, आत्म बल बढ़ता है तथा चिंतन का नव द्वार खुलता है।

भगवान् श्री राम 'सदाचार' की प्रतिमूर्त्ति थे। वे मातृ–भक्ति, पितृ–भक्ति एवं गुरू–भक्ति के आदर्श थे। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में लिखा भी हैः

'प्रातः काल उठि कै रघुनाथा।

मातु पिता गुर नावहिं माथा।।'

यही राम का स्वभाव था। वे प्रतिदिन सुबह उठकर माता, पिता एवं गुरू को सिर नवाते थे। यह आचरण हमें सदाचार धर्म का पालन करने के लिए प्रेरित करता हैं। यदि हम पूरी राम–कथा का अवलोकन करेंगे, तो स्पष्ट परिलक्षित होगा कि 'राम कितने सदाचारी पुरूष थें।' राम सदैव प्रजापालन में तत्पर रहा करते थे। राजा बनने के बाद उनके मन में सदैव यही भावना भरी रही कि उनके राज्य में कोई भी प्रजा दुःखी और दरिद्र न हो, सब सुखी रहें, आपस में प्रेम करें तथा धर्म के अनुकूल आचरण भी करें–

'राम राज्य कोउ दुखी न दीना।

नहिं कोउ अबुध न लक्षण हीना।।

सब नर करहिं परस्पर प्रीति।

चलहिं स्वधर्म निरत श्रुतिनीति।।'

आज इस प्रसंग पर विचार करने की परम आवश्यकता हैं आज चतुर्दिक सदाचार–भाव का लोप हो रहा है।, लोग न तो माता–पिता–गुरू की मन से सेवा कर रहे हैं, न बड़े–बुजुर्गो के प्रति आदर–सम्मान का भाव ही रख रहे हैं। ऐसी स्थिति में किशोर एवं युवा वर्ग उच्छृंखल हो चला है, वे अपने–अपने कर्त्तव्य–पथ से च्युत हो चले हैं, वे अपने विराट जीवन के लक्ष्य से भटक गए हैं। ऐसे विषम समय में 'सदाचार' को अपनाने की आवश्यकता हैं हम चाहे किसी भी पंथ, धर्म, सम्प्रदाय या क्षेत्र के हों, सदाचार का महत्त्व सदैव सबों के लिए प्रासंगिक बना रहेगा।

(ख) आपका प्रिय कवि(सूरदास)

सूरदास हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। विद्वानों का अनुमान है कि इनका जन्म दिल्ली के पास 'सीही' गाँव में सन् 1478 ई0 के आस–पास एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। ये किशोरावस्था से ही विरक्त थे। उसी स्थिति में गऊघाट पर इनकी भेंट महाप्रभु वल्लभाचार्य से हुई और उन्होंने उनका शिष्य बनना स्वीकार कर लिया। कहा जाता है कि सूरदास जन्म से ही अंधे थे। फिर भी इनके काव्य में चित्रित विभिन्न दृश्य इस विषय में शंका उत्पन्न कर देते है। सूररचित ग्रन्थ है–

(1)सूरसागर, (2) सूरसारावली, (3) साहितय लहरी, ।

इनकी कीर्ति का प्रबल स्तम्भ है।– सूरसागर। इस महनीय संशक्त कृति में महाकवि सूर ने एक

सफल भक्त तथा एक सफल महाकवि के रूप में अपने भाव को अभिव्यक्ति किया है। सूरदास ने अपने काव्य में जीवन के बहुमुखी स्वरूप को अटाकर उसके कुछ विशिष्ट पक्षों के सौन्दर्य का उद्‌घाटन बड़ी गहराई से किया हैं यह गहराई उन्हें विश्व कवियों की पंक्ति में अन्यतम गरिमा प्रदान करती है। सूर के सम्पूर्ण काव्य के विषयों को हम छः भागों में बाँट सकते हैं–विनय के पद, मुरली वर्णन के पद, भ्रमरगीत के पद, दार्शनिक सिद्धांतों के पद, बाललीला वर्णन के पद और दृष्टि कूट के पद। इन विभिन्न विभागों में सूरदास की बाललीला और भ्रमरगीत के पद विश्व महत्त्वपूर्ण हैं। कविवर सूर का कृष्ण–बाल लीला वर्णन विश्व साहित्य में सर्वश्रेष्ठ समझा जाता हैं । सूरदास बालमनोविज्ञान के आचार्य समझे जाते हैं। उन्होंने बाल कृष्ण की समस्त बाल–सुलभ चेष्टाओं का क्रमिक वर्णन प्रस्तुत किया है। इसलिए सूर के कृष्ण राजकुमार न होकर साधारण परिवार के एक साधारण बालक हैं जिनके हर क्रियाकलाप मौलिक हैं। सूरदास का श्रृंगार–वर्णन भी प्रसिद्ध है। इन्होंने इसके अन्तर्गत कृष्ण के साथ राधा एवं गोपिकाओं के प्रेम का विकास बड़ा ही सजह रूप में प्रस्तुत किया है। इन्होंने श्रृंगार के संयोग और विप्रलम्भ दोनों पक्षों का विशद वर्णन किया हैं वियोग के क्षेत्र में उनकी प्रतिभा का कमाल तो अद्‌भुत है। इनका विरह–वर्णन भ्रमरगीत–प्रसंग के अन्तर्गत लोकप्रिय है। इस प्रसंग में इन्होंने वियोग की तमाम दशाओं एवं अन्तर्दशाओं का अंकन पूरी गहराई ओर व्यापकता के साथ किया है।

सूरदास एक सफल भक्त कवि हैं। एक सफल भक्त के रूप में उन्होंने विनय के पदों में अपने आराध्य देव श्रीकृष्ण का विवेचन किया है लेकिन भक्ति के क्षेत्र में सूर के काव्य में तुलसी के काव्य की गहराई नहीं मिलती है। भक्ति के क्षेत्र में अपेक्षित मर्यादा और पूर्ण आत्म–समर्पण के भाव का यहाँ उस रूप में अंकन नहीं हुआ है, जिस रूप में तुलसी के काव्य में। सूर की काव्य–भाषा सरल कोमल और सहज ब्रजभाषा है।

(ड़) शरद ऋतु

वर्षा ऋतु के जाते ही शरद ऋतु का आगमन होता है। स्वच्छ नीले आकाश में हवा के झोंकों पर उजले धूसर बादल भागे चले आते हैं।

प्रकृति नये रंगों में रंग जाती है। कास और कमल फूल खिल उठते हैं, हरसिंगार, कुमुद, केतकी मस्ती में झूमने लगती हैं, भौंरे गूँजने लगते हैं। पावस की कठिनाईयों से ऊब कर भागे हुए खंजन पक्षी पुनः लौट कर शरद के आगमन की पुष्टि करते हैं। नदियों ओर तालाबों का गन्दा पानी निर्मल हो जाता हैं। मछलियाँ मग्न हो कुलेल करने लगती हैं। दूबों पर मोती जैसे ओस कण चमकने लगते हैं। धूप सुहानी लगने लगती है। खेतों में धान की सुनहली बालियाँ अटखेलियाँ करती हैं।

शरद ऋतु में रास्ते सूख जाते हैं और ग्रामवासियों के अनेक संकट दूर हो जाते हैं। वे वर्षा से जर्जर अपने मकानों की मरम्मत करने में जुट जाते है। रबी की बुआई शुरू हो जाती है, रुका हुआ व्यापार आवागमन की सुविधा से फिर शुरू हो जाता है, देहात तथा शहरों की मंडियों में चहल–पहल फिर बढ़ जाती है।

इस ऋतु में स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। तन और मन ठीक हो तो और क्या चाहिए। सर्वत्र हँसी–खुशी का ही आलम नजर आता हैं। शहर और गाँव सजने लगते हैं। क्यों न सजें ? दुर्गापूजा, लक्ष्मीपूजा, दीपावली, गोवर्धन पूजा, सूर्य व्रत (छठ व्रत) और कार्तिक पूर्णिमा जैसे पर्व–त्योहार भी तो इन्हीं दिनों पड़ते हैं।

शरद ऋतु के आगमन के साथ ही हमें जाड़े का डर सताने लगता है जो गरीबों के लिए दुःखदायी होता हैं ।

सेट–8

हिन्दी

{ प्रश्न }

समय–3घंटे 15मिनट पूर्णांकः100

परीक्षार्थी के लिए निर्देशः

1.परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

2.दाहिनी ओर हाशिये पर दिये गए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

3.परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

1.संक्षिप्त पत्र लिखिएः 6

अपने प्राचार्य के पास एक आवेदन पत्र लिखिए जिसमें छह दिनों की छुट्टी की माँग की गई हो।

अथवा

अपने क्षेत्र में विद्युत् आपूर्त्ति–व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति पर दैनिक हिन्दुस्तान (समाचार पत्र) के संपादक को एक पत्र लिखिए।

2. किसी एक विषय पर निबंध लिखिएः 10

(क) स्वतंत्रता दिवस (ख) भारतीय किसान

(ग) समाचार पत्र (घ) बाढ़

(ड़) महँगाई

3. संक्षेपण करेंः 4

अक्सर एक ही स्थान पर रहने पर हम ऊब जाते हैं। तब हमारी इच्छा होती है कि हम एक जगह से दूसरे स्थानों की सैर करें, वहाँ के वातावरण, रहन–सहन और भौगोलिक स्थिति से परिचित हों। इसे दूसरे शब्दों में पर्यटन कह सकते हैं। पर्यटन को मनोरंजन के साथ–साथ शिक्षा प्राप्ति का भी महत्वपूर्ण साधन माना गया है। हम किताबों में तो लिखे पर्वत, झील, झरने, समुद्र, नदियाँ एवं ऐतिहासिक स्थलों

के बारे में पढ़ते हैं,लेकिन उनका प्रत्यक्ष अनुभव हमें नहीं मिल पाता। अतः छात्रों को ज्ञान प्राप्ति के लिए पर्यटन भी कराया जाना चाहिए।

4. आदिकाल को वीरगाथा काल भी कहा जाता है। इस संबंध में तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। 5

अथवा

रीतिकाल की पाँच विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

कबीरदास या तुलसीदास का काव्यात्मक परिचय दीजिए।

5.सप्रसंग व्याख्या करें। 2×4=8

(क) सच है, जब तक मनुष्य बोलता नहीं, तब तक उसका गुण–दोष प्रकट नहीं होता।

अथवा

जिस पुरूष में नारीत्व नहीं, अपूर्ण है।

(ख) बड़ा कठिन है बेटा खोकर

माँ को अपना मन समझाना।

अथवा

धनि सो पुरूष जस कीरति जासू।

फूल मरै पै मरै न बासू ।।

6.(क) निम्नलिखित प्रश्नों के बहुवैकल्पिक उत्तरों में से सही उत्तर चुनियेः 5

(1) बालकृष्ण भट्ट किस काल के साहित्यकार हैं ?

(क) भारतेन्दु युग

(ख) द्विवेदी युग

(ग) प्रेमचंद युग

(घ) इनमें से कोई नहीं।

(2) 'अर्धनारीश्वर' शीर्षक पाठ के लेखक कौन हैं ?

(क) महादेवी वर्मा (ख) नामवर सिंह

(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर' (घ) *मोहन राकेश*

(3) प्रेमचंद की निम्नलिखित में से कौन–सी रचना हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित की गई है ?

(क) बातचीत

(ख) जूठन

(ग) उसने कहा था

(घ) पूस की रात

(4) 'उषा' शीर्षक कविता के कवि कौन है ?

(क) सुभद्रा कुमारी चौहान

(ख) शमशेर बहादुर सिंह

(ग) महादेवी वर्मा

(घ) तुलसीदास

(5) कबीरदास किस काल के कवि हैं ?

(क) आदिकाल (ख) भक्तिकाल

(ग रीतिकाल (घ) आधुनिक काल

(ख) सही जोड़े का मिलान कीजिएः 5

(1) उसने कहा था	(क) जयप्रकाश नारायण
(2) प्रगीत और समाज	(ख) जे.कृष्णमूर्त्ति
(3) शिक्षा	(ग) अशोक वाजपेयी
(4) हार–जीत	(घ) नामवर सिंह
(5) संपूर्ण क्रांति	(ड़) चन्द्रधर शर्मा'गुलेरी'

(ग) रिक्त स्थानों को भरिएः 5

(क) तुलसीदास..... के कवि हैं। (भक्तिकाल/रीतिकाल)

(ख) वैशाली में .....का जन्म हुआ था। (भगवान बुद्ध/भगवान महावीर)

(ग) 'बातचीत' ..... विधा की रचना है। (निबंध/नाटक)

(घ) जो..... छोड़कर भागता है, उसे गोली मार दी जाती है। (फौज/मौज)

(ड़) 'उसने कहा था' कहानी का नायक .....है। (बोधा सिंह/ लहना सिंह)

7. निम्नलिखित दो दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 10

(क) 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी का सारांश लिखिए

अथवा

'शिक्षा' शीर्षक पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) 'पुत्र–वियोग' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखिए।

अथवा

'प्यारे नन्हें बेटे को' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।

8. निम्नलिखित लघु उत्तरीय प्रश्नों में से किन्हीं छः के उत्तर दीजिएः $2 \times 6 = 12$

(क) डायरी क्या है ?

(ख) गैंग्रीन क्या है ?

(ग) कृष्ण खाते समय क्या–क्या करते हैं ?

(घ) कबीर के ईश्वर का रूप कैसा है ?

(ड़) बातचीत का तरीका क्या है ?

(च) 'शिक्षा' से क्या अभिप्राय है ?

9.(क)किन्हीं पांच के संधि–विच्छेद कीजिए। 5×1½ = 7½

परोपकार, नमस्कार, पुस्तकालय, जगन्नाथ,

पूजनोत्सव, विद्यार्थी, रामायण, परमेश्वर

(ख) किन्हीं पाँच के विग्रह कर समास बताइए। 5×1½ =7½

महात्मा, राजपुत्र, लम्बोदर, त्रिभुज, चन्द्रमुख,

चौराहा, चन्द्रशेखर, सुख–दुख

(ग) किन्हीं पाँच के दो–दो पर्यायवाची शब्द बताइए। 5×1½ =7½

कमल, फूल, आकाश, सूरज, चन्द्रमा, पानी, सरस्वती, समुद्र

(घ) निम्नलिखित किन्हीं पाँच शब्दों के वाक्य प्रयोग द्वारा लिंग–निर्णय कीजिए।

5×1½ =7½

दाँत, घी, रात, ताला, प्राण, कलम, पुस्तक, परीक्षा

सेट–8

उत्तर (100अंक)

1. सेवा में,

प्राचार्य,

राजकीयकृत डी.वी.आर. के जालान हाईस्कूल

पटना सिटी, पटना।

विषयः– छह दिनों की छुट्टी के लिए आवेदन–पत्र।

महाशय,

निवेदन पूर्वक सूचित करना है कि मेरे पिताजी अचानक अस्वस्थ हो गए हैं। उनके चिकित्सार्थ मुझे दो दिनों की छुट्टी की आवश्यकता है।

अतः श्रीमान् से विनम्र अनुरोध है कि दिनांक 5.12.2016 से 10.12.2016 तक दो दिनों का अवकाश स्वीकृत किया जाय। इस कृपा के लिए मैं आपका सदैव आभारी रहूँ।

आपका विश्वासी छात्र

सुदर्शन कुमार

कक्षा–12 'ब'

क्रमांक–05

विज्ञान संकाय

सत्र–2015–2017

अथवा

सेवा में,

दैनिक हिन्दुस्तान,

बुद्ध मार्ग, पटना–800001

महाशय,

निवेदन है कि मेरे निवास क्षेत्र अगमकुआँ से पटनासिटी की ओर जानेवाली सड़के आये दिन घोर अंधकार से घिरी रहती हैं। यहाँ की छोटी पहाड़ी, बड़ी पहाड़ी, गुलजार बाग आदि की सड़के प्रतिदिन अंधकारमय रहती हैं। इससे यहाँ के लोगों को विशेष असुविधा होती है। रात्रि में चोर–उचक्के घूमते रहते हैं, जिससे आस पास का वातावरण भयावह बना रहता हैं दूर–दराज से काम करके वापस लौटनेवाली महिलाएँ भी अपने आपको असुरक्षित महसूस करती हैं।

अतः संपादक महोदय से निवेदन है कि मेरे इलाके में विद्युत् आपूर्त्ति बहाल करने हेतु अपने स्तर से प्रयास करने की कृपा करेंगे ताकि यहाँ के लोगों को रात्रि में आने जाने में विभिन्न कष्टों से मुक्ति मिल सके।

आपका विश्वासी

सिद्धांत,

शीतलानगर, अगमकुआँ, पटना।

2.(क) स्वतंत्रता दिवस

विभिन्न लोगों के सद्प्रयासों से 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश आजाद हुआ। इस दिन हमें स्वतंत्रता मिली और सर्वत्र अमन–चैन छा गया। लेकिन भूलना नहीं चाहिए कि इस आजादी को पाने में न जाने कितने लोगों ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी न जाने कितनी, माँ–बहनों की माँगों सूनी हो गई थीं।

वस्तुतः इसी 15 अगस्त को हम भारतवासी स्वतंत्रता दिवस की वर्षगांठ मनाते हैं। इस दिन भारत भर में तिरंगा झंडा फहराया जाता है। झंडे को सलामी दी जाती है तथा राष्ट्रगान गाया जाता है। इस अवसर पर छोटे–छोटे बच्चों का उत्साह देखते ही बनता है। यही वह चिर प्रतीक्षित दिवस है, जिसे लोग एक पुनीत दिवस के रूप में मनाते हैं। इस 15 अगस्त को भारत में चाहे शहर हो या गाँव, महल हो या झोपड़ी, विद्यालय हो या कार्यालय, बस हो या ट्रेन–प्रायः सभी स्थलों पर संस्थान के प्रधान व्यक्ति झंडोत्तोलन का कार्य करते हैं।

इस पर्व को मनाने के पीछे एकमात्र यही उद्देश्य है कि हम उन वीर सपूतों

कों याद करें जिन्होंने देश के लिए मर–मिटना स्वीकार किया। इन्हीं देश भक्तों के लिए कहा गया है–

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।

वह हृदय नहीं, वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

देश भक्ति की यह भावना हमें देश के प्रति समर्पित होने के लिए प्रेरित करती है। यह पर्व हमें सतर्क करता है कि स्वतंत्रता की रक्षा करना हमारा दायित्व एवं कर्त्तव्य है।

(ख) भारतीय किसान

भारत की अधिकांश जनता गाँवों में रहती है। गाँववालों का मुख्य धंधा खेती हैं । इसलिए भारत की जनसंख्या में किसान अधिक हैं। किसानों की दशा बहुत अधिक विपत्तिग्रस्त है। किसान चुपचाप दुःख उठाते हैं। यह सचमुच दुर्भाग्य की बात है कि जो सारे राष्ट्र को खिलाते हैं वे स्वयं भूखे मरते हैं।

पहले किसान धनी जमींदारों का खेत जोतते थे। जमींदार किसानों से ज्यादा मालगुजारी वसूल करते थे। जमीन की तरक्की के लिए वे रूपए खर्च नहीं करते थे। किसानों को उपज के लिए वर्षा पर निर्भर करना पड़ता था। सिंचाई का कोई प्रबंध नहीं था। बाढ़ और सूखा बार–बार आते थे। इससे उनहें बड़ा दुःख होता था। इसके अलावा किसान साल में छः महीने बेकार रहते थे। पर, बेकार समय के लिए कोई धंधा नहीं था। इन सबके फलस्वरूप भारतीय किसानों की दशा अधिक दुर्दशाग्रस्त थी।

जबसे भारतवर्ष ने स्वतंत्रता प्राप्त की, तबसे सरकार ने किसानों की दशा सुधारने के लिए बहुत–कुछ किया है। जमींदारी'–प्रथा उठा दी गई है। बाढ़ को रोकने के लिए एवं नहरों के द्वारा पानी पटाने के लिए बड़ी–बड़ी योजनाएँ आरंभ की गई हैं। पूरे गाँव के विकास के लिए सामुदायिक विकास योजना आरंभ की गई हैं। बिजली का प्रबंध गाँवों में भी हो रहा है। नई सड़कें बन रही है। गाँवों को साफ–सुथरा बनाया जा रहा हैं। वैज्ञानिक खाद एवं औजारों की सहायता से वैज्ञानिक ढंग से खेती कराने का प्रयास जारी है। कुछ समय में इन उपायों से भारतीय किसानों का भाग्य अवश्य सुधर जाएगा।

भारतीय किसान युगों से गरीब हैं। इसलिए वे भाग्यवादी हो गए हैं। वे लोक मर्यादा के ख्याल एवं अंधविश्वासों के शिकार हो गए हैं। परतु, क्रमशः वे बुद्धिमान हो रहे हैं। अब वे स्वयं सोचते हैं कि अपना भाग्य कैसे सुधारें।

भारतीय किसानों की एक विशेषता है, जिसका उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए। वे बहुत

सीधे हैं। वे ईमानदार, अतिथि–सत्कार करनेवाले ओर उदार है।

(घ) बाढ़

वर्षा का पानी बड़े–बड़े पहाड़ों एवं समतल भूमियों पर गिरता है। नदी की सतह अधिक नीची होती है, इसलिए वर्षा का सभी पानी नदियों में तथा अन्य निम्र सतहवाली भूमि में चला जाता है । जब जोरों की वर्षा होती है, तब नदी, नाला एवं अन्य स्त्रोत वर्षा के सभी पानी को अपने तल में नहीं रख सकते। तब पानी उनके किनारों पर बह चलता है। यह बाढ़ कहलाती हैं कभी–कभी पहाड़ों पर बर्फ के पिघलने से बाढ़ आती है। इससे नदी के पानी का आयतन बढ़ जाता है। नदी के बाँध टूटने से भी बाढ़ आती है।

कभी–कभी एकाएक बाढ़ आ जाती है। लोग अपने घरों में शांतिपूर्वक रात्रि में सोते हैं। सुबह उठने पर अपने घरों को वे पानी से घिरा हुआ पाते हैं। इससे लोगों पर अकथनीय दुःख और घोर विपत्ति आ जाती है। उनके सामान बह जाते हैं। घर गिर पड़ते हैं और लोग गृहविहीन हो जाते हैं। बहुत–से पुरूष, नारी, बच्चे और जानवर नदी की धारा में बह जाते हैं। बाढ़ फसलों को नष्ट कर देती है और इससे अकाल हो जाता है। इससे व्यापक रोग भी होते हैं। बहुत–से–लोगों के साधन एवं औजार नष्ट हो जाते हैं जिससे उनकी जीविका नष्ट हो जाती है। बाढ़ के समय जानवरों एवं मनुष्यों का पानी की धारा में बहना बहुत ही दयनीय दृश्य होता है। कभी–कभी पूर्ण परिवार नदी की धारा में घर के छप्पर या नाव पर बह जाते हैं। बाढ़ रेलवे लाइन को भी नष्ट करती है और गाड़ियों का आना–जाना असंभव हो जाता है।

बाढ़ के समय सरकार लोगों के कष्टों को दूर करने के लिए विभिन्न प्रकार से प्रयत्न करती है। अकालपीड़ितों की सहायता के लिए दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन दोनों योजनाएँ बनाई जाती है। अल्पकालीन सहायता का तात्पर्य तुरत की सहायता से है। खाद्यपदार्थ, वस्त्र, दवा इत्यादि का वितरण इसके अंतर्गत आते हैं। दीर्घकालीन सहायता का तात्पर्य बीज का मुफ्त वितरण, सरकारी लगान की माफी, घर बनाने एवं परती जमीन के पुनरूद्धार के लिए कर्ज देने से है। जनता द्वारा अराजकीय सहायता समितियाँ भी संगठित की जाती हैं। वे बाढ़पीड़ित लोगों की बहुत सहायता करती हैं।

बाढ़ के बारंबार आगमन को रोकना संभव हैं । नहर खोदकर, नदी के किनारे की सतह को ऊँचा करके तथा नदियों में मजबूत बाँध बाँधकर हमलोग ऐसा कर सकते हैं। इन सबों में अधिक अभियांत्रिक कौशल एवं अधिक खर्च की आवश्यकता होती है। रूपए रहने पर सरकार इन योजनाओं को अकसर कार्यान्वित करती है।

(इ) महँगाई

कमरतोड़ महँगाई का सवाल आज के मानव की अनेकानेक समस्याओं में अहम् बन गया हैं पिछले कई सालों से उपभोक्ता–वस्तुओं की कीमतें आसमान छू रही है।

हमारा भारत एक विकासशील देश है और इस प्रकार की अर्थव्यवस्था वाले देशों में औद्योगीकरण या विभिन्न योजनाओं आदि के चलते मुद्रा–स्फीति तो होती ही है, किन्तु आज वस्तुओं की मूल्य सीमा में निरन्तर वृद्धि और जन–जीवन अस्त–व्यस्त होता दीख रहा हैं। अब तो सरकार भी जनता का विश्वास खोती जा रही है। लोग यह कहते पाए जाते हैं कि सरकार का शासन–तंत्र भ्रष्ट हो चुका है, जिसके कारण जनता बेईमानी, नौकरशाही तथा मुनाफाखोरी की चक्कियों तले पिस रही हैं ।जिस कारण स्थिति विस्फोटक बन गई हैं ।

यह मंहगाई स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद लगातार बढ़ी है। यह भी सत्य है कि हमारी राष्ट्रीय आय बढ़ी है ओर लोगों की आवश्यकताएँ भी बढ़ी है।

हमारी सरकार द्वारा निर्धारित कोटा–परमिट की पद्धति ने दलालों के नये वर्ग को जन्म दिया है और इसी परिपाटी ने विक्रेता तथा उपभोक्ता में संचय की प्रवृत्ति उत्पन्न कर दी है। प्रशासन के अधिकारी दुकानदारों को कालाबाजारी करने देने के बदले घूस तथा उद्योगपतियों को अनियमितता की छूट देने हेतु राजनीतिक पाटियाँ घूस तथा चन्दा वसूलती हैं।

महँगाई ने विभिन्न वर्ग के कम्रचारियों को हड़ताल–आन्दोलन करने के लिए भी बढ़ावा दिया है, जिससे काम नहीं करने पर भी कर्मचारियों को वेतन देना पड़ता है। जिससे उत्पादन में गिरावट और तेयार माल की लागत में बढ़ोत्तरी होती है।

महँगाई की समस्या का अन्त सम्भव हो तो कैसे, यह विचारणीय विषय हैं। सरकार वस्तुओं की कीमतों पर अंकुश लगाए, भ्रष्ट व्यक्तियों हेतु दण्ड–व्यवस्था को कठोर बनाए एवं व्यापारी–वर्ग को कीमतें नहीं बढ़ाने को बाध्य करे। तात्पर्य यह है कि इस कमरतोड़ महँगाई के पिशाच को जनता, पूँजीपति और सरकार के सम्मिलित प्रयास से ही महँगाई को नियंत्रण में किया जा सकता हैं ।

3. शीर्षक– पर्यटन का महत्त्व

पर्यटन शिक्षा के साथ–साथ मनोरंजन का अभिन्न साधन है। किसी भी स्थल का प्रत्यक्ष दर्शन करके सही जानकारी प्राप्त की जा सकती है। नदी, तालाब, झरने, गुरूद्वारे या मकबरे के बारे में पढ़ने के साथ–साथ उनका साक्षात् दर्शन हो जाए, तो उनसे संबंधित बातें याद भी हो जाती हैं और हमारा ज्ञानार्जन और मनोंरजन भी हो जाता है।

4. आदिकाल को वीरगाथाकाल इसलिए कहा जाता है कि उस काल में वीरगाथात्मक कृतियों की प्रधानता रही थी। इस काल का प्रमुख रचनात्मक विषय युद्धों का यथार्थ एवं वास्तविक चित्रण करना रहा था। यही कारण है कि इस काल में वीर रस के साथ–साथ ओज गुण की प्रचुरता रही। इसीलिए इस काल को वीरगाथाकाल नाम दिया गया।

अथवा

रीतिकाल की पाँच विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) श्रृगारिकता (2) 'रीति' की प्रमुखता, (3) अलंकरण की प्रधानता (4) मुक्तक शैली की प्रधानता और (5) भाषा का परिमार्जन एवं शिल्प का महत्त्व।

अथवा

कबीरदास निर्गुणवादी कवि थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ 'बीजक' नामक ग्रंथ में संकलित हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में पाखंड, दिखावा, छल–कपट, छुआछूत तथा तीर्थाटन का विरोध किया था। उनकी भाषा को सधुक्कड़ी कहा जाता हैं । वे निराकार ब्रह्म के उपासक थे। उन्होंने सरल शब्दों में अपने उपदेश दिए हैं ताकि, साधारण व्यक्ति भी समझ सके। उदाहरण स्वरूप कुछ पंक्तियाँ देखिएः

साई इतना दीजिए जामे कुटुम समाज।

मैं भी भूखा न रहू, साधु न भूखा जाय।।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे ताड़ खजूर।

पंक्षी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

अथवा

तुलसीदास भक्तिकाल के प्रसिद्ध कवि थे। वे सगुण मार्गी राम भक्त थे। उनकी रचनाओं में समन्वयवाद अैर सुधारवाद के स्वर सुनाई पड़ते हैं। उन्होंने राम कथा के माध्यम से ढहते मानवीय मूल्यों को स्थापित किया था। उनकी रचनाएँ हैं– रामचरितमानस, दोहावली, गीतावली, कवितावली, बरवै रामायण, पार्वती मंगल आदि। तुलसीदास का काव्य हमारे चिंतन और विचारों को पुष्ट करता है।

कुछ उदाहरण देखिएः–

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।

परपीड़ा सम नहिं अधमाई ।।

धर्म न दूसर सत्य समाना।

आगन निगम पुराण बखाना।।

5. (क) प्रस्तुत पंक्तियाँ सुप्रसिद्ध निबंधकार बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित *'बातचीत'* शीर्षक निबंध में संकलित है। इन पंक्तियों में 'बातचीत' का महत्त्व बतलाते हुए निबंधकार का कहना है कि मनुष्य के बोलने से ही गुण–दोष प्रकट हो पाते है। बिना बोले यह पता नहीं चल पाता, कि किसी के भीतर किस प्रकार के विचार हैं, वह अच्छा या बुरा, जैसा भी हो, यह तो मनुष्य के द्वारा बोलने या आपस की बातचीत से ही जाना जा सकता है।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित *'अर्द्धनारीश्वर'* शीर्षक निबंध से लिया गया है।

इन पंक्तियों में लेखक ने बतलाया है कि पुरूष में नारीत्व के गुण होने चाहिए। चूँकि नारी सहिष्णुता, सहनशीलता, दया, माया, क्षमा, कोमलता आदि गुणों से युक्त होती है, अतः किसी भी पुरूष में ये गुण तो अवश्य ही होने चाहिए। वे कहते हैं कि पुरूष में शूरता, वीरता, साहसिकता का गुण तो होता है, लेकिन इनसे ही कोई पुरूष 'पूर्ण' नहीं हो जाता। ऐसी स्थिति में उनके भीतर नारीत्व के गुणों का विकास होना चाहिए। तभी कोई पुरूष 'पूर्ण' बन सकता है।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियाँ सुप्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता से लिया गया है। इन पंक्तियों में कवयित्री कहती हैं कि बेटा खोकर माँ के द्वारा अपने मन को समझाना बड़ा ही कठिन होता है। माँ को ऐसा लगता है कि उसका पुत्र अब भी जीवित ही है, जबकि ऐसा नहीं होता। सच तो यह है कि ऐसी स्थिति में माँ के मन में यह भ्रांति बनी रहती है कि उसका मृत पुत्र अचानक कहीं मिल जाएगा।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियाँ पुस्तक 'दिगन्त' में 'कड़बक' से संकलित मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' के उपसंहार खण्ड से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में कवि ने सन्देश दिया है कि व्यक्ति के अच्छे कार्य उसकी कीर्ति के रूप में उसकी मृत्यु के पश्चात् भी संसार में सदैव विद्यमान रहते हैं।

कवि कहता है कि इस संसार में वह पुरूष धन्य है, जिसके सद्कार्यों के रूप में उसकी कीर्ति संसार में सदैव उसी प्रकार विद्यमान रहती है, जिस प्रकार पुष्प तो एक बार खिलकर मुर्झाकर मर जातैं है, किन्तु सुगन्ध संसार की स्मृतियों में सदैव विद्यमान रहती है। जैसे पुष्प के मरने पर भी उसकी सुगन्ध अमर हो जाती है और उस पुष्प को भी अमर बना देती है, उसी प्रकार व्यक्ति की यश–कृति भी

उसे संसार में अमर बना देती है। कवि इन व्यक्तियों के माध्यम से अपने पद्मावत काव्य के रूप में संसार में सदैव विद्यवान होने की ओर संकेत करता हुआ कहता है कि अब राजा रत्नसेन, रूपवती पद्मावती रानी, सुग्गा और अलाउद्दीन जीवित नहीं है, किन्तु पद्मावत के रूप में उसकी यश की कहानी संसार में सदैव अमर रहेगी।

6.(क) (1)–(क), (2)–(ग), (3)–घ, (4)–ख, (5)–ख

(ख) (1)–(ड़), (2)–(घ), (3)–(ख), (4)–(ग), (5)–ख

(ग)(क) भक्तिकाल (ख) भगवान महावीर (ग) निबंध (घ) फौज (ड़) लहना सिंह

7. *'उसने कहा था'* चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' द्वारा रचित एक प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी में प्रेम भावना की अभिव्यक्ति हुई है। कहानी अमृतसर के भीड़ भरे बाजार से शुरू होती है जहाँ बारह वर्ष का लड़का (लहना सिंह) आठ वर्ष की लड़की (बाद में सूबेदार हजारा सिंह की पत्नी)को ताँगे के नीचे आने से बचाता हैं लड़का अपने मामा के केश धोने के लिए बाजार से दही लेने आया है तो लड़की रसोई के लिए बड़िया लेने आई हैं। दोनों अपने–अपने साथ चलते हैं। कुछ दूर जाने पर लड़का लड़की से पूछता है–'तेरी कुड़माई हो गई ?' लड़की 'धत्' कहकर भाग जाती है। पुनः बाजार में अकसर मिलते रहते हैं। कभी सब्जीवाले के यहाँ, कभी दूधवाले के यहाँ अकसर दोनों मिल जाते और लड़का पुनः वही प्रश्न दुहराता– 'तेरी कुड़माई हो गई ? लड़की पुनः वही जवाब देती है– 'धत्'! यहाँ 'धत्' कहने में स्वाभाविक लज्जा के साथ एक प्यार–सा प्रश्न भी उभरता है कि क्या यही मेरी मँगनी की अवस्था है ?

कुछ समय बाद एक बार फिर वह लड़का बाजार जाता है और उसे फिर वही लड़की दिखलाई पड़ती है। वह लड़का वैसे ही हँसी में चिढ़ाने के लिए पुछ बैठता है– 'तेरी कुड़माई हो गई ?' इस बार लड़की कहती है– 'हाँ, मेरी कुड़माई हो गई। देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू (दुपट्टा)।' यह कहकर लड़की वहाँ से भाग जाती हैं लड़की के इस बार के उत्तर से वह लड़का क्षुब्ध हो जाता है। फिर वह अपने घर पहुँच कर अपने काम में लग जाता है।

इस घटना के बाद वह लड़का सेना में भर्ती होकर अँग्रेजों के तरफ से लड़ने के लिए फ्रांस जाता हैं जहाँ सूबेदार हजारा सिंह, जमादार लहना सिंह, वजीरा सिंह और बोधा सिंह के बीच शौर्य, प्रेम और मस्ती की चर्चाएँ चलती है। बोधा सिंह (सूबेदार हजारा सिंह का बेटा) बीमार है। लहना सिंह बोधा सिंह पर पूरा ध्यान देता है। उसकी हर संभव कोशिश होती है कि बोधा सिंह को किसी चीज की कोई तकलीफ न हो। छुट्टी के बाद घर से काम पर जाते समय वह सूबेदार हजारा सिंह के बुलाने पर उनके घर जाता हैं सूबेदारनी लहना सिंह को पहचान लेती है। सूबेदारनी को याद आता है कि लहना सिंह वही लड़का है, जो पच्चीस वर्ष पूर्व अमृतसर में मिला था और उसे ताँगे के नीचे कुचलने से बचाया था। इस याद से सूबेदारनी के भीतर अतीत का वह स्नेहिल स्पंदन उसे लहनासिंह के प्रति अखंड विश्वास से भर देता है। वह

लहनासिंह से कहती है– 'मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग्य ही फूट गए। सरकार ने बहादूरी का खिताब दिया है, लायलपुर में जमीन दी है, आज नमक हलाली का मौका आया है .... फौज में भर्ती हुए उसे एक वर्ष हुआ है। उसके पीछे चार और हुए पर एक भी नहीं जिया .... तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाए थे। ऐसे ही हम दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।'

कहानी में आगे चलकर युद्ध के मैदान में घावों से नं. 77 सिख राइफल्स जमादार लहना सिंह की मृत्यु हो जाती हैं पूरी कहानी पढ़ने के बाद ऐसा लगता है कि 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी एक प्रेमोत्सर्ग की अमर कहानी है। इस पूरी कहानी में त्याग, समर्पण, देश प्रेम आदि की भावनऐं प्रकट हुई है।

अथवा

जे. कृष्णमूर्त्ति द्वारा रचित *'शिक्षा'* शीर्षक निबंध एक महत्वपूर्ण निबंध है। इनमें उनके शिक्षा संबंधी (भाषण) विचारों को बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

शिक्षा के संबंध में वे कहते हैं कि केवल कुछ परीक्षाएँ पास कर लेना और किसी उद्योग में लग जाना शिक्षा नहीं है। वे कहते हैं कि जीवन अद्‌भुत, असीम, अगाध और रहस्यपूर्ण साम्राज्य है। यदि हम केवल अपनी आजीविका के लिए अपने आपको तैयार करते हैं तो हम अपने जीवन का पूर्ण लक्ष्य ही भुला बैठते हैं। वे जीवन को भली भाँति समझने पर बल देते हैं।

उनकी दृष्टि में शिक्षा संपूर्ण जीवन की प्रक्रिया को समझने में हमारी मदद करती है। वह केवल परीक्षाएँ पास कर लेने, किसी उद्योग–धंधे में लग जाने के योग्य ही नहीं बनाती। हमारा दृष्टिकोण यदि छोटा हो, तो हमारा मन इस छोटी–सी परिधि में चक्कर लगाने के लिए, कुंठित, चिंतित, असंतुष्ट और रूक्ष बन जाता है। ऐसी स्थिति में किशोरावस्था में ही अपने जीवन के विशाल लक्ष्य को ढूँढ़ना होगा। शिक्षा ही उस मेघा शक्ति का उद्‌घाटन करती है जिससे हम भय और पारंपरिक सिद्धांतों की अनुपस्थिति में स्वतंत्रता के साथ चिंतन करने एवं अपने लिए सत्य तथा चिंतन करने एवं अपने लिए सत्य तथा वास्तविकता की खोज कर सकने में समर्थ होते हैं।

शिक्षा का महत्त्वपूर्ण कार्य प्रत्येक मनुष्य को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करना है ताकि वह एक भिन्न समाज से अलग हटकर नए विश्व के निर्माण में शरीक हो सके। शिक्षा तो स्वतंत्रतापूर्ण वातावरण का निर्माण करती है जहाँ व्यक्ति को मेघावी, संयमी और चरित्रवान बनानी है ताकि वह अपने भीतर सत्य की खोज करते हुए चली आ रही अंध परंपराओं को निर्मूल नष्ट कर सके।

(ख) 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित है। इस कविता

में पुत्र के असामयिक निधन के बाद उपजी मनोत्यथा का वर्णन किया गया है। कविता में कवयित्री अपने पुत्र वियोग की मार्मिक वेदना को व्यक्त करते हुए कहती है कि आज संसार की सारी वस्तुएँ हँस रही हैं सभी जगह उल्लास भरी हुई है लेकिन कवयित्री अपने पुत्र रूपी खिलौना के खो जाने पर शोक में डूबी हुई है। उसके भीतर शोक का भाव गहरा गया है और अतीत की वास्तविकता की याद आती है कि उस पर शीतलता का प्रकोप नही आये, इस कारण उसे गोद से नहीं उतारा। वह जिस समय माँ कहकर पुकारता था वह सारे कार्यों को छोड़ कर आ जाती थी। उसके दीर्घायु होने के लिए वे देवता के मन्दिर जाती थीं और नारियल, दूध तथा कभी बताशे चढ़ाकर शीश नवाती थी। फिर भी उसकी आस्था हिल गई। असमय उसके पुत्र की मृत्यु हो गई। पुत्र वियोग से वे तड़प उठीं। उनके अन्तः कारण कराह उठे। वह अच्छी तरह से बोध कर रही हैं अब उसका खोया हुआ धन प्राप्त नहीं होगा। कवयित्री ने इस तरह 'पुत्र वियोग' से संबंधित करूण भाव प्रकट करते हुए भावपूर्ण कविता लिखी है। यह कविता भाव–भाषा एवं कथ्य की दृष्टि से अद्वितीय है।

अथवा

'प्यारे नन्हें बेटे को' शीर्षक कविता विनोद कुमार शुक्ल द्वारा रचित एक प्रसिद्ध कविता हैं । यह कविता एक वार्तालाप शैली में रची गई है।

इस कविता में कवि ने लोहे को कर्म का प्रतीक बताया हैं । वह इसे हर वस्तु में तलाशने की चेष्टा करता है। कवि अपनी प्यारी नन्हीं–सी बिटिया से पूछता है कि बताओं, तुम्हारे आस–पास कहाँ पर लोहा है ? वह नन्हीं–सी बच्ची चारों ओर नजर दौड़ाती है और उसे चिमटा, सिगड़ी, सरसी, दरवाजे की साँकल, कब्जे आदि में लोहा दिखलाई देती है।

आगे कविता में कवि ने स्पष्ट करना चाहा है कि लोहा ठोस होकर भी हमारी जिंदगी में अच्छी तरह घुला–मिला है, वह हमारी जिंदगी के सभी प्रवाहित है, वह हमारे संबंधों के बीच है, वह भी हमारा संबंधी है, अर्थात् लोहा हमारे जीवन का आधार हैं।

इस तरह कवि कहता है कि हर मेहनत कश मजदूर लोहा है। हर दबी और सताई गई बोझ उठाने–वाली औरत लोहा हैं 'दादा' के कंधे पर बैठा लड़का, दादा के लिए बोझ होता है, दादा तब होते हैं 'लोहा'। शादी के बाद जब लड़का बाप बनता है, तब वह अपनी संतान को ढोनेवाला 'लोहा' बन जाता है। इस प्रकार कवि स्पष्ट करता है कि लोहा वही है 'जो भारी बोझ उठाता है।' वस्तुतः 'प्यारे नन्हें बेटे को' शीर्षक कविता एक जिजीविषा की कविता है। यह कविता जीने की इच्छा पैदा करती हैं संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती हैं। दबी–सताई होने पर भी औरत बोझ ढोने को अपना परम कर्त्तव्य समझती है। बोझ उठाने में ही वह अपना जीवन सार्थक माननती है। इसी में उसे अपने जीवन का अर्थ भी प्राप्त होता जाता है। सच तो यह है कि किसी मेहनतकश (श्रमिक या मजदूर)' की मेहनत ने की इच्छा पैदा करता है। कवि के शब्दों में–

'कि हर वो आदमी

जो मेहनतकश

लोहा है

हर वो औरत

दबी सताई

बोझ उठानेवाली, लोहा'। (पृ0 219)

इस प्रकार विनोद कुमार शुक्ल की यह कविता कर्म के प्रति हमें प्रेरित करती हैं कर्म से हमारा जीवन चल सकता है। अतः हमारी सभ्यता लोहे पर यानी कर्म पर टिकी है। हम अपने जीवन में कदम–कदम पर संघर्ष करते हैं। संघर्ष ही हमें नई ऊचाइयाँ प्रदान करता है।

8.(क) डायरी सीमित अर्थ में प्रतिदिन की घटनाओं या दिन–भर में किए गए कार्यो का एक तरह का ब्योरा हैं

(ख) ग्रैंगीन एक प्रकार की बीमारी हैं।

(ग) कृष्ण खाते समय अपने भोजन को कुछ खाते है कुछ गिराते है।

(घ) कबीर के ईश्वर का रूप निर्गुण और निराकार है। उनका कोई आकार–प्रकार नही हैं ना वे जन्म लेते है ना वे अवतार लेते है।

(ड़) बातचीत का तरीका यह है कि हम दूसरों की भी बात सुने तथा जहाँ दो व्यक्ति बात करते रहे वहाँ अचानक पहुँच नही जाए।

(च) 'शिक्षा' से अभिप्राय यह है कि यह मनुष्य को पूर्णतः स्वतन्त्र और आत्मनिर्भर बनाती है। यह हमें विस्तृत और व्यापक बनाती है। यह हमें सीमाओं और संकीर्णताओं से मुक्त करती है।

9.(क) परोपकार– पर+उपकार, नमस्कार– नमः+कार,

पुस्तकालय– पुस्तक+आलय जगन्नाथ– जगत्+नाथ,

पूजनोत्सव– पूजन+ उत्सव, विद्यार्थी– विद्या+ अर्थी,

रामायण– राम+ अयण, परमेश्वर– परम+ ईश्वर।

(ख) महात्मा– महान आत्मा– कर्मधारय

राजपुत्र – राजा का पुत्र– तत्पुरूश समास

लम्बोदर – लम्बा है उदर जिसका– बहुब्रीहि समास

त्रिभुज– तीन भुजाओं का समाहार–द्विगु समास

चन्द्रमुख– चन्द्र–सा मुख– कर्मधारय

चैराहा– चार राहें या चार राहों वाला रास्ता– द्विगु समास

सुख–दुख – सुख और दुख – द्वन्द्व समास

(ग) कमल–नीरज, अरविन्द चन्द्रमा–चाँद, चन्द्र

फूल– पुष्प, सुमन पानी– जल, नीर

सूरज–सूर्य, भास्कर समुद्र–सिंधु, सागर

(घ) दाँत–(पुँ०)– दाँत चमकता है।

घी–(पु०) –घी पिघल गया।

रात–(स्त्री०)– रात बीत गई।

ताला– (पु०)– ताला पुराना है।

प्राण– (पु०)– उसके प्राण निकल गए।

कलम–(स्त्री०) –कलम नई है।

पुस्तक–(स्त्री०)– पुस्तक नई ।

परीक्षा–(स्त्री०)– मेरी परीक्षा चल रही है।

सेट–9

प्रश्न

हिन्दी–100 अंक

समय–3घंटे 15मिनट पूर्णांकः100

परीक्षार्थी के लिए निर्देशः

1.परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

2.दाहिनी ओर हाशिये पर दिये गए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

3.परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

1.किन्हीं दो दीर्घ उत्तरीर्य प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 120 शब्दो में दीजिएः

(क) 'बुनियादी शिक्षा' शीर्षक भाषण का सारांश अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिएः $2\times5=10$

अथवा

'हँसते हुए मेरा अकेलापन' शीर्षक डायरी का सारांश लिखिएः

(ख) 'अधिनायक' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखिए।

अथवा

तुलसी के पदों का अर्थ लिखिए।

2. निम्नलिखित पाँच लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक 60 शब्दों में दीजिएः $5\times2=10$

(क) दिनकर जी का निधन कहाँ और किन परिस्थितियों में हुआ था?

(ख) पुंडलीक जी कौन थे?

(ग) गाँधी जी के शिक्षा संबंधी आदर्श क्या थे?

(घ) हिन्दी की आधुनिक कविता की क्या विशेषताएँ आलोचक ने बताई हैं?

(ड़) जहाँ भय है वहाँ मेधा नहीं हो सकती है। क्यों?

(च) बिटिया को पिता 'सिखलाते' हैं? तो माँ 'समझाती' है। ऐसा क्यों?

3. सप्रसंग व्याख्या करें:– $2 \times 5 = 10$

(क) आदमी यथार्थ को जीता ही नहीं, यथार्थ को रचता भी है।

अथवा

नहीं, फौजी वहाँ लड़ने के लिए हैं, वे नहीं भाग सकते। जो फौज छोड़कर भागता है, उसे गोली मार दी जाती है।

(ख) 'पूरब पश्चिम से आते हैं
नंगे बूचे नर–कंकाल
सिंहासन पर बैठा, उनके
तमगे कौन लगाता हैं।'

अथवा

'आज दिशाएँ भी हँसती हैं
है उल्लासा विश्व पर छाया,
मेरा खोया हुआ खिलौना
अब तक मेरे पास न आया।'

4. गाँवों में लड़कियों के लिए प्राथमिक विद्यालय खोलने के संबंध में शिक्षा मंत्री को एक पत्र लिखिए।6

अथवा

अपने प्राचार्य के पास एक पत्र लिखिए जिसमें दो दिनों की छुट्टी की माँ की गई हो।

5. आधुनिक कालीन साहित्य का परिचय दें। 5

अथवा

अशोक वाजपेयी अथवा नागार्जुन का काव्यात्मक परिचय दिजिए।

6. संक्षेपण करें: 4

छात्र जीवन के लिए परिश्रम एक ऐसा अमोध मंत्र है, जिसके महत्त्व को भुलाया नहीं जा सकता। परिश्रम ही वह सीढ़ी है, जिस पर चढ़कर सफलता की सीढ़ियाँ पार की जा सकती हैं। हमारे देश की संस्कृति यह बताती है कि हम कभी भी आलस्य की गिरफ्त में नहीं पड़े। आलस्य मनुष्य मात्र का ऐसा शत्रु है, जो हमें अवनति की ओर ले जाता है। हम किसी भी क्षेत्र में रहें, किसी भी कार्य में संलग्न रहते हों, हमें सदैव परिश्रम के महत्त्व को समझना चाहिए। इसके लिए माता–पिता, शिक्षक एवं समाज के प्रबुद्ध बुद्धिजीवी वर्ग को आगे आना होगा।

7.(1) सही जोड़े का मिलान करें: 1×5 = 5

(क) तुलसीदास–	(1) जूठन
(ख) कबीरदास–	(2) रामचरितमानस
(ग) सूरदास–	(3) हार–जीत
(घ) अशोक वाजपेयी–	(4) बीजक
(ड़) ओमप्रकाश वाल्मीकि	(5) सूरसागर

(2) निम्नलिखित प्रश्नों के बहुवैकल्पिक उत्तरों में से सही उत्तर चुनें: 1×5= 5

(1)'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता किसकी रचना है?

(क) तुलसीदास (ग) अशोक वाजपेयी

(ख) सूरदास (घ) सुभद्रा कुमारी चौहान

(2) 'ओ सदानीरा' के लेखक कौन है?

(क) अशोक चक्रधर (ख) जगदीश चंद्र माथुर

(ग) राम नरेश त्रिपाठी (घ) नागार्जुन

(3) तुलसीदास किस काल के कवि हैं?

(क) आदिकाल (ग) भक्तिकाल

(ख) रीतिकाल (घ) आधुनिक काल

(4) 'प्रगीत और समाज' शीर्षक निबंध के लेखक हैं–

(क) सरदार पूर्ण सिंह (ग) रामविलास शर्मा

(ख) केसरी कुमार (घ) नामवर सिंह

(5) ओम प्रकाश वाल्मीकि की रचना हैः–

(क) जूठन (ग) हार–जीत

(ख) पुत्र–वियोग (घ) शिक्षा

(3) निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्त्ति करेंः– 1×5= 5

(क) नागार्जुन आधुनिक काल के ..... हैं। (कवि/नेता)

(ख) रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि ..... हैं (मुक्तिबोध/विहारी)

(ग) सूर्य का पर्यायवाची शब्द .....है। (दिनकर/निशाकर)

(घ) महात्मा गाँधी को ..... कहा जाता है। (राष्ट्रपति/राष्ट्रपिता)

(ड़) मीराबाई ..... की भक्त थी। (राम/कृष्ण)

8.(क) सकर्मक और अकर्मक क्रिया में अंतर स्पष्ट किजिएः– 7½

(ख) किन्हीं पाँच के पर्यायवाची शब्द लिखिए– 5×1½ = 7½

पुस्तक, नदी, हवा, दुर्गा, पेड़े, मृत्यु, विद्यालय, रात्रि

(ग) किन्हीं पाँच के समाज–विग्रह करें– 5×1½ = 7½

पथभ्रष्ट, करकमल, चक्रधर, त्रिलोकी, भरपेट, त्रिनेत्र, चिड़िमार,

अकाल पीड़ित

(घ) किन्हीं पाँच के संधि–विच्छेद करेंः 5×1½ = 7½

परीक्षा, स्वागत, दिगम्बर, रामायण, विद्यार्थी, परमेश्वर, वाचनालय, भोजनालय

9. किसी एक पर निबंध लिलिखए: 10

(क) महँगाई (ख) आपका पसंदीदा खेल

(ग) महात्मा गाँधी (घ) विज्ञान की देन

(ड़) समाज–सुधार के विविध आयाम्

सेट–9

हिन्दी–100 अंक

{उत्तर}

1.**(क)** कृष्ण कुमार का प्रसिद्ध है 'बुनियादी शिक्षा' जिस निबंध में लेखक ने गाँव एवं शहर में चल रही शिक्षा–प्रणाली पर विचार किया है। बुनियादी शिक्षा के संबंध में तीन प्रस्ताव दिए गए हैं– एक, हाथ का काम स्कूल में हो, दूसरा, स्कूल की शिक्षा स्थानीय परिवेश से जुड़ी हो तथा तीसरा, स्कूल में जो–जो विषय पढ़ाएँ जाएँ, जो–जो कौशल पढ़ाएँ जाएँ, ज्ञान के जो क्षेत्र वहाँ बच्चों के संपर्क में लाए जाएँ, वे अलग–अलग न होकर संगठित हों, आपस में आबद्ध हों तथा बहुउपयोगी भी हों।

वस्तुतः आज शिक्षा सही अर्थों में सर्वतोपयोगी नहीं है। यह शिक्षा जनसाधारण से दूर हो चुकी है। यह शिक्षा न केवल महँगी हो गई है, बल्कि रोजगारोन्मुखी भी नहीं है। गाँधी जी ने ग्राम स्वराज का सपना देखा था, यह शिक्षा वास्तव में ग्रामीणों को सम्मानपूर्वक जीने तथा गावों को स्वायत्तता प्रदान करने का नूतन संदेश देती है। बुनियादी शिक्षा का मूल उत्स यही है।

(2) **(ख)** **अथवा** -- तुलसी के पदों में राम भक्ति की पवित्र सुरसरि प्रवाहित हुई है। हमारी पाठ्यपुस्तक में तुलसी के दो पद संकलित है। प्रथम पद में माता सीमा की वंदना है। यह वंदना ऐसी है कि भक्त अपनी दीनता, परवशता तथा किंकर्तव्य मूढ़ता के साथ माता के समक्ष उपस्थित होता है। वह प्रभु के आसरे पर ही जीवित है तथा उनका ही नाम लेकर अपना पेट भरता है। वह सीता माता से राम जी तक अपना निवेदन पहुँचाता है। यह पद हृदय ग्राह्य तथा मन में भक्ति के पवित्र भाव को जगाता है।

तुलसी का द्वितीय पद कलिकाल वर्णन से प्रेरित हैं ।सूखा और अकाल इस कदर व्याप्त ह। कि कहीं अन्न नहीं मिल रहा है। घोर कलियुग के इस भीषण समय में जीवन दुख–दर्द से पूर्ण है। यह पीड़ा सहन के योग्य नहीं हैं। अतः तुलसी अपनी पीड़ा अपने 'आराध्य राम' को सुनाते हैं। रामजी दया के सागर है, करूणा कें अवतार है तथा शरणागत रक्षक हैं वे अवश्य तुलसी के निवेदन को सुनेगें तथा उनकी पीड़ा का हरण करेंगे।

तुलसीदास के अनुसार भूखे पेट भजन तो कत्तई संभव नहीं हो पाएगा। अतः वे तद्युगीन सामाजिक विषमताओं से मुक्ति के लिए रामजी से हाथ जोड़ याचना करते है। इन पंक्तियों में भाषा–शैली का लालित्य देखते ही बनता है।

2.(क) दिनकर जी का निधन मद्रास में दिल का दौरा पड़ने से हुआ था।

(ख) पुण्डलीक जी गाँधी जी के परिचित शिक्षक थे, जिन्हें गाँधी जी ने भितिहरवा आश्रम में रहकर बच्चों को पढ़ाने के लिए और ग्रामवासियों के दिल से भय को दूर करने के लिए रखा था।

(ग) गाँधीजी के शिक्षा–संबंधी आदर्श थे–'बालकों का सर्वांगीण विकास; जिसके अंतर्गत मानसिक, शरीरिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास तथा इन्हीं विकास की भीत्ति पर बच्चों के शिक्षा की नींब डालना चाहतें थें। बहरहाल, उनका यही आदर्श था कि बच्चे अपने बाल्यकाल से ही सच्चरित्र, मेहनतकश, ईमानदार एवं कर्त्तव्यनिष्ठ बनें।

(इ) जे. कृष्णमूर्त्ति का कहना था कि जहाँ भय का वातावरण है, वहाँ

मेधा नहीं हो सकती। भय के कारण स्वतंत्रता बाधक बनी रहती है। हम जीवन की विभिन्न परिस्थितियों एवं परंपराओं से भयभीत रहते हैं। इसी कारण हम स्वतंत्र मन–मस्तिष्क से अपना काम नहीं कर पाते।

(च) विनोद कुमार शुक्ल की 'प्यारे नन्हें बेटे को' शीर्षक कविता में पिता एवं माता के व्यवहारों की चर्चा है। उनका कथन है कि विटिया के पिता प्यार से बोलते हैं, जबकि माताएँ पुत्री को समझाती रहती है। यहाँ 'सिखलाना' भी इसी शब्द का पर्याय है, जिसमें मातृ सुलभ स्नेहिलता स्पष्ट दिखलाई पड़ती है।

3.(क) प्रस्तुत पंक्तियाँ सुप्रसिद्ध एकांकीकार मोहन राकेश द्वारा रचित 'सिपाही की माँ' शीर्षक एकांकी से ली गई है। इन पंक्तियों में लड़ाई में फौजी की क्या स्थिति होती है, उसी का वर्णन किया गया है।

जब भागी हुई लड़की जो वर्मा से आती है, उससे मुन्नी पूछती है कि तुम जिस रास्ते से आई हो, उस रास्ते से फौजी नहीं भागकर आ सकते ?

तब लड़की उत्तर देती है– नहीं, फौजी वहाँ लड़ने के लिए है, वे भाग नहीं सकते। जो फौज छोड़कर भागता है, तो उसे गोली मार दी जाती है।

यह सुनकर विशनी सिहर जाती हैं वह कहती है– फौजियों कोभागने की क्या जरूरत है ? उन्हें अपनी मियाद पर छुट्टी मिल जाती है। उसे आना होगा, वह अवश्य आएगा। भागकर वह क्यों जाएगा ? अर्थात् वह पुनः वापस आ जाएगा।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता 'पुत्र वियोग' से अवतरित है। इन पंक्तियों में पुत्र के असामयिक निधन से अपनी अंतः पीड़ा का बड़ा मार्मिक निरूपण हुआ है।

कवयित्री का कथन है कि दसों दिशाएँ बिहँस रही हैं। विश्व आनंद मग्न है,

लेकिन मेरे सिर पर दुःखों का पहाड़ फैला है। वह कहती है कि मेरा पुत्र अब वापस नहीं आ पाएगा, मैं दुःखी हूँ । लेकिन प्रकृति का कण–कण मेरी इन परिस्थितियों से वाकिफ नहीं दिखलाई पड़ती। यह एक मार्मिक प्रसंगोद्भूत कविता है, जिसमें निराला रचित 'सरोज–स्मृति' का भाव उमड़ पड़ा है।

4. गाँवों में लड़कियों के लिए प्राथमिक विद्यालय खोलने के संबंध में शिक्षा मंत्री को एक पत्र लिखिए।

सेवा में,

माननीय शिक्षा मंत्री,

बिहार सरकार, पटना,

विषयः लड़कियों के लिए विद्यालय खोलने का अनुरोध।

महोदय,

बोध गया (गया) तथा उसके आसपास के गाँवों के निवासी आपसे प्रार्थना करते हैं कि कृपया हमारी निम्नलिखित माँग पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जाए।

हमारे क्षेत्र में एक उच्च माध्यमिक विद्यालय तो है, परंतु बालिकाओं के लिए कोई प्राथमिक विद्यालय नहीं है। आपकों तो विदित ही है कि किसी भी राष्ट्र का समुचित विकास तब तक संभव नहीं होता है जब तक कि हम शिक्षा के उद्देश्य को जन–जन तक न पहुँचाएँ। बिहार सरकार की यह स्पष्ट घोषणा भी है कि 'शिक्षा सबसे लिए' अनिवार्य है। पर यदि बालिकाओं को शिक्षा से वंचित कर दिया जाएगा, तो आधी आबादी निरक्षर ही रह जाएगी।

इसलिए हमारा आपसे अनुरोध है कि शीघ्र ही इस क्षेत्र में बालिकाओं के लिए एक प्राथमिक विद्यालय खोलने का प्रबंध करें। विद्यालय भवन बनाने के लिए मेरे पास उचित जमीन है। जिसमें विद्यालय स्थापित हो सकता हैं

आशा है, इस विषय पर शीघ्रातिशीघ्र सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए अपने निर्णय की सूचना हमलोगों के पास तक भेजने की कृपा करेंगे।

दिनाकः 15 जनवरी 2016

भवदीय

वरूण एवं उपर्युक्त क्षेत्र के ग्रामीण

अथवा

सेवा में,

प्राचार्य,

सहयोगी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,

हाजीपुर।

विषयः– दो दिनों की छुट्टी के लिए आवेदन।

महाशय,

निवेदन है कि मुझे अत्यावश्यक कार्य से गाँव जाना है। अतएव मुझे दो दिनों की छुट्टी की आवश्यकता है।

अतः श्री मान् से निवेदन है कि दिनांक– 5.9.16 से 6.9.16 तक दो दिनों की छुट्टी मंजूर की जाय।

आपका विश्वासी।

वेदव्रत कुमार

कक्षा–12,क्रमांक–12

विज्ञान संकाय

5. अथवा

नागार्जुन - नागार्जुन आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर माने जाते हैं। उन्होंने कविता, कहानी उपन्यास आदि विविध विधाओं में अपनी कलम चलाई है। नागार्जुन के जीवन का बाल्यकाल दरभंगा में बीता था। वे बचपन से ही अध्ययनशील थे।

इन्होंने अपने जीवन काल में अनेक स्थलों का भ्रमण किया। अनेक धर्म अपनाए और अंततः लौटकर हिन्दुत्व को ही स्वीकार किया। इनकी कविताएँ धारदार है। सहज और सरल हैं। बिहारी के दोहों की तरह यह भी देखने में छोटें लगता हैं। लेकिन प्रभाव पैदा करता हैं। प्राकृतिक सुषमा युक्त वातावरण की सृष्टि पैदा करने में नागार्जुन को कमाल की सफलता हासिल थी। यहाँ उनकी आरंभिक कविता 'बादल को घिरते देखा है' की कुछ पंक्तियाँ देखने लायक हैः

'ऋतु वसंत का सुप्रभात था,

मंद–मंद था अनिल बह रहा,

बालारूण की मृदु किरणें थीं,

अलग–अलग स्वर्णाभ शिखर थे।'

.....

.....

प्रणय–कलह छिड़ते देखा है।

बादल को घिरते देखा है।'

कहना नहीं होगा, कि नाजार्जुन की कविता में एक ओर प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य है तो दूसरी ओर संवेदना, गेयता और भावमयता भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है। 'अकाल और उसके बाद' और बहुत दिनों के बाद' उनकी प्रसिद्ध रचना है।

नागार्जुन ने 'बलचनमा' उपन्यास लिखकर न केवल उपन्यास–साहित्य की श्रीवृद्धि की थी, बल्कि ग्रामीण परिवेश का यथातथ्य चित्रण कर भारतीय संस्कृति, परंपरा और विचारधारा को भी पाठकों के सामने चित्रपट की भाँति दिखला दिया है। वस्तुतः आधुनिक हिंदी साहित्य के क्षेत्र में नागार्जुन का योंगदान अद्वितीय है। उनकी रचनाओं का संकलन उनके सुपुत्र शोभाकांत ने 'नागार्जुन रचनावली' के नाम कई खंडों में किया है।

6. दिए गए अवतरण की शब्द संख्या–१००

शीर्षकः–परिश्रम का महत्व

छात्र जीवन के लिए परिश्रम एक अमोघ मंत्र है। हमें आलस्य से बचकर आगे बढ़ना चाहिए। हम किसी भी क्षेत्र में रहें, किसी भी कार्य में संलग्न रहें, परिश्रम के महत्व को स्वीकार करना चाहिए।

(संक्षेपण शब्द संख्या –३५)

7. (1)(क) तुलसीदास –(2) (ख)कबीरदास– (4) बीजक,

(ग) सूरदास– (5) सूरसागर, (घ) अशोक बाजपेयी–(3)हार–जीत,

(ड़) ओमप्रकाश बाल्मीकि –(1) जूठन

(2) (1)–(घ), (2)–(ख), (3)–(ग*), (4)–(घ), (5)–(क)*

(3) (क) कवि (ख) बिहारी, (ग) दिनकर (घ) राष्ट्रपिता (ड़) कृष्ण।

8. सकर्मक क्रिया उसे कहते हैं जिसमें क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है। जैसे– राम आम खाता है।

इस वाक्य में 'राम कर्ता है और 'खाने' के साथ उसका कर्तृ रूप से संबंध दिखलाई पड़ता है। जब हम यह पूछते हैं कि राम क्या खात है।? तो उत्तर मिलता है– 'आम' खाता है। यहाँ खाने का संबंध 'आम' से है। अतः 'आम' कर्म कारक है। यहाँ खाने की क्रिया का फल 'आम' पर पड़ता है। अतः यहाँ 'खाना' सकर्मक क्रिया का उदाहारण है।

अकर्मक क्रिया उसे कहते हैं, जिस क्रिया के करने तथा करने के बाद उसका फल एक मात्र कर्ता पर ही पड़ता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते है। जैसे–सीता सोती है। यहाँ 'सोना' एक अकर्मक क्रिया है। 'सीता' सो रही है। सीता कर्ता है। और सोन की क्रिया संपन्न कर रही है। सोने की क्रिया का फल 'सीता' पर ही पड़ रहा है, अतः यहाँ 'सोना' अकर्मक क्रिया का उदाहरण है।

	सकर्मक	अकर्मक
	(1) राम दूध पीता है।	(1) राम हँसता है।
	(2) राधा चाय पीती है।	(2) राधा नाचती है।
	(3) सीता रोटी खाती है।	(3) सीता रोती है।

8.(ख) पुस्तक–ग्रंथ,किताब नदी– तटिनी, सरिता

हवा– वायु, समीर पेड़– गाछ, वृक्ष

रात्रि– रात, निशा विद्यालय– पाठशाला, स्कूल

8.(ग) पथभ्रष्ट– पथ से भ्रष्ट (तत्पुरूष)

करकमल– कमल के समान कर (कर्मधारय)

चक्रधर– चक्र को धारण करता है जो कृष्ण या विष्णु (बहुब्रीहि)

त्रिलोकी– तीन लोकों का समूह– (द्विगु)

त्रिनेत्र– तीन नेत्रों का समूह– (द्विगु)

(घ) परीक्षा– पर+ईच्छा स्वागत–– सु+आगत

दिगम्बर – दिक्+अंबर विद्यार्थी – विद्या+अर्थी

परमेश्वर– परम+ ईश्वर

9. (क) महँगाई

कमरतोड़ महँगाई का सवाल आज के मानव की अनेकानेक समस्याओं में अहम् बन गया हैं। पिछले कई सालों से उपभोक्ता–वस्तुओं की कीमतें आसमान छू रही है।

हमारा भारत एक विकासशील देश है और इस प्रकार की अर्थव्यवस्था वाले देशों में औद्योगीकरण या विभिन्न योजनाओं आदि के चलते मुद्रा–स्फीति तो होती ही है, किन्तु आज वस्तुओं की मूल्य सीमा में निरन्तर वृद्धि और जन–जीवन अस्त–व्यस्त होता दीख रहा हैं अब तो सरकार भी जनता का विश्वास खोती जा रही है। लोग यह कहते पाए जाते हैं कि सरकार का शासन–तंत्र भ्रष्ट हो चुका है, जिसके कारण जनता बेईमानी, नौकरशाही तथा मुनाफाखोरी की चक्कियों तले पिस रही हैं स्थिति विस्फोटक बन गई हैं

यह मंहगाई स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद लगातार बढ़ी है। यह भी सत्य है कि हमारी राष्ट्रीय आय बढ़ी है ओर लोगों की आवश्यकताएँ भी बढ़ी है।

हमारी सरकार द्वारा निर्धारित कोटा–परमिट की पद्धति ने दलालों के नये वर्ग को जन्म दिया है और इसी परिपाटी ने विक्रेता तथा उपभोक्ता में संचय की प्रवृत्ति उत्पन्न कर दी है। प्रशासन के अधिकारी दुकानदारों को कालाबाजारी करने देने के बदले घूस तथा उद्योगपतियों को अनियमितता की छूट देने हेतु राजनीतिक पाटियाँ घूस तथा चन्दा वसूलती हैं।

महँगाई ने विभिन्न वर्गों के कम्रचारियों को हड़ताल–आन्दोलन करने के लिए भी बढ़ावा दिया है जिससे काम नहीं करने पर भी कर्मचारियों को वेतन देना पड़ता है। जिससे उत्पादन में गिरावट और तेयार माल की लागत में बढ़ोत्तरी होती है।

महँगाई की समस्या का अन्त सम्भव हो तो कैसे, यह विचारणीय विषय हैं सरकार वस्तुओं की मीमतों पर अंकुश लगाए, भ्रष्ट व्यक्तियों हेतु दण्ड–व्यवस्था को कठोर बनाए एवं व्यापारी–वर्ग को कीमतें नहीं बढ़ाने को बाध्य करे। तात्पर्य यह है कि इस कमरतोड़ महँगाई के पिशाच को जनता, पूँजीपति और सरकार के सम्मिलित प्रयास से ही नियंत्रण से ही नियंत्रण में किया जा सकता हैं

ख) आपका पसंदीदा खेल

किसी लड़के या लड़की के समुचित विकास के लिए खेल उतना ही आवश्यक है जितना कि अध्ययन । एक से शरीर का विकास होता है और दूसरे से मस्तिष्क का। यही कारण है कि हर स्कूल में विभिन्न प्रकार के खेलों का प्रबंध रहता है। क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल, बॉलीबाल, टेनिस, बैडमिंटन इत्यादि उनमें से कुछ हैं। प्रत्येक विद्यार्थी की अपनी पसंद होती है। कुछ क्रिकेट पसंद करते हैं जबकि बहुत–से विद्यार्थी बॉलीबाल को सबसे अच्छा समझते हैं। जितने भी खेल हैं उनमें मैं फुटबॉल को सबसे अधिक पसंद करता हूँ।

फुटबॉल का खेल बड़ा ही दिलचस्प है। यह दो दलों में खेला जाता है। प्रत्येक दल में ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। इन ग्यारह खिलाड़ियों में एक गोलकीपर, दो फुल बैक, तीन हाफ बैक, और पाँच फारवर्ड होते हैं। खेल के निरीक्षण एवं नियंत्रण के लिए एक रेफरी भी रहता है। एक बड़े मैदान में यह खेल खेला जाता है। खेल के कुछ निश्चित नियम होते हैं। खिलाड़ियों को उन्हें मानना पड़ता हैं।

इसे सबसे अधिक पसंद करने के कई कारण हैं। विदेश खेलों में यह सबसे कम खर्चीला हैं। इसके लिए बृहत तैयारी की आवश्यकता नहीं होती। इसके लिए केवल एक अच्छे फुटबॉल की आवश्यकता होती है जो अधिक दिनों तक चलता है। टीम का संगठन भी कठिन नहीं है; क्योंकि हमारे बहुत–से मित्र इसमें भाग लेने के लिए बराबर ही तैयार रहते हैं। इससे शारीरिक व्यायाम अच्छा होता है। फुटबॉल के खेल में जल्द निर्णय लेने की कला का विकास होता है। हमलोग इससे प्रत्युत्पन्नमतित्व विकसित करते है। फुटबॉल का खिलाड़ी कभी सुस्त नहीं होता। वह मैदान में हमेशा ही सावधान रहता है। मेरे चुनाव का दूसरा महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि इससे सहयोग की शिक्षा मिलती है। इस खेल से खिलाड़ियों में एकता और सहयोग की भावना आती है। इस खेल की अन्य प्रमुख विशेषता अनुशासन है जिसके कारण मैं इसे पसंद करता हूँ। यह खिलाड़ियों को अनुशासन का महत्त्व सिखाता है। खिलाड़ियों को मैदान में कुछ नियमों का पालन करना पड़ता हैं। उन्हें रेफरी का निर्णय मानना पड़ता है। रेफरी अपने निर्णय में गलती कर सकता है, लेकिन खिलाड़ियों को उसे मानना ही पड़ता है। उन्हें अपने कप्तान की आज्ञा माननी पडती है। इन सभी चीजों से आदर्श नागरिक बनने में उन्हें सहायता मिलती है। फिर विदेशी खेल होते हुए भी फुटबॉल भारतीय स्थिति के लिए बहुत अधिक उपयुक्त है। साल में छः महीने यह खेला जा सकता है। इस खेल के संबंध में दूसरी बात यह है कि यह अधिक खर्चीला खेल नहीं है। मैं इस खेल को इसलिए भी पसंद करता हूँ कि इससे पढ़ाई में बहुत ही कम व्यवधान पड़ता है। यह खेल केवल एक घंटे के लिए संध्या में ही खेला जाता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि फुटबॉल यश और प्रसिद्धी प्राप्त करने का अवसर देता है। फुटबॉल के अच्छे खिलाड़ी का लोग अत्यधिक सम्मान करते हैं।

इस खेल की मेरी पसंदगी के ये ही कारण हैं। नवयुवक के लिए फुटबॉल स्फूर्तिवर्द्धक खेलों

में से एक है और मैं इस खेल को बहुत पसंद करता हूँ।

(ग) महात्मा गाँधी

काठियावाड़ के पोरबंदर में एक कुलीन वैश्य–परिवार में मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर,1869ई0 को हुआ था। उनके माता–पिता धनी व्यक्ति थे। पोरबंदर राज्य में उनके पिता, करमचंद उत्तमचंद गाँधी एक उच्च और जवाबदेह पद पर थे।

स्थानीय प्राइमरी एवं हाई स्कूलों में ही उनहोंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। प्रवेशिका परीक्षा पास करने के बाद वे कानूनी पेशा के लिए योग्यता प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड गए। बचपन से ही वे सच्चे और ईमानदार थे। अपने चरित्र के संबंध में वे बड़े सावधान रहते थें।

अपने को वकालत के लिए योग्य बनाकर वे भारतवर्ष आए ओर बंबई हाईकोर्ट में उन्होंने वकालत आरंभ की। अपने मुवक्किल के एक मुकदमें के संबंध में वे दक्षिण अफ्रिका में नेटाल गए। वहाँ उन्होंने देखा कि किस प्रकार भारतवासी दक्षिण अफ्रिका के यूरोपीय निवासियों द्वारा अपमानित किए जाते हैं। उन्होंने नेटाल इंडियन काँग्रेस की स्थापना की। इसके तात्त्वावधान में उन्होंने उन दुःखों को दूर करने के लिए आंदोलन किया, जिनसे भारतवासी पीड़ित थे। उन्होंने सत्याग्रह नाम नए अस्त्र का आविष्कार किया। उन्होंने इस अस्त्र की सहायता से दृढ़तापूर्वक लड़ाई की। वे जेल गए पर अपने संकल्प पर डटे रहे। उन्हें अपने प्रयत्न में काफी सफलता मिली।

उसी समय बिहार में यूरोपियन निलहे (नील की खेती करनेवाले) प्रजा पर बड़ा अत्याचार कर रहे थे। महात्मा गाँधी ने अपने कार्यक्रम का स्थानांतर मोतिहारी में किया। उन्होंने नील के किसानों का पक्ष लिया। उनके हस्तक्षेप से दोनों पक्षों के बीच समझौता हो गया।

महात्मा गाँधी ने अपना असहयोग आंदोलन 1921 ई0 में आरंभ किया। उसी समय से उन्होंने इंडियन नेशनल काँग्रेस को अपने नियंत्रण में ले लिया। उनकी कुशल देखरेख में इंडियन काँग्रेस शक्ति प्राप्त करती गई। देश की आजादी के लिए उन्होंने समय–समय पर कई लड़ाईयाँ लड़ी। उनके योग्य पथ'–प्रदर्शन में देश अपने लक्ष्य पर पहुँच गयां

महात्मा गाँधी भारत के ही सबसे महान पुत्र नहीं थे; बल्कि वे दुनिया के सबसे महान पुरूषों में से एक थे। अपनी राजनीति के कारण वे महान नहीं थे। उनकी महत्ता उनके जीवन के नैतिक दृष्टिकोण में थी। उनके लिए सत्य सद्‌गुण या आदर्श नहीं था। यह उनका जीवन ही था। इसीने उन्हें उस अजेय शक्ति से सज्जित किया जो उनके पास थी। वे किसी से डरते नहीं थे। सत्य और न्याय के लिए वे संसार की सबसे बड़ी शक्ति का भी सामना करने के लिए तैयार रहते थे। उन्होंने गीता का गहन अध्ययन किया था और व्यावहारिक जीवन में वे उसकी शिक्षा का पालन करते थे।

भारतवर्ष की स्वतंत्रता की प्राप्ति में गाँधीजी सफल हुए। वे सारे संसार में सत्य और अहिंसा

की प्रधानता देखना चाहते थे। अभाग्यवश संसार आज दूसरी ओर झुका है। परंतु, संसार का भविष्य तभी सुरक्षित हो सकता है जब यह उने बताएं मार्ग पर चले। कोई दूसरा रास्ता खतरे से भरा है।

दिल्ली में 30 जनवरी, 1948 को प्रार्थना–सभा में जाते समय वे गोली से मार दिए गए। भारतवर्ष ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया उनकी मृत्यु से श्रीहीन हो गई है।

(इ) समाज सुधार के विविध आयाम

व्यक्ति का समूह परिवार कहलाता है और विभिन्न परिवार का समूह समाज। समाज में हर धर्म, हर संप्रदाय एवं हर तबके के लोग रहते है। समाज को सुधारने का प्रयास सदा से होते रहे हैं। आजादी के पूर्व एवं बाद की कई घटनाएँ यह बतलाती हैं कि सती प्रथा, दहेज प्रथा तथा कई अन्य प्रथाएँ समाज में कोढ़ की खाज की तरह इस तरह समाहित रहीं, कि उनसे मानवता भी शर्मसार हो गई। महात्मा गाँधी ने समाज के उत्थान हेतु अनेक कार्य किए तथा उनके सिद्धांतों से भारतीय चिंतन को नई दिशा मिली।

आज हम जिस समाज में जी रहे हैं वह समाज अनेकशः समस्याओं से ग्रस्त है। अशिक्षा, निर्धनता, बेकारी, बीमारी तथा दहेज जैसी अनेक समस्याएँ हमारे समाज को लील रही है। यह घोर चिंता की बात है।

सच तो यह है कि आज की राजनीति भी जातिवाद, वर्गवाद, सम्प्रदायवाद एवं भाई–भतीजावाद से प्रभावित है। नेताओं को समाज की चिंता कम है, अपने परिवार और अपने पद को बचाए–बनाए रखने की फिक्र अधिक है। ऐसे विषम समय में समाज को तोड़नेवाले लोग विशेष सक्रिय हैं तथा वे येन–केन–प्रकारेण तरीके से अपनी स्वार्थ सिद्धि करने में लगे हैं।

आज हम जिस सामाजिक विकास की बात करते हैं, उनमें जल–संरक्षण, ऊर्जा–संरक्षण, पर्यावरण–संरक्षण, स्वास्थ्य–संरक्षण तथा गो–गंगा एवं नारी–संरक्षण की चर्चाएँ होती रही है। नैतिक जीवन मूल्य एवं भारतीय धर्म, संस्कृति एवं परंपरा के संरक्षण की बातें भी होती रही हैं। ऐसे समय में हमारे कुछ पवित्र कर्त्तव्य भी हैं। हमें सामाजिक विकास के लिए सोचना होगा।

निष्कर्षतः समाज के सही विकास से ही भारत का विकास संभव है। भारत धर्मप्राण देश रहा है। यहाँ हिन्दू–मुस्लिम–सिख–ईसाई आपस में भाई–भाई की तरह रहते आए हैं। यहाँ की धर्म एवं संस्कृति एक दूसरे को जोड़नेवाली संस्कृति है। यही धर्म एवं संस्कृति विकासात्मक संस्कृति है। यहाँ का साहित्य, कला एवं संस्कृति हमारे चिंतन एवं विचारधारा का परिष्कार करनेवाली है। यही संस्कृति 'वसुधैवकुटुम्बकम्' का पाठ पढ़ाती है, जिसका अर्थ है हमारी धरती के समस्त प्राणी एक कुटुम्ब के समान है और यही सामाजिक विकास का संदेश भी है।

सेट–10

{ प्रश्न }

हिन्दी

समयः 3घंटे15मिनट पूर्णांकः100

परीक्षार्थी के लिए निर्देशः

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिए गए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

1 संक्षिप्त पत्र लिखिएः 6

दूरदर्शन के केन्द्र निर्देशक को किसी विशेष कार्यक्रम की सराहना करते हुए पत्र लिखिए।

अथवा

अपने प्रधानाध्यापक महोदय को छात्रवृत्ति के लिए आवेदन पत्र लिखिए।

2. किसी एक पर निबंध लिखें। 10

(क़) भ्रष्टाचार (ख) पर्यावरण–प्रदूषण

(ग) डा0 राजेंद्र प्रसाद (घ) साक्षरता अभियान

(ड़) भारत–पाक सम्बन्ध

3. संक्षेपण करेंः 4

अनुशासन की आवश्यकता छात्रजीवन के लिए सबसे अधिक है। वे विवेक–संगत श्रृंखला में बँधे रहने की आदत डाले। उनकी क्षमता बिखरकर नष्ट न होने पाए, उनकी साधना के बादल चट्टान और बंजर पर न बरसे, उनकी लालसा कलंक से काले परे भैरे की लालसा मात्र न बन जाए– इसके लिए छात्रों को व्यवहारिक

जीवन में अनुशासन के नियमों का पालन करना परमावश्यक है। जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन की आवश्यकता पड़ती है। केवल विद्यालय में नही, वरन् परिवार एवं समाज में भी अनुशासन के नियमों का पालन करना चाहिए। उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि पूरी सृष्टि और पूरा ब्रह्माण्ड भी अनुशासन में बँधा है। जीवन में अनुशासन न हो, तो हम आसानी से अराजकता के शिकार हो जाएँगे।

4.रीतिकाल की पाँच विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 10

अथवा

सूरदास या तुलसीदास का काव्यात्मक परिचय दीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या किजिए। 2×4 =8

(क) केवल कुछ दुखों से बचने के लिए अपनी जीवन को समाप्त कर देना तो कायरता है।

अथवा

वसुन्धरा भोगी–मानव और धर्मान्ध मानव एक ही सिक्के के दो पहलू

है ?

(ख) आज दिशाएँ भी हँसती है।

है उल्लास विश्व पर छाया।।

मेरा खोया हुआ खिलौना।

अब तक मेरे पास न आया।।

अथवा

विकल होकर नितय चंचल,

खोजती जब नींद के पल,

चेतना थक सी रही तब ,

मैं मलय की बात रे मन!

6.(1) निम्ललिखित प्रश्नों के बहुवैकल्पिक उत्तरों में से सही उत्तर चुनें: 1×5= 5

(1) 'अर्धनारीश्वर' के लेखक कौन हैं ?

(क) नामवर सिंह (ख) रामधारी सिंह दिनकर

(ग) महादेवी वर्मा (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

(2) सूरदास किस काल के कवि थे ?

(क) आदिकाल (ख) रीतिकाल

(ग) भक्तिकाल (घ) आधुनिक काल

(3) 'रामचरितमानस' के कवि कौन हैं ?

(क) जयशंकर प्रसाद (ख) गोस्वामी तुलसीदास

(ग) नामवर सिंह (घ) रामधारी सिंह दिनकर,

(4) 'हार–जीत' किस विधा की रचना है ?

(क) निबंध (ख) नाटक

(ग) आत्म कथा (घ) कविता

(5) 'प्रगीत और समाज' शीर्षक निबंध के रचनाकार का नाम बताइए।

(क) बालकृष्ण भट्ट (ख) सुभद्रा कुमारी चौहान

(ग) नामवर सिंह (घ) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

(2) सही जोड़े का मिलान कीजिए : 1×5= 5

(1) पृथ्वी (क) जयशंकर प्रसाद

(2) रोज (ख) उसने कहा था

(3) बोधा सिंह (ग) तुलसीदास

(4) कवितावली (घ) नरेश सक्सेना

(5) तुमूल कोलाहल कलह में (ड़) 'अज्ञेय'

(3) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। 1×5= 5

(क) ओम प्रकाश वाल्मीकि की रचना ..... है। (जूठन/शिक्षा)

(ख) सूरदास ..... के कवि है। (भक्तिकाल/ रीतिकाल)

(ग) निरक्षर का विलोम शब्द ..... है। (अक्षर/साक्षर)

(घ) 'उषा' शीर्षक कविता.....की कृति है। (अशोक वाजपेयी/शमशेर बहादुर सिंह)

(ड़) नदी का पर्यायवाची..... है। (सरिता/वसुधा)

7. निम्नलिखित दो दीर्घ उत्तरीर्य प्रश्नों के उत्तर दिजिए। $2 \times 10 = 10$

(क) 'बातचीत' शीर्षक निबंध का सारांश अपने शब्दों में लिखियें।

अथवा

'अर्धनारीश्वर' शीर्षक पाठ्य का सारांश अपने शब्दों में लिखिये।

(ख) 'छप्पय' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिये।

अथवा

'अधिनायक' शीर्षक कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखियें।

8. निम्नलिखित लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर दिजिए। $2 \times 6 = 12$

(क) कवि ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से क्यों की है ?

(ख) प्रथम पद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिये।

(ग) 'दानव दुरात्मा' से क्या अभिप्राय है।?

(घ) बूढ़ा मशकवाला क्या कहता हैं, और क्यों कहता हैं ?

(ड़) प्यार का ईशारा और क्रोध का दुधारा से क्या तात्पर्य हैं ?

(च) चातकी किसके लिए तरसती है ?

9.(क)उपसर्ग और प्रत्यय में अंतर स्पष्ट कीजिए। 5

(ख) किन्हीं पाँच के पर्यायवाची शब्द बनाइए। $1 \times 5 = 5$

पत्नी, पर्वत, पृथ्वी, नर, वृक्ष, रात्रि, समुद्र

(ग) किन्हीं पाँच का संधि विच्छेद किजिए। $1 \times 5 = 5$

विद्यार्थी, हिमालय, स्वागत, पावक, भावुक,उद्योग

(घ) किन्हीं पाँच शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। $1 \times 5 = 5$

भद्र, ऋजु, मोक्ष, सौम्य, अमृत, आधार

(ड़) निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच मुहावरों का वाक्य प्रयोग कर अर्थ लिखिए।

$1 \times 5 = 5$

दाने–दाने को तरसना	दाल न गलना
दो टूक बात कहना	दंग रह जाना
खाक में मिलाना	खून का प्यासा होना

सेट–10

हिन्दी–100

उत्तर

1.

सेवा में,

निदेशक, दूरदर्शन,

मुजफ्फरपुर

महाशय,

आपकी जितनी प्रशंसा की जाए, वह कम हैं मुजफ्फरपुर के मीनापुर थाना क्षेत्र की एक दलित बस्ती के मध्य विद्यालय की सरस्वती पूजा के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम को अपने दूरदर्शन पर प्रसारित कर एक साहसिक और महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इससे आपकी सामाजिक और सांस्कृतिक निष्ठा का पता चलता हैं दूरदर्शन पर इस कार्यक्रम को प्रसारित कर हाशिए पर जी रहे समाज के महत्त्वपूर्ण वर्ग के प्रति आपने अपनी उदारनीति का जो परिचय दिया है, वह सचमुच नए समाज के निर्माण में सहायक होगा।

इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए आपको अनेकशः साधुवाद।

भवदीय

हरेकृष्ण राम

17.02.2016 सरैयागंज, मुजफ्फरपुर

अथवा

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य

आदर्श उच्च विद्यालय, हाजीपुर

द्वारा, वर्ग शिक्षक

महोदय,

सेवा में निवेदन है कि मै आपके विद्यालय का अतीव निर्धन छात्र हूँ। मैं

दशम वर्ग में पढ़ता हूँ। पूर्व की परीक्षाओं में मुझे लगभग अस्सी प्रतिशत अंक प्राप्त हुए है। मेरे पिताजी समाहरणालय में चतुर्थवर्गीय कर्मचारी हैं। उन्हें परिवार चलाने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परिवार की इस दयनीय आर्थिक स्थिति में संभवतः मेरी पढ़ाई पूरी न हो सके।

अतः आपसे अनुरोध है कि मेरी मेधा के आधार पर छात्रवृति दी जाए ताकि मैं माध्यमिक स्तर की अपनी पढ़ाई पूरी कर सकूँ।

एतदर्थ, मैं सदा आपका कृतज्ञ रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी छात्र

निखिल वर्मा

वर्ग दशम, खंड 'अ'

दिनांकः 18 फरवरी 2016 क्रमांक 2

2.(क) भ्रष्टाचार

'भ्रष्ट' और 'आचार' दो पदों के योग से बना है 'भ्रष्टाचार' शब्द, जिसका अर्थ है– निष्कृष्ट आचरण अथवा बिगड़ा हुआ आचरण। भ्रष्टाचार सदाचार का विलोम और कदाचार का समानार्थी माना जाता हैं नीति, न्याय, सत्य, निष्ठा, ईमानदारी आदि नैतिक और सात्त्विक वृत्तियों के विपरीत स्वार्थ, असत्य और बेईमानी से सम्बन्धित सभी कार्य भ्रष्टाचार कहलाते हैं।

भ्रष्टाचार के कारण– मनुष्य को भ्रष्टाचार कब अपनाना पड़ता है और क्यों वह भ्रष्टाचारी बन जाता हैं– उसके अनेक कारण हैं। मनुष्य की आवश्यकताएँ अनन्त हैं जिनकी पूर्ति के लिए वह सदैव से ही प्रयत्न करता आया है। यदि किसी आवश्यकता को पूर्ण करने में उचित माध्यम सफल नहीं होता है तो वह अनुचित माध्यम से उसकी पूर्ति का सफल–असफल प्रयोग करता पाया जाता है। अपने प्रियजनों को लाभ पहुँचाने की इच्छा ने भी उचित–अनुचित साधनों का खुलकर प्रयोग करने को विवश कर दिया है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार व्याप्त है।

धन लिप्सा– धनलिप्सा की वृद्धि ने आज आर्थिक क्षेत्र में कालाबाजारी, मुनाफाखोरी, रिश्वतखोरी आदि को बढ़ावा दिया है। अनुचित तरीकों से धन–संग्रह किया जा रहा हैं नौकरीपेशा व्यक्ति अपने सेवाकाल में इतना धन अर्जित कर लेना चाहता है जिससे अवकाश प्राप्ति के बाद का जीवन सुखपूर्वक व्यतीत हो सके। व्यापारी वर्ग ये सोचता है कि न जानें कब घाटे की स्थिति आ जाये ? सरकार की नीति में कौन–सा परिवर्तन आ जाये ? इसलिए व्यक्ति अपनी तिजोरी भरने में लग जाता हैं कभी–कभी जीवन–यापन के पर्याप्त साधन न होने के कारण भी मनुष्य विवश होकर, धनोपार्जन के लिए अनुचित साधनों का प्रयोग करने लगता है।

भ्रष्टाचार का व्यापक प्रसार– आज जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र मिले जिसमें भ्रष्टाचार न हो। आजकल सर्वत्र भ्रष्टाचार का उद्घोष सुनाई पड़ रहा है। अनेक देशों में मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने का उत्तरदायित्व सरकार ने ले लिया है। अनेक देशों में लोक–कल्याणकारी राज्यों की स्थापना की गयी है तथा मनुष्य को भ्रष्टाचारी बनाने के सभी कारणों को समूल नष्ट करने का प्रयत्न किया जा रहा है, किन्तु वहाँ भी भ्रष्टाचार खत्म नहीं हो पाया है। कहीं–कहीं तो वह रूप बदलकर मानव के साथ लगा हुआ है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार के अनेक उदाहरण मिलते हैं।

राजनीतिक भ्रष्टाचार–गत वर्षो में राजनीतिक भ्रष्टाचार अधिक दिखाई देने लगा है। अनेक आयोग नियुक्त किये गये हैं और अनेक दोषी भी पाए गये है। चारा घोटाला, बोफोर्स घोटाला, शेयर घोटाला, तेलगी काण्ड ये सभी भ्रष्टाचार के बड़े प्रकरण रहे हैं। भ्रष्टाचार के इन प्रकरणों में कई राजनेता भी सम्मिलित रहे हैं लेकिन उनहें दोषी नहीं माना जाता, उनकी प्रतिष्ठा पर कोई आँच नहीं आती है। नेता सेवा की भावना से कार्य नहीं करते, अपितु सत्ता प्राप्ति के लिए देशसेवा का ढोंग रचते हैं। सिद्धान्तहीनता, राजनीतिक, विचारधाराओं में सर्वत्र व्याप्त है। दल–बदल भ्रष्टाचार का एक जग–विदित उदाहरण है। राजकार्यों में धोख, छल, झूठ, विश्वासघात, अविश्वास, हत्या, भ्रष्टाचार आदि दुर्गुण अनेक रूपों में विद्यमान हैं।

आर्थिक जीवन में भ्रष्टाचार–आर्थिक जीवन में भी भ्रष्टाचार अपने चरम पर है। जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं में मिलावट, बन्द पैकिट में वस्तु की अनुपस्थिति, लेबिल कुछ तो सामान कुछ, मूल्यों में अनुचित वृद्धि, कृत्रिम अभाव उत्पन्न कर अधिक लाभ कमाना, थोड़े–से स्वार्थ के लिए झूठ बोल देना आदि विभिन्न रूपों में भ्रष्टाचार का नंगा नाच हो रहा है। सरकारी विभाग भ्रष्टाचार के अड्डे बन चुके है। कर्मचारी मौका पाते ही अनुचित लाभ उठाने से नहीं चूकते।

सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार–सामाजिक जीवन में भी भ्रष्टाचार बढ़–चढ़कर व्याप्त है। रोजाना बलात्कार, चोरी, हत्या, धोखा, अपहरण, अवैध सम्बन्धों की चर्चा, विवाह विच्छेद, नारी अपमान, अस्पृश्यता की समस्या, बच्चों से यौनाचार, बच्चों की हत्या आदि सामाजिक जीवन के भ्रष्टाचार हैं। सम्पूर्ण समाज भ्रष्टाचार की पकड़ में है। धार्मिक संस्थाओं की सम्पत्ति का उपभोग, भगवान् को धोखा देना, दान की वस्तु का दुरूपयोग करना अनेक ऐसे कार्य हैं जो सामाजिक भ्रष्टाचार की श्रेणी में आते हैं।

भ्रष्टाचार को समाप्त करने के उपाय– यद्यपि भ्रष्टाचार को समूल नष्ट नहीं किया जा सकता, किन्तु कम तो किया जा सकता है। जीवन मूल्यों को पहचानने का प्रयत्न करके उनके यथावत् पालन का दृढ़ संकल्प किया जाये। भ्रष्टाचार को मिटाने में धार्मिक–सामाजिक संस्थाओं का सहयोग अवश्य लेना चाहिए। सच्चे धार्मिक आचरण वाले पुरूषों का सम्मान किया जाना चाहिये, समाज सुधारक इस कार्य में उपयोगी सिद्ध हो सकते है। नैतिक शिक्षा का विस्तार किया जाना चाहिए।

कानून से भी भ्रष्टाचार को कम किया जा सकता है। कानून और व्यवस्था इस प्रकार स्थापित की जाये कि लोग उसके शिकंजे से बच न पाएँ। सर्वोत्तम उपाय तो भ्रष्ट लोगों की मनोवृति को बदलना है।

(ख) पर्यावरण–प्रदूषण

पर्यावरण मनुष्य की भौगोलिक एवं बौद्धिक उपज है। अर्थात् मानव जीवन को पर्यावरण की परिस्थितियाँ व्यापक रूप से प्रभावित करती हैं। मनुष्य को एक 'सन्तुलित पर्यावरण' की स्थापना करनी चाहिए। लेकिन आज के इस हर क्षण बदलते युग में 'असन्तुलित पर्यावरण' की स्थापना हो रही है और इसका सबसे बड़ा उदाहरण है– 'प्रदूषण'।

प्रदूषण वास्तव में जलवायु या भूमि के भौतिक रासायनिक और जैविक गुणों में कोई भी अवांछनीय परिवर्तन है जिससे मनुष्य, अन्य जीवों, औद्योगिक प्रक्रियाओं सांस्कृतिक तत्त्वों तथा प्राकृतिक संसाधनों को हानि पहुँचती है।प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है– विश्व की बढ़ती जनसंख्या। विश्व की बढ़ती जनसंख्या के कारण ही आज पेड़ काटे जा रहे हैं जो प्रदूषण का सबसे मुख्य कारण है। वृक्षों का वातावरण को संतुलित रखने में बहुत बड़ा योगदान है।

प्रदूषण कई प्रकार के हो सकते हैं जैसे–

वायू प्रदूषण, जल प्रदूषण,ध्वनि प्रदूषण आदि।

वायु प्रदूषण सबसे अधिक व्यापक और हानिकारक है। वायुमण्डल में सभी तरह के गैसों की मात्रा निश्चित रहती है और अधिकांशतः ऑक्सीजन और नाइट्रोजन होती है। श्वसन, अपघटन और सक्रिय ज्वालामुखियों से उत्पन्न गैसों के अतिरिक्त हानिकारक गैसों की सर्वाधिक मात्रा मनुष्य के कार्य–कलाप से उत्पन्न होती है। इनमें लकड़ी, कोयले, खनिज तेल तथा कार्बनिक पदार्थों के ज्वलन का सर्वाधिक योगदान है।

औद्योगिक संस्थानों से निकलने वाली सल्फाइड ऑक्साइड गैस तथा हाइड्रोजन सल्फाइड गैस आकाश में जाकर वर्षा से मिल जाती हैं और 'ऐसिड रेन' का निर्माण करती हैं जो धरती पर पहुँकर बहुत हानि पहुँचाते हैं। मनुष्यों को इससे चर्म रोग होने की आशंका होती है और पौधों में खाना बनाने वाले 'क्लोरो प्लाष्ट' को हानि पहुँचती है। इन रासायनिक पदार्थों से धरती की मिट्टी को भी हानि पहुँचती है। मिट्टी में रासायनिक खाद दी जाती है। मनुष्य को वायु प्रदूषण के कारण कई तरह की एलर्जी उत्पन्न होती है। अन्य प्रभावों से फेफड़ों के रोग होते हैं।

जल सभी प्राणियों के लिए अनिवार्य वस्तु है। पेड़–पौधे भी आवश्यक तत्त्व जल से ही घुली अवस्था में ग्रहण करते हैं। जल में अनेक कार्बनिक, अकार्बनिक पदार्थ, खनिज तत्त्व गैसें घुली होती हैं। यदि इन तत्त्वों की मात्रा आवश्यकता से अधिक हो जाती है तो जल हानिकारक हो जाता है और इस जल को हम प्रदूषित जल कहते हैं। पीने योग्य जल का प्रदूषण रोग उत्पन्न करने वाले

जीवाणु–विषाणु, कल–कारखानों से निकले हुए वर्जित पदार्थ, कीट–नाशक पदार्थ व रासायनिक खाद से हो सकता है। ऐसे जल के उपयोग से पीलिया, आँतों के रोग व अन्य संक्रामक रोग हो जाते हैं। महानगरों में भारी मात्रा में गन्दे पदार्थ नदियों के पानी में प्रवाहित किये जाते हैं, जिससे इन नदियों का जल प्रदूषित होकर हानिकारक बनता जा रहा है।

महानगरों में अनेक प्रकार के वाहन, लाउडस्पीकर, बाजे एवं औद्योगिक संस्थानों की मशीनों के शोर ने ध्वनि प्रदूषण को जन्म दिया है। ध्वनि प्रदूषण से न केवल मनुष्य श्रवणशक्ति का ह्रास होता है, वरन् उसके मस्तिष्क पर भी इसका घातक प्रभाव पड़ता है। परमाणु शक्ति उत्पादन व नाभिकीय विखण्डन ने वायु, जल व ध्वनि तीनों प्रदुषणों को काफी विस्तार दे दिया है।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि आधुनिक युग में प्रदूषण की समस्या अत्यधिक भयंकर रूप धारण करती जा रही है। यदि इस समस्या का निराकरण समय रहते न किया गया, तो एक दिन ऐसा आयेगा, जबकि प्रदूषण की समस्या सम्पूर्ण मानव जाति को निगल जायेगी।

अतः प्रदूषण से बचने के लिए निम्नलिखित उपायों पर अमल करना आवश्यक है–

(1) वृक्षारोपण का कार्यक्रम तेजी से चलाया जाना चाहिए।

(2) वनों के विनाश पर रोक लगनी चाहिए।

(3) वर्जित पदार्थों के निष्कासन के लिए कोई दूर स्थान पर व्यवस्था करनी चाहिए।

(4) लाउडस्पीकारों का उपयोग कम होना चाहिए।

प्रदूषण से मुक्ति के लिए पूरी धरती के लोगों को सहमत होकर प्रयास करना होगा।

"ध्वनि प्रदूषण" से नुकसान होता है, यह सभी को पता है। लेकिन इसका समाधान भी होना चाहिए। नुकसान का पता उस वक्त नहीं चल पाता। यह बाद में अपना प्रतिकूल असर दिखाता है। सबसे अधिक ध्वनि प्रदूषण से नुकसान छोटे बच्चों और बुजुर्गों को हो रहा है।

ध्वनि प्रदूषण से दो तरह के नुकसान होते हैं। एक अस्थाई दूसरा स्थाई।

इसके मुख्य कारण हैं पावर हार्न और पटाखे 90 डेसिबल से अधिक आवाज यदि सुनने को मिले तो बहरापन भी हो सकता है।

छोटे बच्चों को तो पता भी नहीं चलता कि उन्हें ध्वनि प्रदूषण कब नुकसान कर गया। छोटे वाहनों का हार्न इस्तेमाल किया जाता है। यदि संबंधित विभाग इन वाहनों का स्क्रीनिंग करना शुरू करे तो सच्चाई सामने आ जाएगी।

आजकल तो सुबह में स्कूली बच्चों या फिर अभिभावकों को बुलाने के लिए वाहनों में तेल हार्न का इस्तेमाल किया जा रहा है। यह काफी नुकसानदेह है। इससे चिड़चिड़ापन, बहरापन और ब्लड प्रेशन बढ़ने की आशंका रहती है। प्रदूषण नियंत्रण पर्षद ने इसके लिए डेसिबल भी निर्धारित कर रखा है। बावजूद ध्वनि–प्रदूषण बढ़ रहा है।

अलग–अलग इलाकों के लिए ध्वनि के लिए डेसिबल निर्धारित किया गया है। इसमें आवासीय, वाणिज्यिक, औद्योगिक और अस्पताली क्षेत्र प्रमुख हैं।

आवासीय क्षेत्र में दिन में 55 डेसिबल और रात में 45 डेसिबल, वाणिज्यिक क्षेत्र के लिए दिन में 65 डेसीबल और रात में 55 डेसिबल, औद्योगिक क्षेत्र में दिन में 75 और 70 डेसिबल वहीं दिन में शांत क्षेत्र में 50 डेसिबल जबकि रात में 40 डेसिबल निर्धारित किया गया है। नियम का उलंघन करने पर पाँच साल का सश्रम कारावास और एक लाख रूपए जुर्माना का प्रावधान है।

(ग) डा0 राजेंद्र प्रसाद

. डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद 1883 ई0 में सारण जिले के जीरादेई नामक एक छोंटे गाँव में पैदा हुए थे। उन्होंने प्रायः अपनी शिक्षा कलकत्ता में पाई और वे विश्वविद्यालय की सभी परीक्षाओं में सम्मापूर्वक सफल हुए । वे हमेशा सर्वप्रथम हुए।

कॉलेज के उज्जवल जीवन के बाद उन्होंने कलकत्ता हाईकोर्ट में वकालत शुरू की। जब पटना हाईकोर्ट की स्थापना हुई तब उन्होंने पटना में वकालत शुरू की। वे बहुत ही सफल वकील साबित हुए। अगर वे अपने व्यवसाय में लगे रहते तो बहुत अधिक पेसा कमाते और हाईकोर्ट के जज हो गए होते। परतु, तब भारतवर्ष एक बड़े नेता से वंचित रह जाता।

डॉ0 राजेंद्र प्रसाद ह्रदय से देशभक्त थे। धन और विलासिता का उनके लिए आकर्षण नहीं था। उनकी आँखें और कान खुले रहे और उन्होंने अपने देश की दयनीय स्थिति को देखा। उन्होंने अपने व्यवसाय को छोड़ने और मातृभूमि की सेवा करने का निर्णय किया। उसी समय एक अवसर भी मिल गया। चंपारण के अंग्रेज निलहे वहाँ के किसानों को बहुत अधिक सता रहे थे। महात्मा गाँधी विहार आए और उन्होंने किसानों को अहिंसात्मक ढंग से अत्याचार का प्रतिकार करने के लिए कहा। डॉ0 राजेंद्र प्रसाद ने गाँधीजी का साथ दिया। उन्होंने इस आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। उन्होंने 1921 ई0 में वकालत छोड़ दी। उस समय से उन्होंने अपना सारा जीवन देश की सेवा में समर्प्ति कर दिया।

राजेंद्र बाबू के लिए कोई भी त्याग या कष्ट बड़ा नहीं था। वे हँसते हुए जेल गए थे और उन्होंने लाठी की मार सही थी। उनके जीवन का एक बड़ा भाग जेल में बीता। वे कई बार इंडियन

नेशनल काँग्रेस के सभापति हुए। जब भारतवर्ष स्वतंत्रता–प्राप्ति के पथ पर था तब वे केंद्रीय सरकार के मंत्रिमंडल के एक सदस्य हुए ।

डॉ राजेंद्र प्रसाद सरलता के प्रतीक थे। वे हर व्यक्ति से स्वतंत्रतापूर्वक मिलते–जुलते थे और बहुत ही स्पष्टवक्ता एवं ईमानदार थे। हर व्यक्ति का प्यार एवं सम्मान उनको मिलता था और उनका व्यक्तित्व मित्रता एवं विश्वास की प्रेरणा देता था। वे बड़े विद्वान थे और उन्होंने कई विद्वत्तापूर्ण पुस्तकें भी लिखी। ।

वे संविधान–सभा के सभापति भी थे। 1947 ई0 में जब भारत स्वतंत्र हुआ तब वे भारतसंघ के राष्ट्रपति चुने गए। इस सम्मानित पद पर वे दो अवधि तक आसीन रहे। 1962 ई0 में उन्होंने अवकाश ग्रहण किया। पटना के सदाकत आश्रम में निवास कर और सर्वोदय सिद्धांतों पर कार्य करते हुए 28 फरवरी,1963 की रात्रि में उनका देहावसान हुआ।

(ड़) भारत–पाक सम्बन्ध

भारत–पाक संबंध, अपने कटु–मधु आयामों में पाकिस्तान के जन्म की कहानी से जुड़ा है। पाकिस्तान के इतिहासकारों ओर राजनेताओं के अनुसार उन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई न केवल ब्रिटिश सरकार से लड़ी थी, बल्कि हिन्दू बहुसंख्यक के खिलाफ भी। आजादी के समय साम्प्रदायिकता, मुस्लिम नेताओं की कट्टरता और अंग्रेजी सरकार की नीतियाँ आदि ने मिलकर भारत को दो भागों में बाँटकर रख दिया।

विभाजन से इन दोनों के बीच ज्वलंत समस्यायें उठ खड़ी हुई। दोनों की सीमाओं, से धन, कर्ज, नदी–जल, नागरिक सेवाओं आदि का बँटवारा आवश्यक था। इन समस्याओं का समय समय पर समाधान किया जा रहा। लेकिन अल्पसंख्यक की समस्या, कश्मीर–समस्या आदि लेकर पाकिस्तान समय–समय पर अपने वैमनस्य का परिचय देता रहा है। आजादी के समय कश्मीर पर कबायलियों के आक्रमण ने यह साबित कर दिया कि पाकिस्तान विस्तारवादी नीति अपनाता है। लेकिन तत्कालीन राजा हरि सिंह और अन्य नेताओं के प्रयास से कश्मीर को बचाया गया। लेकिन तब भी कश्मीर का एक भाग पाक के अधिकार में रह गया। 1962 में भारत–चीन युद्ध में पाकिस्तान को भारत की मदद करनी चाहिए थी, लेकिन उसने चीन के साथ समझौता कर रगों को और दुखाया।

अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर कश्मीर का मुद्दा उठाकर पाकिस्तान ने अपनी धार्मिक कट्टरता और कश्मीर के मुस्लिम–बहुल होने का लाभ उठाकर इस पर दावा किया, वहीं भारत ने इसे अपना अभिन्न अंग माना। तब से लेकर आज तक पाकिस्तान ने अपने इरादे नहीं छोड़े और समय–समय पर कश्मीर का मुद्दा हर जगह उठाता ही रहा। 1965 में पाकिस्तान का जो मान–मर्दन हुआ, उससे भी उसने अपना इरादा नहींछोड़ा युद्ध ने उसे बतला दिया कि भारत की क्षमता क्या है लेकिन इसके बाद सैन्य शक्ति पर अपना खच्र बढ़ाकर वह भारत के साथ युद्ध करने में तो उसे भयानक क्षति हुई लेकिन

तब भी बेहया की तरह सिर उठाता रहा। पाकिस्तान में बांगला देश का साथ देना आदि कुछ ऐसी घटनाएँ है जिनसे भारत और पाकिस्तान का संबंध सुधर नहीं सका।

कश्मीर की समस्या को लेकर भारत–पाकिस्तान का संबंध सामान्य नहीं हो सकता है। कश्मीर जबकि भारत का एक अभिन्न अंग है, पाकिस्तान–प्रशिक्षित आतंकवादियों का अखाड़ा हो गया है। पाकिसतान ने कश्मीर में धार्मिक कट्टरता का जहर फैलाकर वहाँ भारत विरोधी अभियान चलाया। धार्मिक कट्टरतावाद और भड़कानेवाले साहित्य का प्रसार–प्रचार कर पाकिस्तान कश्मीर में भारत विरोधी अभियान अभी तक चला रहा है। इतना ही नहीं, पाकिसतान में आतंकवाद, तोड़फोड़ और सशस्त्र संघर्ष के प्रशिक्षण हेतु अनेक केन्द्र है जहाँ कश्मीरी युवकों को प्रशिक्षण दिया जाता है। कश्मीर में जनमत संग्रह आदि की समस्या को लेकर पाकिस्तान आज भी विरोधी अभियान चला रहा है। इसके अलावे वह पंजाब में आतंकवादियों को सहायता देकर अपना संबंध सुधारने की जगह बिगाड़ ही रहा है।

भारत–पाक संबंध को सही अंजाम देने के लिए कई बार अन्तर्राष्ट्रीय पहल भी हुए, लेकिन सब बेकार गये। पाकिस्तान के शासकों में आज तक कोई वैसा व्यक्ति नही आया, जो जनप्रिय नेता हो। इसीलिए शासन के लिए सब के सब वहाँ की जनता में भय का भूत फैलाते रहते हैं और इसके लिए आवश्यक है कि वे भारत से दुश्मनी बनाये रखें। इससे कुछ तो राजनीतिक चाल और धार्मिक कट्टरता और बहुत कुछ भारतीय नेताओं की अदूरदर्शिता एवं कुर्सी–बचाव मानसिकता से पाकिसतान और भारत का संबंध सुधर नहीं रहा है। इतने लम्बे समय की गतिविधियों ने यह बतलाया है कि 'बिन भय होहिं न प्रीत" तथा " खीरा के मुख काट के मलियत नोन लगाय" की नीति ही सही है।

समासतः हम कह सकते हैं कि भारत–पाक संबंध के बीच इतनी बड़ी दरार है कि उसे पाटना कोई आसान कार्य नहीं है। इसे कोई दृढ़ इच्छाशक्ति ही पाट सकती है– कुर्सी के भूखे भेड़िये नहीं पाट पायेंगे। फिर पाकिस्तान की कुर्सी तो खून से छानी ही गयी है। लेकिन आवश्यकता है इस संबंध पर विचार करने की, जिससे इस महाद्वीप में शांति की सीापना हो सक

3. ***शीर्षकः अनुशासन की महत्ता***

छात्रों को व्यवहारिक जीवन में अनुशासन के नियमों का पालन करना परमावश्यक है। हम जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन की श्रृंखला में बंधे रहकर भी अपनी सम्पूर्ण क्षमता का उपयोग कर सकते है और अपनी–अपनी कामनाओं की पूर्ति कर सकते है।

(कुल शब्द शब्द संख्या–120, संक्षेपण की शब्द–संख्या–40)

4. रीतिकाल का साहित्य सामंतीय वातावरण और संस्कृति का उद्‌भावक हैं राजदरबारों का आश्रमय पानेवालों की इस श्रृंगारी कविताओं में धनोपार्जन की प्रवृत्ति वर्तमान है। कविता में रीति एवं अलंकार का प्रयोग खुलकर किया गया है। भाव–सौंदर्य के स्थान पर नारी के रूप–सौंदर्य को चित्रित करने में सारी शक्ति लगा दी गई। कविता 'प्रेम की पुकार' तथा 'रसिकता और अभिव्यक्ति' से आगे न बढ़ सकी। फलतः रीतिकाल अथवा श्रृंगारकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं–

(1) श्रृंगारिकताः रीतिकाल में यह सर्वत्र देखी जा सकती है। परम्परा रूप में भक्ति–काव्य से रीति या प्रेमभाव की सामग्री प्राप्त कर इस युग ने श्रृंगार को रसराज के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। इस युग का परिवेश भी बहुत कुछ श्रृंगारी मनोवृत्ति के अनुकूल या श्रृंगार–वर्णन ही रीतिकाव्य का मुख्य उद्देश्य था।

(2) अलंकरण की प्रधानताः रीतिकालीन कविता की दूसरी प्रवृत्ति आलंकारिता है। इस युग में प्रदर्शन, चमत्कार और रसिकता को प्रधानता दी गई है।

(3) भक्ति और नीतिः श्रृंगारकाल में जहाँ श्रृंगारपरक भावनाओं का वर्णन मिलता है, वहीं यत्र–तत्र भक्ति और नीति से संबं; सूक्तियाँ भी बिखरी हुई मिलती है।

(4) आश्रयदाता की प्रशंसाः श्रृंगारकाल/रीतिकाल के कवियों का मूल उद्देश्य अपने आश्रयदाताओं को संतुष्ट करना था। ऐसी स्थिति में मुक्तक शैली ही अधिक उपयुक्त थी।

(5) ब्रजभाषा की प्रधानताः इस काल की प्रमुख साहित्यिक भाषा ब्रजभाषा थी। इस काल तक ब्रजभाषा का शब्दकोश काफी भर गया था और उसने पर्याप्त उन्नति भी कर ली थी।

अथवा

तुलसीदास– तुलसीदास(1543–1623) हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। 'रामचरितमानस' उनका सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। वे वाल्मीकि के अवतार हैं– 'कलि कुटिल जीव निस्तार हित बाल्मीकि तुलसी भयों'।

उनकी कविता की भाषा अवधी और ब्रज दोनों रही है।

तुलसी का काव्य मध्यकालीन उत्तर भारत का सबसे प्रामाणिक संदर्भकोश है। उसमें तुलसी द्वारा देखा और समझा हुआ भारत मौजूद है। इसमें उसकी विषमताएँ, अच्छाइयाँ–बुराइयाँ, सुख–दुख भी हैं और उसकी आशा–आकांक्षा भी मौजूद हैं।

तुलसीदास की कृतियाँ हैं–'रामलला नहछू' 'वैराग्य संदीपिनी', 'बरठौ रामायण' 'पार्वती मंगल', जानकी मंगल', 'रामाज्ञाप्रश्न', 'दोहावली', कवितावली', 'गीतावली', 'श्रीकृष्ण गीतावली', 'रामचरितमानस' और 'विनय पत्रिका'।

तुलसी की कविता का नमूना है–

'कहहुँ तात अस मोर प्रणामा

सब प्रकार प्रभु पूरण कामा ।

दीनदयाल विरद सम भारी,

हरहुँ नाथ सम संकट भारी।'

5.*(क)* 'दिगन्त' के 'एक लेख और एक पत्र' शीर्षक पाठ में संकलित 'संखदेव के नाम पत्र' से उद्धृत प्रस्तुत पंक्ति में भगतसिंह ने कायरता को परिभाषित किया है।

व्यक्ति अपने जीवन में केवल दुःख, कष्ट अथवा पीड़ा से भय खाता है और इसीलिए वह इनके कारणों से दूर भागता है। इस प्रकार भय खाकर दुःख के कारणों से दूर भागना ही कायरता है। जब व्यक्ति किसी वस्तु अथवा प्राणी से अत्यधिक भयभीत होता है और उसे इनसे बचने का कोई उपाय नहीं दिखायी देता है तो वह अपने जीवन को ही समाप्त करके इन दुःखों से सदैव के लिए छुटकारा पाना चाहता हैं इस प्रकार से जीवन से पलायन करके आत्महत्या करना सबसे बड़ी कायरता है। व्यक्ति को केवल दुःखों से छुटकारा पाने के लिए आत्महत्या नहीं करनी चाहिये। हाँ, यदि हमारे प्राणत्याग से देश में समाज अथवा मानवता का कल्याण होता हो तो व्यक्ति को प्राणों का बलिदान करने में तनिक भी संकोच नहीं करना चाहिए।

अथवा

'दिगन्त' में संकलित '*ओ सदानीरा*' शीर्षक पाठ से उद्धृत इन पंक्तियों में जगदीशचन्द्र माथुर ने गण्डक नदी के किनारे स्थित वनों के विनाश के लिए मनुष्य की भोगवादी तथा धर्मान्ध प्रवृत्ति को जिम्मेदार ठहराया है।

मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपना एकछत्र साम्राज्य स्थापित करना चाहता हैं। इसके लिए अपनी मान–प्रतिष्ठा और प्राणों तक को दाँव पर लगा देता है। इस प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी को भोगने की लालसा रखने वाला प्राणी सभी प्रकार के धर्म–कर्म करके सम्पूर्ण पृथ्वी को पाना चाहता है, इसके लिए वह स्वयं को विश्व का सबसे बड़ा धर्मात्मा सिद्ध करते हुए धर्म के विभिन्न कर्म–काण्डों को भी सम्पन्न करता रहता है। वह सोचता है कि उसके इन कृत्यों से देवतागण प्रसन्न होकर उसकी इच्छा को पूर्ण कर देंगे। उसकी यह इच्छा और सोच उसे धर्मान्धता की सीमा तक धर्मभीरू बना देती है। सीधे–सरल शब्दों में हम यही कह सकते हैं कि वसुन्धराभोगी मानव धर्मान्ध भी होता है; क्योंकि उसकी ये दोनों प्रवृत्तियों एक–दूसरे की पूरक अर्थात् एक सिक्के के दो पहलू हैं।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'दिगन्त' में '*पुत्र–वियोग*' शीर्षक से संकलित प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान

द्वारा रचित काव्य 'मुकुल' से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में एक माँ का हृदय अपने पुत्र के असामयिक निधन पर किस प्रकार तड़प उठता है, इसका मार्मिक चित्र उपस्थित किया गया है।

कवयित्री कहती हैं– आज सम्पूर्ण विश्व में उल्लास, खुशी एवं हर्ष का वातावरण छाया है, आज सारी दिखाओं में खुशियाँ–ही–खुशियाँ दिखाई पड़ रही हैं, परनतु मैं इस संसार में अकेली दुःखी हूँ। मेरा पुत्र, जिसके कारण मैं उसी में वैसे ही खोयी रहती थी, जिस प्रकार कोई बच्चा खिलौन में खोया रहता है। आज मेरा वह खिलौना खो गया है। जिस प्रकार बच्चों के खिलौने खेलने के क्रम में इधर–उधर कहीं खो जाते हैं, फिर मिल भी जाते हैं, उसी प्रकार मेरा खिलौना खो गया है, परन्तु मुझे फिर से वापस नहीं मिला। एक माँ का पुत्र–वियोग कितना दारूण हो सकता है वह सुभद्रा जी की इन पंक्तियों से पता चलता हैं

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'दिगन्त' में '*तुमुल' कोलाहल कलम* में शीर्षक से संकलित, छायावादी कवि जयशंकर कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'कामायनी' महाकाव्य से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में श्रद्धा पुरूष के जीवन में नारी के महत्त्व को रेखांकित करती हुई कहती है।–

पुरूष जब दिनभर की भाग–दौड़ और मन की चचंलता के कारण थक जाता है तो वह व्याकुल होकर आराम करना चाहता है। वह नींद के आगोश में जाना चाहता है, एक पल सो लेना चाहता है। जब उसकी चेतना थक जाती है; शुष्क हो जाती है तो ऐसी स्थिति में श्रद्धा (नारी का हृदय) मलय पर्वत से चलने वाली सुगतिन्धत हवा की तरह शान्ति और विश्राम देती है। कवि का आशय है कि मन बड़ा चंचल है, वह कभी थकता नहीं है, लेकिन मन से जुड़ा शरीर थक जाता है। मन की चंचलता के कारण शरीर में बेचैनी होती है, वह आराम खोजता है, ऐसी स्थिति में व्यक्ति को हृदय से काम लेना चाहिए।

6.(1)

(1)–ख (2)–ख

(3)–ख (4)–घ

(5)–ग

(2) (1)–घ (2)–ड़

(3)–ख (4)–ग

(5)–क

(3) (क)– जूठन (ख)–भक्तिकाल

(ग)– साक्षर (घ)– शमशेर बहादुर सिंह

(ड़)– सरिता

7.(क) *'बातचीत'* शीर्षक ललित निबंध महान पत्रकार, निबंधकार तथा आलोचक बालकृष्ण भट्ट की प्रसिद्ध रचना है। यह निबंध उनके निबंधकार व्यक्तित्व और निबंधकला के साथ–साथ भाषा–शैली का भी प्रतिनिधित्व करता है।

ईश्वर द्वारा प्रदत्त, शक्तियों में वाक्शक्ति मनुष्य के लिए वरदान है। वाक्शक्ति के अनेक फायदों में 'स्पीच' वक्तृता और बातचीत दोनों का समावेश होता है। बातचीत में वक्ता को नाज–नखरा का मौका नहीं मिलता परन्तु वक्तृता में चुटीली बात वक्ता को लाना पड़ता है जिससे करतल–ध्वनि अवश्य हो। बातचीत, जहाँ दो आदमी का प्रेमपूर्वक संलाप है, वहीं स्पीच का उद्देश्य श्रोता में जोश पैदा करना होता है।

जिंदगी को मजेदार बनाने के लिए बातचीत सारगर्भित तत्त्व है। बातचीत से चित्त हल्का और स्वच्छ होता है। उसे लेखक ने राम–रमौवल की संक्षा दी है। रॉबिंसन क्रूसों 16 वर्ष कुत्ता, बिल्ली आदि जानवरों के बीच रहने के उपरान्त फ्राइडे के मुख से मनुष्य की बोली सुनकर आनन्दविभोर हो गया। मनुष्य का गुण–दोष प्रकट करने के लिए बातचीत आवश्यक है। बेन जानसन के अनुसार, "बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है, जो सर्वथा उचित है।" एडीसन के मतानुसार "असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि जब दो आदमी होते हैं तभी एक–दूसरे के सामने अपना दिल खोलते हैं। तीसरे की उपस्थिति मात्र से ही बातचीत की धारा बदल जाती है।" बातचीत में जब चार व्यक्ति लग जाते हैं तो 'बेतकल्लुफी' का स्थान 'फॉर्मिलिटि' ले लेती है।

यूरोप के लोगों में 'ऑर्ट ऑफ कन्वरशेसन' यहाँ तक बढ़ा है कि स्पीच और लेख दोनों इस हुनर को नहीं पाते। काव्य कला प्रवीण विद्वान मण्डली दो–चार दिली दोस्त, पच्चीस वर्ष के ऊपरवाले तथा नीचे वाले युवक–युवतियाँ अपने–अपने ढंग से आपसी बातचीत की सरसता को बनाये रखते हैं।

बातचीत के लिए दो पक्षों की उपस्थिति लाजिमी है। बातचीत होने के लिए एक–दूसरे के पास आने–जाने में शिष्टाचार की त्रुटि हो सकती है। लेखक के अनुसार

अपने आप बात करने की शक्ति पैदा करना सबसे उत्तम प्रकार की बातचीत है। मनुष्य का हृदय अनुभूतियों का गर्भ–गृह है जो इस पहेलीनुमा संसार का इच्छानुसार चित्र प्रतिबिंबित करता है। भीतरी मनोवृत्ति रूपी उपवन में सैर करने का बरसों अभ्यास करने के बाद सौभाग्यवश मनुष्य मनोवृत्ति को स्थिर कर अपने मन के साथ बातचीत कर सकता है।

वाक्शक्ति को दमन करने से अनेक प्रकार का दमन हो जाता है। ऐसा नहीं होने पर जिह्वारूपी कतरनी क्रोधाग्नि को भड़काकर अजेय को भी अपने आगोश में समेट लेती है। निष्कर्षतः मौन की साधना का साधक बनकर अपने आप से बातचीत करना सभी साधनों का मूल है, शक्ति परम पूज्य मन्दिर है, परमार्थ का एकमात्र सोपान है।

7.(क) अथवा

'अर्द्धनारीश्वर' निबन्ध राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित एक प्रेरक निबंध है। 'अर्द्धनारीश्वर' दिनकर का एक प्रिय मिथकीय प्रतीक है। अर्धनारीश्वर में दिनकर अपना मनचीता आदर्श निरूपित होते देखते हैं। जीवन भर यह दिनकर का उपास्य आदर्श बना रहा। उनकी संवेदना, भावबोध और काव्य संस्कार पर इसका कहना असर है।

अर्द्धनारीश्वर शंकर और पार्वती का काल्पनिक रूप है, जिसका आधा अंग पुरूष का और आधा अंग नारी का होता है। एक ही मूर्ति की दो आँखें, एक रसमयी और दूसरी विकराल; एक ही मूर्ति की दो भुजाएँ– एक त्रिशूल उठाये और दूसरी की पहुँची पर चूड़ियाँ एवं एक मूर्ति के दो पाँव, एक जरीदार साड़ी से आवृत और दूसरा बाघंबर से ढँका हुआ, यह कल्पना निश्चय ही शिव ओर शक्ति के बीच पूर्ण समन्वय दिखाने के लिए रची गयी होगी।

अर्द्धनारीश्वर की कल्पना में कुछ इस बात का भी संकेत है कि नर–नारी पूर्णरूप से समान हैं और उनमें से एक के गुण दूसरे के दोष नहीं हो सकते। परन्तु अर्द्धनारीश्वर का यह रूप आज समाज में देखने को नहीं मिलता। संसार में सर्वत्र पुरूष–पुरूष हैं और स्त्री–स्त्री। संसार में स्त्री और पुरूष में दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं। पुरूष एवं नारी के गुणों के बीच एक विभाजन रेखा बन गई है और इस रेखा को पार करने में दोनों को भय लगता है।

आदि मानव में नर–नारी का यह भेद थोड़ा–सा भी नहीं था। दोनों साथ–साथ आखेट करते थे। उन दिनों नर बलिष्ठ और नारी इतनी दुर्बल नहीं थी। आहार के मामले में भी वे एक–दूसरे पर निर्भर नहीं थे। नारी की पराधीनता तब आरंभ हुई जब मानव जाति ने कृषि का आविष्कार किया। इसके चलते नारी घर में और पुरूष बाहर रहने लगा। यहाँ से जिन्दगी दो टुकड़ों में बट गई। नारी पराधीन हो गई। इस पराधीनता ने नर–नारी से वह सहज दृष्टि भी छीन ली जो नर–मादा पक्षियों

में थी। इस पराधीनता के कारण नारी के सामने अस्तित्व का संकट आ गया। उसके सुख और दुख, पतिष्ठा और अपमान, यहाँ तक कि जीवन और मरण पुरूष की मर्जी पर टिकने लगे।

बुद्ध, महाबीर, कबीर, रवीन्द्रनाथ, जयशंकर प्रसाद तथा प्रेमचन्द जैसे संतों, कवियों एवं लेखकों में नारी के संबंध में विचारों में भिन्नता है जिससे दिनकर जी सहमत होते नहीं दीखते। उनके विचार में नारी और नर एक ही द्रव्य की ढली दो प्रतिमाएँ है। प्रत्येक नारी में कहीं–न–कहीं पुरूषत्व और प्रत्येक नर में कहीं–न–कहीं क्षीण नारी छिपी हुई हैं । नारी केवल नर को रिझाने अथवाउसे प्रेरणा देने को नहीं बनी है। जीवन यज्ञ में उसका भी अपना हिस्सा है और वह हिस्सा घर तक ही सीमित नहीं, बाहर भी है। जिसे पुरूष अपना कर्मक्षेत्र मानता है, वह नारी का भी कर्मक्षेत्र हैं नर और नारी दोनों के जीवन के उद्देश्य एक हैं।

अतः प्रत्येक नर को एक हद तक नारी और प्रत्येक नारी को एक हद तक नर बनना भी आवश्यक है। गाँधीजी ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में नारीत्व की भी साधना की थी। 'बापू' मेरी माँ' नामक पुस्तक में इसका संकेत मिलता है। वास्तव में, दया माया, सहिष्णुता ये स्त्रियोचित गुण कहे जाते हैं। साथ ही, नारी साहस एवं शूरता का भी प्रतिनिधित्व करती है। संक्षेप में अर्द्धनारीश्वर के केवल इसी बात का प्रतीक नहीं है कि नारी और नर जब तक अलग हैं तब तक दोनों अधूरे हैं, बल्कि इस बात का भी कि पुरूष में नारीत्व की ज्योंति और यह कि प्रत्येक नारी में भी पौरूष का स्पष्ट आभास हो।

7.(ख)

'छप्पय' का सारांश–'छप्पय' शीर्षक पद कबीरदास एवं सूरदास पर लिखे गये 'भक्तमाल' से संकलित हैं। छप्पय एक छंद है, जो छह पंक्तियों का गेयपद होता है। ये छप्पय नाभादास की अन्तर्दृष्टि, मर्मग्राहणी प्रज्ञा, सारग्राही चिंतन और विद्ग्ध भाषा–शैली के नमूने हैं।

प्रस्तुत छप्पय में वैष्णव भक्ति की नितांत भिन्न दो शाखाओं के इन महान् भक्त कवियों पर लिखे गये छन्द हैं। इसमें इन कवियों से सम्बन्धित अबतक के सम्पूर्ण अध्ययन– विवेचन के सार–सूत्र समाहित हैं। इस पंक्तियों में कवि की दूरदृष्टि दिखायी पड़ती हैं, जो विस्मयकारी और प्रीतिकर है। ऐसा प्रतीत है कि आगे की सदियों में इन कवियों पर अध्ययन–विवेचन की रूपरेखा जैसे तब कर दी गयी हो।

पाठ के प्रथम छप्पय में नाभादास ने आलोचनात्मक शैली में कबीर के प्रति अपने भाव व्यक्त किये हैं। कवि के अनुसार कबीर ने भक्ति विमुख तथाकथित धर्मो की धज्जी उड़ा दी है। उन्होंने वास्तविक धर्म को स्पष्ट करते हुए योग, यज्ञ, व्रत, तान और भजन के महत्व का बार–बार प्रतिपादन किया है। उन्होंने अपनी सबद, साखियों और रमैनी में क्या हिन्दू और क्या तुर्क, सबके प्रति आदर भाव व्यक्त किया

है। कबीर के वचनों में पक्षपात नहीं है। उनमें लोकमंगल की भावना सर्वत्र दिखायी देती है। उन्होंने जहाँ जिसमें कमी देखी, उसको रोका, टोका, उसकी आलोचना की। उनके लिए हिन्दू–मुस्लिम दोनों ही बराबर थे। इसलिए कभी मुँह देखी बात नहीं कहते थे अर्थात् किसी प्रकार का भेदभाव अर्थात् पक्षपात नहीं करते थे। वे धर्म के आडम्बरों में विश्वास नहीं रखते थे; अतः उन्होंने वर्णाश्रम धर्म और षड्दर्शन के सिद्धान्तों को व्यर्थ बताकर सदैव आडम्बरों का विरोध किया।

दूसरे छप्पय में नाभादास ने सूरदास के बारे में लिखा है। सूरदास कृष्ण के भक्त थे। सूर की कविता सुनकर कौन उनकी प्रशंसा नहीं करेगा ? अर्थात् सभी प्रशंसा करेंगे। सूर ने कृष्ण की लीला का वर्णन किया है। सूर की कविता में सबकृछ मिलता है। गुण का माधुर्य एवं रूप का माधुर्य सबकुछ भरा हुआ है। सूरदास दिव्य दृष्टि सम्पन्न कवि थे। वही दिव्यता उनकी कविता में भी रेखांकित की जा सकती है। गोप–गोपियों के अद्भुत प्रेम दर्शाते हैं। सूर की वाणी में विचित्रता है, माधुर्य है और है अनुप्रासों की छटा–सुन्दरता।

इस प्रकार दो परस्पर विरूद्ध धाराओं के कवि की प्रशंसा में नाभादास सफल हुए हैं।

7.(ख) **अथवा**

यह कविता रघुवीर सहाय के काव्यसंग्रह 'आत्महत्या के विरूद्ध' से ली गयी है। यह एक व्यंग्य कविता है। ऐसी व्यंग्य कविता जिसमें हास्य नहीं, आजादी के बाद के सत्ताधारी वर्ग के प्रति रोषपूर्ण तिक्त कटाक्ष है। राष्ट्रीय गान में निहित 'अधिनायक' शब्द को लेकर यह व्यंग्यात्मक कटाक्ष है। स्वाधीनता प्राप्त होने के इतने वर्षो के बाद भी आम आदमी की हालत में कोई बदलाव नहीं आया। कविता में 'हरचरना' इसी आम आदमी का प्रतिनिधि है। वह एक स्कूल जानेवाला बदहाल गरीब लड़का है जो अपनी आर्थिक, सामाजिक हालत के विपरीत औपचारिकतावश सरकारी स्कूल में पढ़ता है। राष्ट्रीय त्योहर के दिन झंडा फहराए जाने के जलसे में वह 'फटा सुथन्ना' पहने वही राष्ट्रगान दुहराता है जिसमें इस लोकतांत्रिक व्यवस्था मे भी न जाने किस 'अधिनायक' का गुणगान किया गया है। सत्ताधारी वर्ग बदले हुए जनतांत्रित संविधान से चलती इस व्यवस्था में भी रासी ठाठ–वाट वाले भड़कीले रोब–दाब के साथ इस जलसे में शिरकत कर अपना गुणगान अधिनायक के रूप में करवाए जा रहा है। कविता में निहितार्थ ध्वनि यह है मानो इस सत्ताधारी वर्ग की प्रच्छन्न लालसा हो सचमुच अधिनायक अर्थात् तानाशाह बनने की।

विनोद कुमार 'शुक्ल समकालीन कवि हैं। उनकी कविताएँ अनुभाव की सच्चाई व्यक्त करती हैं। विनोद कुमार शुक्ल की कविता 'प्यार नन्हे बेटे को' वार्तालाप शैली में लिखी गयी है। इस कविता में कवि कहता है लोहा कर्म का प्रतीक है। इसे हर वस्तु में तलाशना होगा। वह प्यारी बिटिया से पूछता है कि बताओ आस–पास कहाँ–कहाँ लोहा हैं चिमटा, करकल, सिगड़ी, समसी, दरवाजे की साँकल, कब्जे में बिटिया बताती

है। रूक–रूक कर फिर याद कर बताती है लकड़ी दो खंभों पर वह एक सैफ्टी पिन पूरी साइकिल में लोहा। कवि को लोहा के प्रति आग्रह इतना क्यों ? कवि बताता है कि लोहा कर्म का प्रतीक है। वह जहाँ भी रहता है अपनी मजबूती के साथ रहता है। उसका शोषण कोई नहीं कर सकता। कवि पुत्री को याद दिलाता है कि फावड़ा, कुदाली, हँसिया, चाकू, खुरपी, बसुला सभी में लोहा है। कवि को पुत्री भी याद दिलाती है कि बाल्टी, सामने कुएँ में लगी लोहे की घिरी, छत्ते की डंडी में लोहा है। वह समाज के निम्न वर्ग के मजदूर को समाज का लोहा मानता है जिसके बल पर समाज मजबूती से खड़ा है परन्तु वह मजदूर शोषित है। लोहा कदम–कदम पर और एक गृहस्थी में सर्वव्याप्त है। यह लोहा दुर्भेध प्रतीकार्थ देता है। वह ठोस होकर भी जिंदगी में घुला–मिला हुआ और प्रवाहित हैं ।

अशोक वाजपेयी समसामयिक कवि हैं। उनकी हार'–जीत एक गद्य कविता है। इस कविता की विशेषता यह है कि इसमें दिनदिन जीवन अनुभवों की धरती से बोलचार, बात–चीत और सामान्य मनः चिन्तन स्थापित है। कवि युद्ध की स्थिति से क्षुब्ध है। वह शासकों के क्रियाकलापों से असंतुष्ट है। वह युद्ध के विषय में हार–जीत पर प्रश्न खड़ा करता है कि आखिर इस युद्ध में हार–जीत किसकी होती है ? कवि कहते हैं कि शासक लोग उत्सव मना रहे हैं। सारे शहर को सजाया जा रहा है। शासकों ने जनता को बता रखा है कि उनकी सेना विजय करके लौटी है। कवि बताते हैं कि नागरिकों से जयादातर लोगों में किसी को पता नहीं है कि किस युद्ध में उनकी सेना गयी थी। यह विजय पर्व किएलिए है ? शासक धोखेबाज है। कवि शासक की धूर्तता, उसकी राजनीति की पोल खोलता है क्योंकि युद्ध में जितने सैनिक शहीद होते हैं शासक उसकी सूची इसलिए प्रकाशित नहीं करता है कि जनता बौखला जायेगी। शासकों के आने के कारण सड़कों को गीला किया जा रहा है क्योंकि उन पर कहीं धूल नहीं पड़ जायें। शासक गाजे–बाजे के साथ अपना प्रभुत्व दर्शाने के लिए दिखावा कर रहे हैं। बूढ़ा मशक वाला के माध्यम से कवि यह कहलवाता है कि युद्ध हार–जीत के लिए नहीं होता बल्कि विनाश ही करता है। जनता को सिर्फ काम में लगाया गया है। उसे सच कहने की इजाजत नहीं है। यह कविता रघुवीर सहाय के अधिनायक से मेल खाती है।

8. (क) मलिक मुहम्मद जायसी हिन्दी के सुपरिचित कवि हैं। 'पद्मावत्' उनका श्रेष्ठ काव्य ग्रंथ है।

कवि ने आँख को दर्पण के समान माना है। दर्पण के सामने जैसा चेहरा खड़ा होता है, उसकी ही तस्वीर दिखलाता है, कवि की आँख दर्पण के समान है। इसलिये उसने प्रांजल भाव अपनी निर्मल एक आँख से देखकर पैदा किये है। कवि जायसी पारदर्शी भाव और बिम्ब लिखने में सिद्धहस्त है।

(ख) इस पद में ब्रजराज कृष्ण को जगाया जा रहा है। कमल और कुसुम खिल गये है। कुमुद–पुष्पों ने अपनी पंखुड़ियों को समेट लिया है। भौंरे लता में खो गये है। मुर्गो और अन्य पंछियों की चचहाहट की आवाजें आ रही है। बछड़ा को दूध पिलाने के लिए गाय दौड़ रही है। चन्द्रमा का प्रकाश मद्धिम पड़ गया है। सूर्य प्रकाश फैला रहा है। सारे नर एवं नारी जाग रहे हैं। सूरदास कहते हैं कि सबेरा हो गया है। हे कृष्ण! अब आप जाग जाइए। आप कमल को हाथ में धारण करनेवाले हैं।

(ग) इस धरती पर दानव और दुरात्मा राक्षस और उनकी राक्षसी प्रवृत्ती एक–सी ही जन–जन की भावनाओं को डँसती है। इन शोषक, खूनी और चोरों के खिलाफ खड़ी जनता का शीर्ष एक है। पूँजीपति दानव है। पूँजीपतियों को आत्मा नहीं होती। उनमें दया का भाव नहीं होता । पैसा उनकी संवेदनाओं को मार देता है। जिस दिन जन–जन इन दानवों की दुरात्मा को ठीक से जान जायेगें उस दिन इस धरती से उनका विनाश करने के लिए हथियार उठा लेगें।

(घ) बूढ़ा मसकवाला युद्ध का सत्य जानता है। वह कह रहा है हम एक बार फिर हार गये है। गाजे–वाजे के साथ जीत नहीं हार लौट रही है। मसकवाला सत्यद्रष्टा है। उसने अपनी आँखों से लड़ाई का अन्जाम देखा है। वह सत्य और अपने हृदय की बात कहता है।

(ड़) प्यार से जन–जन जीवन जीते है। एक दूसरे को प्यार करते है। क्रोध की तलवार से पूँजीपति मारे जायेंगें। एक तरफ जन–शोषित शोषकों के खिलाफ शोषकों की लड़ाई इस धरती पर हमेशा से चलती रही है। जन–सघर्ष करनेवाले श्रमजीवी प्यार से रहते है। जब वह क्रोधित हो जायेगें तब धरती पर से पूँजीपतियों का नाश हो जाएगा।

(च) चातकी छोटी–सी बूँद के लिए तरसती है।

9. (क) *उपसर्ग–* जो शब्दांश शब्दों के आरम्भ में जुड़कर नये शब्दों की रचना करते हैं अर्थात् जो शब्दांश शब्दों के आरम्भ में जुड़कर उनके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते है; जैसे– बल शब्द के आरम्भ में 'निर्' तथा 'स' उपसर्ग जोड़कर क्रमशः निर्बल तथा सबल शब्द बनते हैं। निर्बल और सबल शब्दों का क्रमशः अर्थ है– कमजोर तथा शक्तिशाली, जबकि बल शब्द का अर्थ है–शक्ति।

प्रत्यय– जो शब्दांश शब्दों के अन्त में जुड़कर नये शब्दों की रचना करते हैं अर्थात् जो शब्दांश शब्दों के अन्त में जुड़कर उनके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं, उनहें प्रत्यय कहते है; जैसे–बल शब्द के अन्त में 'हीन' तथा 'वान्' प्रत्यय

जोड़कर क्रमशः बलहीन तथा बलवान् शब्द बनते हैं। बलहीन और बलवान् शब्दों का क्रमशः अर्थ है– कमजोर तथा शक्तिशाली जबकि बल शब्द का अर्थ है– शक्ति।

(ख) पत्नी– घरवाली, गृहिणी

पर्वत– पहाड़, शैल,

पृथ्वी– धरती, भूमि,

नर– मानव, आदमी,

वृक्ष– पेड़, पादप,

रात्रि– रात, रजनी,

समुद्र– सागर, सिंधु,

(ग) विद्यार्थी– विद्या+अर्थी

हिमालय– हिम+आलय

स्वागत्– सु+ आगत्

पावक– पौ+ अक

भावुक– भौ+उक

उद्योग– उत्+योग

(घ) भद्र– अभद्र

ऋजु– वक्र

मोक्ष– जन्मचक्र

सौम्य– रूक्ष

अमृत– विष

आधार– निराधार

(ङ) दाने–दाने को तरसना (भूखे मरना)– राम को नौकरी से निकाल देने पर दाने–दाने को तरसने लगा।

दाल न गलना (युक्ति में सफल न होना)– अधिकारी के सामने लिपिक की दाल न गली तो वह निराश होकर लौट आया।

दो टूक बात कहना (स्पष्ट कहना)– मोहन किसी से भी उचित बात दो टूक कह देता है।

दंग रह जाना (आश्चर्यचकित होना)– रामदेव के योग को देखकर मै दंग रह गया।

खाक में मिलाना (नष्ट करना)– मोदी ने पुराने नोट को खाक में मिला दिया।

खून का प्यासा होना (जानी दुश्मन होना)– सरदार भगत सिंह अंग्रेजों के खून के प्यासे थे।